CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान पं० भूषण लाल कौल
साहब से सादर भेंट
वीर
21/11/03.

पुष्प अंबार

कश्मीरी भाषा में कविता-पुस्तक 'पोशुँ अंबर'
का मौलिक पाठ साहित अनुवाद

गज़लें
नज़में
वचन (गीत)

कवि तथा अनुवादक :
सोम नाथ भट्ट 'वीर', कश्मीरी
वीर पब्लिकेशन्ज़, पुंछ हाऊस, 94-तीर्थ नगर सैक्टर 'बी'
तालाब तिल्लो, जम्मू-180002

(*मूल निवासी :* लोकभवन, अनंतनाग, कश्मीर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नाम पुस्तक (अनूदित) : पुष्प अंबार (पोशुँ अंबर)।

कवि तथा अनुवादक : सोमनाथ भट्ट 'वीर' कश्मीरी।

छपने का वर्ष : मूल कश्मीरी पुस्तक, 1990 ई०।

अनुवाद : 1997 ई०।

संख्या : 1100 प्रतियां।

मूल्य : रु० 51

लेज़र सैटिंग : कैण्डिड कम्प्यूटर्स, 21-बी, सुभाष नगर जम्मू।

प्रकाशक : वीर पब्लिकेशन्ज़, तीर्थ नगर सैक्टर 'बी', तालाब तिल्लो, जम्मू।

यह पुस्तक "केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय" के स्वीकृति पत्र सं० 5-81/95 के अनु एक दिनांक 7-10-1996 के माध्यम से प्राप्त वित्तीय सहायता से प्रकाशित हुई है।

"कॉपी राइट अनुदान ग्राही के पास है।"

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ग्वडुॅ कथ

(अंग्रीज़ी प्यठुॅ तरजमुॅ)

काऽशुॅर ज़बान तुॅ अदब छु कऽशीरि हुंद्यव गामव रऽछ़रोवमुत तुॅ पोठरोवमुत। काऽशुॅर ज़बान छे' आम लूकन हुंज़ जबान यिम गामन मंज़ रोज़ान छि। लिहाज़ा छे' असि काऽशर्‌यन ग्वनमातन तुॅ लिखार्‌यन हुंज़ अख स्वंज़ल द्रींठ्य् गछ़ान, यिम गामन मंज़ ज़ायि तुॅ प्रथेयि। परमानन्द, कृष्ण जू राज़दान, रसुलमीर बेतरि बेतरि।

यि ज़ा'निथ छे' मसरत सपदान ज़ि यि रिवायत छे' अज़ताम जा'री। श्री सोमनाथ भट्‌ट 'वीर' युस ज़न गामस मंज़ ज़ामुत छु तुॅ लसान बसान छु, छु पाऽदाऽयशी ग्वनमात। शाऽयरी वुज़ेयि तस शुर्‌य् कालुॅ सुॅय मंज़। तनुॅ प्यठुॅ छे' अऽमिस अमि वसफ़ॅ किन्य् तजरुबन हुंज़ रंगारंगी तुॅ अऽम्य् छि पननि ज़िंदगी हुंद्यन द्वखन तुॅ स्वखन, द्वशवऽन्य् सूरच़न, याने शहरी तुॅ गाऽमी कऽशीरि हुंज़ि ज़िंदगी हुंद्य् बाऽथ ग्ये'व्य् मित्य्।

'वीर' छु इनसाऽनयतुक, फ़िरकुॅ वारानुॅ मिलच़ारुक तुॅ कऽशीरि हुंदि लोलुक क्यो अमिकि कूॅमती अदबुक तुॅ अदबी मीरासुक पुरजोश ह्यमायती।

(दस्तख़त अंग्रीज़ी)
पी०एन० कौल बामज़ई

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पहली बात

(अंग्रेज़ी से अनूदित)

कश्मीरी भाषा तथा साहित्य को कश्मीर के गाँवों ने सुरक्षित रखा है तथा विकसित किया है। कश्मीरी भाषा आम जनता की भाषा है जो ग्रामवासी हैं। अतः हमें कश्मीरी कवियों तथा लेखकों का एक इन्द्रधनुष दिखाई देता है जो गाँवों में जन्मे तथा पले बड़े। परमानन्द, कृष्ण जू राज़दान, रसूल मीर इत्यादि।

यह जानकर प्रसन्नता होती है कि यह रिवायत आज तक जारी है। श्री सोमनाथ भट्‌ट 'वीर' जिसने गाँव में जन्म पाया है तथा वहीं रहता है जन्मजात कवि है। कविता तो उसे उसके बाल्यकाल से ही फूट पड़ी। इस गुण के कारण उसे अपने अनुभवों में रंगारंगी है। तथा उसने अपने जीवन के दुःखों-सुखों और नागरिक तथा ग्रामीण कश्मीर के जीवन के सम्बंध में गीत गाए हैं।

'वीर' मानवता, जातीय मेलजोल तथा कश्मीर के प्रेमभाव और उसके बहुमूल्य साहित्य और सांस्कृतिक संपत्ति[1] का पुरजोर हिमायती है[2]।

(हस्ताक्षर अंग्रेज़ी)
पी०एन० कौल बामज़ई

1. मीरास, विरासत, धरोहर। 2. पक्षपाती।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आऽही

ज़िंदुॅगी हुंदिस सनि ख्वतुॅ सऽनिस सो'दरस थाह लाऽयिथ द्वछि द्वछि म्वखतुॅ खारुन छु तिमनुॅय लूकन हुंद लोन आसान यिमन जुवस गिंदुन छु तगान। यिथी लूख छि तवाऽरीखुक तसलसुल ड़ंजि थावान। जुवनुॅ छे' प्रथ जुव ज़ाथ जुवान मगर काऽतिहन हुंद नाव छु ज़मानुॅ किस ड्यकस खननुॅ यिवान। दऽपिव गऽज़रिथ लूकन।

सोमनाथ 'वीर' छु बाशऊर तुॅ बा सलाऽहियत लिखाऽर्य्, शाऽयिर ति तुॅ नसुॅर निगार ति। तहकीक तुॅ तजसुस करनुक ति छुस स्यठाह जान बितुर, तुॅ काऽम कऽरॅन वारयाह। पो'ज़ सानि बाज़रॅ छु कामि कमुॅय पहन म्वल। ये'ति गछ़न वायन वाऽल्य् आसुॅन्य्। बनान छु त्वहि आसि म्याऽनिस वननस सूॅत्य् इख़तिलाफ। मगर मे'यि सो'र तुॅ दाऽयुर तम्युक इज़हार करुन छुनुॅ पाप।

'वीर' जियन छे' वारयाह जान एसे लेछु मचुॅ यिमन अज़ नय तुॅ पगाह म्वल खसि। मे' छे' ज़ाऽती तोर ये'मि कथि हुंज़ खो'शी ज़ि सोमनाथ 'वीरन' गो'ड नुॅ पनुन पान कुनि द'रिस सूॅत्य्। अमि सूॅत्य् वोतुस ज़रूर न्वकसान ज़ि अऽमिस कुन तुज नुॅ काऽसि नज़र। मगर फ़ाऽयदुॅ वोतुस चो'र। पनुॅन्य् मुकमल शख़सियत रुज़ुॅस डंजि। काऽसि गो'व नुॅ आवेज़ुॅ तुॅ मंज़िल गव ज़ेनान।

'वीर' जीनि शाऽयरी हुंद लो'त लो'त तुॅ सो'त सो'त ज़ीरोबम छु पान-न्यारुक फ़िज़ा वुज़नावान। प्राऽन्य् गरथ ड़ंजि थाऽविथ छु यि लफ़ज़न नऽविस माहोलस मंज़ नवि आयुॅ कथुॅ करनावान तुॅ म्याऽन्य् किन्य् छु यो'हय चीज़ त'म्य् सुज़ि शाऽयरी हुंद खास वसुॅफ़। अवुॅ अख कथ वनस ज़रूर।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आशीर्वाद

जीवन के गहरे अति गहरे साग़र में डुबकी लगाकर नीचे से मुठियां भर-भर के मोती लाना उन्हीं लोगों के भाग्य में होता है जो अपनी जान पर खेलना जानते हैं। ऐसे ही लोग इतिहास की निरन्तरता स्थिर रखते हैं। जीने को तो प्रत्येक जीव जाति जीती है परन्तु कितनों का नाम ज़माने के माथे पर अंकित होता है? कहो, गिने-चुने लोगों का।

सोमनाथ 'वीर' एक प्रतिभावान तथा बासलाहियत[1] लेखक हैं– कवि भी तथा गद्य रचनाकार भी। खोज कार्य तथा अनुसंधान करने की भी उनमें काफ़ी अच्छी शक्ति है। और उन्हेंाने काम भी बहुत किया है। परन्तु हमारे बाज़ार में काम का थोड़ा सा ही मूल्य होता है। यहां तो साज़ बजाने वाले[2] होने चाहियें। हो सकता है कि आपको मेरी बात अस्वीकार हो परन्तु जो कुछ मैंने अनुभव किया तथा परखा उसका वर्णन करना पाप नहीं है।

'वीर' जी ने काफ़ी अच्छे एसे (Esssays) लिखे हैं जिनका आज नहीं तो कल मूल्य बड़ेगा ही। मुझे तो निजी तौर पर इस बात की प्रसन्नता है कि सोमनाथ 'वीर' ने अपने को किसी गक्ष से नहीं बांधा। इससे तो उसे अवश्य हांनि पहुंची क्योंकि उसकी ओर किसी ने भी आंख उठाकर नहीं देखा। परन्तु उसे लाभ काफी पहुंचा। अपना पूर्ण व्यक्तित्व उसे मौजूद रहा। वह किसी के सामने हाथ फैलाने के लिए विवश नहीं हुआ। और वह लक्ष्य प्राप्त करता गया।

'वीर' जी की कविता का हलका-हलका तथा मद्हम मद्हम ज़ीरोबम 'अपनापन' अर्थात् प्रेमपूर्ण वातावरण जाग्रित करता है। प्राचीन स्वरूप बहाल रखकर यह शब्दों को नई परिस्थितियों में नये ढंग से बातें कराता है। तथा मेरे विचार में यही चीज़ उसकी कविता का विशेष गुण है। हां, एक बात अवश्य कहूँगा।

---

1. सुयोग्य। 2. प्रचारक propagandist.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नज़मि मंज़ कुशादुॅगी पाऽदुॅ कऽरिथ हये'कि 'वीर' तिम गुल तुॅ गुलज़ार फो'लराऽविथ यिमन हुंज़ ख्वशाबोय म्वरदुॅ दिलन मंज़ ति ज़िंदुॅगी हुंद अमार वुज़नावि। अऽम्य् छु पानय वो'नमुत

थदुॅ हा बुॅति आकाश पऽरी हुँद्य् पाऽठ्य् मगर।
बदनस प्यठ सदमन हुंद बार में' साऽलिम रुद।।

'वीरस' छु सदमन हुंद बार ह्यथ ति आकाश पऽरी ताम पिलव करुन तुॅ अऽम्य् सुँदि खाऽतरु छनुॅ यि कांह ब'ड कथ। ति क्याज़ि अऽमिस छु बानुॅ ति तुॅ बितुर ति। यि छु म्योन अंदाज़ुॅ ति तुॅ यऽह्य छस म्याऽन्य् आऽही। कथ छे'बकोलि ललद्यद लय करनुॅच तुॅ द'ल्य् त्रावनुॅच :–

मल व्वंदि गोलुम जिगर मोरुम।
अदुॅ लल नाव द्राम ये'लि दऽल्य् त्राऽव्यमस तऽती।।

मोरिखाई
14 नवंबर, 1989 ई०

(पद्मश्री) मोती लाल 'साकुॅय'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'नज़म'[1] में कुशादगी[2] पैदा करके 'वीर' वे गुलो गुलज़ार[3] प्रफुल्लित कर सकता है जिनकी सुगंध निर्जीव हृदयों में भी जीवन की आकांक्षायें[4] जगायेगी। उसने तो स्वयं कहा है-

"मैं भी आकाश-परी की भांति होता ऊंचा
परन्तु हृदय पर दुःखों का भोज पूर्णतया रहा मौजूद।"

'वीर' को दुःखों का भोज उठाते हुए भी आकाश परी तक पहुँच पाना है और उसके लिये यह बड़ी बात नहीं है। क्योंकि उसे पात्रता भी है तथा दृढ़ता भी। ऐसा ही मेरा अनुमान भी है और यही मेरा उसके लिए आशीर्वाद भी। 'ललेश्वरी' के कथनानुसार बात इस कार्य में विलीन होने की है तथा जुट जाने की–

"मैंने अपने मन का मैल मिटा लिया तथा ज़िगर को मार दिया अर्थात् नियन्त्रित किया। तभी तो मेरा नाम 'लल' प्रसिद्ध हुआ जब मैंने उधर ही ढेरा डाला अर्थात् उसका अखंड चिन्तन किया।"

तिथि
14 नवम्बर, 1989 ई०

(पद्मश्री) मोती लाल 'साकी'

---

1. शीर्षक प्रधान कविता। 2. फैलाव, गुंजाइश। 4. अरमान, तमन्नाएं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ब्याख डाऽल्य्

शाऽयरी छे' ल्वकचारस बासान ख्वश गफ़ा तुँ ब्रोंह कुन पऽकिय ये'लि अम्युक माऽदान तु मुकाबलुँ ज़्यूठ तुँ क्रूठ पेश यिवान छु, अऽज़्युक शाऽयिर छु पननिसुँय यीर्य् मितिस ज़ालस मंज़ क्वछ़लुँ बंद गछ़ान। कूँत्य् मुश्किल छिस चालुँन्य् प्यवान। मसलन मऽज़्य् छस फरागऽच़ हुंज़ शाऽयरी त्राऽविथ मजबूरी हुंज़ शाऽयरी वनुँन्य् प्यवान। यिम हालात ह्यकन बाकुँय अदबी सिनफ़न हुंदि खाऽतरॅ ति सऽही आऽसिथ। मगर शाऽयरी बापथ छे' च़रे'य पाहन मजबूरियुँ। ज़मानुँ व मकानुँच मजबूरी यथ मंज़ मसलुँहऽच़, पालसियुँ, कन्ट्रैक्ट, कौमियत, बैनुलाकवाऽमी तुँ क़ोमी सऽंथरिचि हयऽच़ अज़मावनि, पननि फारमुँ तुँ नव्यर नो'वरावनुँचुँ फ़िकरॅ, फ़ाऽशनुँ वरताव तुँ सारिवुँय ख्वतुँ निबुँ बदलाव। यपाऽर्य् वक़तुँच च़लुँ लार तुँ हुपाऽर्य् गर ग्रहस्तुक कार। यि सोरुय केंह छु अऽज़्य् किस शाऽयरस व्यत्तरावुन प्यवान। पकि महज़ पननी आज़ाद त्रायि तुँ गछ़ि हायि तुँ ज़ायि।

किताब छापुँन्य् छे' अज़कल मजबूरी ति बनान तुँ फाऽशन ति। अज़कल किस क्रीठिस समयस मंज़ छे' किताब छापुन्य् खुर्य् लद तुँ द्रो'ज काऽम। किताब बागि बऽरॅच़ शकल मंद, डिज़ाइनदार तुँ ज़ोतुँ वुन्य् छापुँन्य् छस ज़्यादय पाहन फतरत अनान। पतुँ केंच़न किताब मुफ़ुत बाऽगरॅन्य् या यस नुँ परॅन्य् तगि तस पऽरिथ दिन्य्'ग्यवन वाऽल्य् ग्यवुँहन मगर केंच़न नऽविस सूँत्य् रॅश तुँ प्राऽनिस सूँत्य् प्रय। केंह नुँ ज़ानन नो'व रसमि खत। केंच़न गछ़ि शाऽयर दरवेश आसुन तुँ बासुन, केंच़न तरक्की पसंद बेतरि बेतरि। गरज़ कथ कथ दिमव वाठ। यि छुनुँ ज़रूरी ज़ि प्रथ कांह शाऽयिर क्या आसि दरवेश या प्रथ कांह दरवेश क्या आसि शाऽयिर, या हु या यि। कुनि विज़ि छुनुँ दिलुँय करान किताब छापनस। अमि किन्य् नुँ ज़ि म्यानि किताबुँ क्या वछुँ नुँ। तिमुँ परि लूकव हज़ुँ तुँ हावसुँ। केंच़न हुंद स्टॉक ति गव खतुँम। अज़कल किस छूवम्बल ज़मानस मंज़ स्योद सादुँ किताब छापुन्य् छे'कुडुँर काऽम।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा उपहार

.कविता करना तो बाल्यकाल में बच्चों का सा खेल (या आनंददायक मज़ाक) लगता है। और आगे चलकर जब इसका क्षेत्र तथा इसकी दौड़ लम्बी और कठिन बनकर सामने आती है तो आधुनिक कवि अपने ही बुने हुए जाल में फंस कर बंद हो जाता है। उसे कितनी ही कठिनताओं का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर बीच में उसे सुलभ समय की स्वतंत्र कविता कहना छोड़कर मजबूरी की कविता कहनी पड़ती है। यह परिस्थितियां तो शेष साहित्यक कलाओं [1] के लिये भी सही हो सकती हैं। परन्तु कविता के लिये तो और भी ज़्यादा विवेशताएं होती हैं। समय तथा स्थान की विवशता जिसमें मसलहतें, पालिसियां, कन्ट्रैक्ट, राष्ट्रीयता, अंर्तराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर की रूप रेखाओं को आज़माना, अपनी रूपरेखाओं, शैलियों तथा नवीनताओं को प्रचलित करने की धुन (चिंताएं), फैशनों का प्रयोग और सबसे बढ़कर कलम में निबों का बदलाव होता है। इधर से समय की भागदौड़ तथा घर गृहस्थ के कार्य– ये सब कुछ तो आधुनिक कवि को सहन करना पड़ता है। यदि वह मात्र अपनी ही इच्छा अनुसार स्वछन्दगामी हो तो उसका सारा किया रचा व्यर्थ, अनदेखा तथा अनसुना रह जायेगा।

पुस्तक छपाना आजकल मजबूरी भी होती है तथा फ़ैशन भी। आज के कठिन समय में पुस्तकं छपाना उलझावपूर्ण तथा महंगा कार्य है। किताब विशालकाय, सुंदर, डिज़ाइन वाली तथा चमकीली छपाना और भी बाधाओं का कारण बनता है। तत्पश्चात् पुस्तक कुछ लोगों में निःशुल्क बांटना, या जिसको यह पुस्तक पढ़ना न आए उसको पढ़के देना भी पड़ता है। इन गीतों को गायक तो गाते परन्तु कुछेक को आधुनिकता के साथ ईर्षा तथा पुरानी कविता से ज़्यादा लगाव होता है। कुछेक तो नई (कश्मीरी) लिपि जानते ही नहीं। कुछ लोगों का कवि एक दरवेश (संत, फकीर) होना और दिखना चाहिये, कुछ को प्रगतिवादी। ऐसा देखते हुए किस-किस विचारधारा के साथ संयोग करें। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक कवि दरवेश हो या प्रत्येक दरवेश

1. विधाओं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

केंचन् दोस्तन हुंदिस ज़ोर करनस प्यठ छुस बुँ यि सऽतिम किताब 'पोशुँ अंबर' बाज़र त्रावान। यथ मंज़ छि मे' केंह प्राऽन्य् तुँ मऽठ्यमित्य् बाऽथ दर्ज कऽर्य् मित्य् तुँ सूँती केंह अछाऽप्य् तुँ नऽव्य् बाऽथ बऽर्यमित्य्। केंह साऽदुँर वार नज़मुँ तुँ केंह अख़बारन् मंज़ छपेमित्य् बाऽथ बेतरि। केंछा ग्यवन वाल्यन दोस्तन हुंदि खाऽतरुँ लो'त लो'त तो'बरुक। मे'छे' व्वमेद ज़ि लूख लागन यि किताब ति हंगस।

बुँ छुस रियास्ती कल्चरल अकादमी हुंद शुकुर गुज़ार ये'मि मे'कम क़लील माऽली मदद को'र। बुँ छुस श्री पी०एन० कौल बामज़ई सुंद स्यठा मशकूर यिमव यि किताब वारुँ पऽर तुँ लीखिख पनुँन्य् तासुरात। श्री मोती लाल 'साक़ी' सुंद ति छुस एह्सानमंद यिमव मे'यि क़िताब छापनुँ खा'तरुँ रंगुँ रंगुँ मशवरुँ दित्य् तुँ अम्युक स्वरनामुँ ल्यूखुक। डाक्टर मरगूब बानहा'ल्य् सुंद ति रोज़ुँ बारगीर यिम यि किताब बाज़र प्यनुँ खाऽतरुँ बेताब रुद्य्।

रेडियो तुँ दूरदर्शन केन्द्र सिरीनगरुक ति छुस एहसानमंद यिमव विज़ि विज़ि म्यानि तख़लीकुँ पनुँन्यन प्रोग्रामन मंज़ शाऽमिल करि। अख़बार 'खिदमतुक' ति छुस शुकुरगुज़ार यथ मंज़ वारयाहस कालस म्याऽन्य् बाऽथ छपान रुद्य् तुँ आऽखरस करुँ बुँ रियासात किस मशहूर मुस्सविर तुँ अदीब श्री ओ०पी० शर्मा 'सारथी' सुंद शुक्रिया अदा यिमव ये'मि किताबि हुंद सरवरुक तैयार को'र।

मे'छे आश ज़ि म्यान्यन बाकी किताबन हुंद्य् पाऽठ्य् करन अदीब, शाऽयिर न्वकतुँ दान तुँ मज़मून निगार यथ म्यानि डालि ति स्वागत।

सोमनाथ भट्ट 'वीर'

26 अगस्त, 1900

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कवि बन बैठे। या वह हो या यह हो। किसी समय मन ही नहीं मानता पुस्तक छपाना। इस कारण से नहीं कि मेरी पुस्तकें लोगों ने नहीं खरीदी। वे तो लोगों ने स्वेछा तथा शौक़ से पढ़ीं। कुछ पुस्तकों का स्टॉक[1] भी समाप्त हुआ। आजकल के इस पैंतरेबाज़[2] ज़माने में सीधी-सादी पुस्तक छपाना एक कठिन कार्य है।

कुछ मित्रों के ज़ोर देने पर मैं यह सातवीं[3] पुस्तक 'पोश अंबर' (पुष्प अंबार) बाज़ार में लाता हूँ। इसमें मैंने कुछ पुराने,[4] तथा भूले-बिसरे गीत दर्ज किए हैं तथा साथ ही कुछ न छापे और नये गीत भी शामिल किये हैं। कुछ नवीनतम नज़्में (कविता) तथा कुछ समाचार-पत्रों में छपी कवितायें इत्यादि भी सम्मिलित की हैं। कुछ तो गायक मित्रों के लिए हल्के-फुल्के उपहार भी हैं। मुझे आशा है कि लोग इस किताब को भी सिर-माथे लगायेंगे।

मैं रियास्ती कल्चरल अकादमी का कृतज्ञ हूँ जिसने मुझे थोड़ी सी नकदी सहायता भी की। मैं श्री पी०एन० कौल बामज़ई[5] का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस किताब को अच्छी प्रकार पढ़ा तथा अपने विचार प्रकट किये। मोती लाल 'साक़ी'[6] का भी आभारी हूँ जिन्होंने यह किताब छपाने के लिये कई प्रकार के परामर्श दिये। तथा इसका 'सरनामा'[7] लिखा। डाक्टर मरगूब[8] बानहाली का भी आभारी रहूँगा जो यह पुस्तक बाज़ार में आने के लिये उत्सुक रहे।

'रेडियो' तथा 'दूरदर्शन केन्द्र श्रीनगर' का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी रचनायें अपने कार्यक्रमों में सम्मिलित कीं। समाचार-पत्र 'खिदमत' का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिसमें बहुत समय तक मेरी कविता छपती रही। तथा अंत में मैं प्रदेश के विख्यात कलाकार तथा लेखक श्री ओ०पी० शर्मा 'सारथी'[9] का धन्यवाद प्रस्तुत करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का 'सरवर्क'– (ऊपरी पृष्ठ) तैयार किया।

मुझे आशा है कि मेरी शेष पुस्तकों की भांति लेखक, कवि, आलोचक तथा रचनाकार इस मेरे उपहार का स्वागत करेंगे।

26 अगस्त, 1990 सोमनाथ भट्ट 'वीर'

---

1. ज़खीरा। 2. उलझावयुक्त। 3. यह अनुवाद अब अष्टमी पुस्तक है। 4. प्रारम्भिक। 5. एक प्रसिद्ध इतिहासकार। 6. एक प्रसिद्ध कवि, इतिहासविद्ध तथा लेखक। 7. Foreward 8. कश्मीर विश्वविद्यालय में कश्मीरी विभाग के अध्यक्ष तथा कवि। 9. जम्मू के कवि तथा लेखक।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ग़ज़लुॅ

(1)

मोरुॅ अमारुॅ गछ़ नच़ान ओ'बुर ओ'बुर चुॅ यार कर।
शोरुॅ बऽनिस चुॅ पोन्य् त्राव, सूरुॅ बऽनिस बहार कर।।

च़ायि बरात वीग्य् बल, वतन वुॅन्यन ति पोश वऽव्य्।
ज़ायि नुॅ ज़ांह स्व नऽव शकल, आयि सो'पुन बकार कर।।

सूरचुॅ बेछि खबर कत्यन, मूरच़नुॅय तवाफ़ कऽर्य्।
हूरुॅ आलम छि दूरि गऽच़, बनेयि रिश्तुॅदार कर।।

पाहरि पाहरि श्रूचि़ श्रानि, ताहरि च़ो'ट्य् थ'वेयि ना।
रुठ्य् मूरि मूरि गुल, तुॅ बीठ्य् जानवार कर।।

शोकुॅ तमाम मोकुॅ वुछ्य्, गिंदान गऽय असान गऽय।
ज़मादुॅ कऽर्य् न्यऽबॅुर्य न्यऽबुॅर्य् अऽदुॅर्य् बल्योव ब्यमार कर।।

बरन कुनुय मुदय गऽडिथ, गरन हुंदुय तमाह कर्योव।
ज़ोर वरन ख्वरन नऽमिथ, बुथ्यन कर्योव नकार कर।।

'वीरुॅ' चे़' छय वुशिन्य् ज़बान, जोशुॅ अथन जहार छुय।
पोशुॅ अंबर दतन फ्वलन, वतन चुॅ मुश्कदार कर।।

(29 मार्च, 1984)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गज़लुॅ

(1)

1. रे मयूर! आंक्षाओं को लेकर तुम नाचते जाओ और मेघों को मित्र बनाते जाओ। बारूद के ढेर पर अमृत वर्षाओ और राख के ढेर को बहार में बदल।

2. बरात तो उस प्रांगन में प्रवेश कर चुकी है जहाँ व्यूग[1] (विवाह के योग चक्र) का स्थान बनाया हुआ है और ज़िसके रास्ते में चूने से, नकली फूल बोए गए हैं। परन्तु वह नई मूर्ति (दुल्हन) जन्मी नहीं। तथा वे स्वप्न किसी काम के न रहे।

3. पता क्या सुंदरियां कहां छिप गईं। हम तो कृत्रिम मूर्तियों के ही परिक्रमा करते गए। अपसराओं के लोक ही दूर अति दूर हैं। वे कब किसी की सम्बंधी हुईं हैं।

4. हमने क्या प्रत्येक झोंपड़ी के छत पर पीले चावलों का च़ट्टू[2] (नैवेध) नहीं रखा। परन्तु प्रत्येक शाखा के पुष्प रूठ गए और फिर कब कोई पक्षी वह चावल खाने बैठा?

5. हमने उत्साह से सारी मुहूर्त देखे और हंसते गाते रहे। बाह्य उपचार तो किए परन्तु अन्दर का रोगी कब ठीक हुआ?

6. दरवाज़ों की ओर एकटक देखकर हमने भी घर बनाने की इच्छा की थी परन्तु बलवानों के पैरों पर माथा टेकना पड़ा और फिर कब हमने (शोषन करने वालों के) चेहरों के सामने इनकार किया?

7. 'वीर'! आपकी जिह्वा (भाषा) गर्म है तथा आपके जोशीले हाथों में विस्तार (फैलाव) है। वृक्ष के घने पत्तों की भांति आप मिट्‌टी के छोटे-छोटे टुकड़ों (ढेलों) पर भी फूलों के अंबार खिला सकते हो। केवल आपको यह रास्ते सुगंधित करने हैं।

(29 मार्च, 1984)

1. 'योग चक्र' जिस पर दुल्हा दुल्हन खड़ा रहते हैं। यह घर के प्रांगन में बनाया जाता है।
2. पीले चावों का प्रसाद।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(2)

द्वह लूस दार्यव चाव क्रुहुन ताफ वछस मंज़।
अऽस्य् चुमरिव्यन बाऽतन दिवान गऽयि चाफ वछस मंज़।।

ये'म्य् छांप खानन छांपनय व्वन्य् थो'व नुँ वरुख कांह।
अथ मंज़ छु शुकुर सीनुँ म्वच्योम साफ वछस मंज।।

ये'लि आसि ज़्यवुन फ़सलुँ कुल्यन, स्ये'कि छि फ्वलान पोश।
कतिनस नुँ ब्ववन जाय, ववन वाफ़[1] वछस मंज़।।

सऽहराऽव्य् कुल्य् पाऽराऽव्य्, कुठ्यन बीठ जंगुँल्य् हाय।
स्वम्ब्राऽव्य् ज़न पानय रये'शन हुंद्य् शाफ वछस मंज़।।

वऽजमुँच़ ज़ियारत बूतुँ ब्यहव खूचमुत दिवता।
तनहा छु प्रथ कांह पान, पलान पाफ वछस मंज़।।

पथकाल वुन्य् वुन्य् रोव, वुन्य् वुन्य् रावि पगाह ताम।
फऽहलान वुन्य् क्यन च्यूह छु ज़न क्वह काफ वछस मंज़।।

वह्य्! काऽयनातस मंज़ छि छऽरी सिरयि तुलान तोस।
वाह! जूनुँ माहरिन्य् म्याऽन्य् त्राऽविथ डाफ वछस मंज़।।

अकि नारुँ वज़मलि रुदुँ जऽर्य् वऽछ़ लेस वऽसिथ आय।
महलात पे'यि वऽस्य् यक् कलम गव क्राफ वछस मंज़।।

लऽज ज़न अदालत महशरुन्य् गछ़ि गीर हर कांह नाव।
आवाज़ गछ़ि 'वीरस' करव अऽस्य् साफ वछस मंज़।।

(20 जुलाई, 1950)

वाफ़ = बुवाई या बीज बोने का ऋतु। ज़ियारत = मन्दिर, देवालय, आस्तान।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(2)

1. दिन अर्थात् सूर्य डूब गया। काली धूप खिड़कियों से छाती में प्रवेश कर गई। हम लोहित (फौलादी) गीतों को छाती के अंदर चबाते गए।

2. इस छापखाने ने अब कोई भी पृष्ठ बिना छापे न रखा। इससे भी बढ़कर धन्य है कि मेरी छाती के अंदर मेरा हृदय अछूता निर्मल ही रहा।

3. यदि अनाज के पौदों को उत्पन्न होना होता है तो रेत में भी फूल उग आते हैं। हमारी छाती में कौन सा ऐसा स्थान नहीं जो उपजाऊ नहीं और वह कौन सा मौसम है जो बुवाई के योग्य नहीं।

4. मरूस्थल के पेड़ हमने सजाए, अपनी कोठरियों में जंगल का काला धुआं कालिख लगाता गया। मानो कि स्वयं ही प्राचीन ऋषियों के शाप एकत्र करके सीनों में बिठा लिए।

5. देवालय की चारों ओर भूत-प्रेतों की बैठकें लगी हुई हैं। यहां तक कि देवता भी डर गया है। प्रत्येक प्राणी अकेला-अकेला सा रह गया है और जिसकी छाती में पाप ही पाप पलते रहते हैं।

6. अतीत अभी-अभी खो गया। और भविष्य काल भी अभी-खो जाएगा। परन्तु वर्तमान का एक-एक पल 'काफ़' नामक पर्वत की भांति छाती में फैलता ही जाता है।

7. हाय! इस ब्रह्मांड में इतने प्रेमरस विहीन शुष्क सूर्य पिपासा की तीव्रता बड़ाते हैं परन्तु वाह! मेरी प्यारी चन्द्रमा रूपी दुल्हन मेरी छाती के अंदर लेटी प्रेमरस का पान कराती है।

8. एक ही ज्वाला रूपी बिजली के चमकने से बादल फट गए और वर्षा का झरना इस वेग से तथ शक्ति के साथ बहता गया कि पर्वत से पसियां गिर-गिर के महलों के महल ढा चलीं तथा छाती के अन्दर के महल में भी दरार पड़ने की आवाज़ सुनाई दी।

9. हो सकता है कि महशर[1] अर्थात् प्रलयकाल की अदालत किसी समय लग भी जाए तथा प्रत्येक व्यक्ति नाम ले लेकर अपराधी ठहाया जाए। उस समय भी कहीं से आवाज़ आएगी कि "हम 'वीर' को क्षमा करके मुक्त करते हैं।"

(20 जुलाई, 1985)

---

1. इसलाम धर्म के अनुसार प्रलय काल में मैदानि अरफ़ात में सब रूहों को व्यक्तिगत रूप में खड़ा करके पापों तथा पुण्यों का हिसाब लिया जाएगा। परन्तु फिर पैगम्बर साहब आकर सबों के पाप माफ़ करेंगे।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(3)

वकतुँ गरि गरदिश नर्‌यन हर पल मुसलसल इनकलाब।
ज़िंदगी छय पारदिस[1] हरकत तुँ हलचल इनकलाब।।

गाह फ्वलान छय मालुँ गाह परबऽत्य् ड्यकस प्यठ ओ'बरुँ ज़ाल।
मन सरस पंपोशुँ बुथ, गाह चश्मुँ पां डल इनकलाब।।

आऽस यारस यारुँ सुंज़ पछ लोलुँ नारस गाह ज़ल्योव।
सोत हो'छ छ़यऽव जोत तारस[2] वोत बर तल इनकलाब।।

येलि ति ज़ांह लफ़्ज़न तमीजुक ओट वो'लमुत छलनुँ आव।
दिल ब दिल आऽईनुँ सपद्यव बिलमुकाबल इनकलाब।।

अथुँ वऽथुँर[3] हिश चाऽन्य् काऽह्नी छाप गऽयुँ मे'यहोत पऽर।
खतुँ पऽतुँर सूज़ुँम यिथय अख रछ़ तुँ वो'थ जल इनकलाब।।

वाऽंस सद्‌बी साल[4] बस प्रथ फलसफस बिगरिथ ज़वाल।
वक्तुँ च़ऽखरुक बुथ छु ब्रोंह कुन मुश्किलन हल इनकलाब।।

आंगनन हुंदि शोरुँ मा प्यन काऽनियन हुंद्य् चीन्य् वऽस्य्।
'वीरुँ' मऽज़िम लुख छि बऽल्य् छ़ारान मुकमल इनकलाब।।

(20 जुलाई, 1985)

1. पारुद = पारा, एक मादक द्रव्य। 2. तार = कमरे के स्तंभ के साथ दीपक रखने का आला।
3. नसब नामा, पटवार रिकार्ड में वंशावली। 4. सद बी साल (सद+बीस+साल = 120 वर्ष)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(3)

1. समय रूपी घड़ी की सूईयाँ घूमती रहती हैं और वे हरपल निरन्
क्रांति अर्थात् परिवर्तन की सूचक हैं। जीवन तो पारे में बेकरारी तथा हलच
की भांति क्रांति है।

2. कभी पर्वत मालाएँ प्रभातकाल में प्रकाशमान दीख पड़ती हैं तो क
पर्वत का माथा मेघों से आच्छादित होता है। कभी मन रूपी झील का चेह
कमल फूल की भांति खिल उठता है तो कभी आंखें ही डल झील के सदृ
जल छलकाते हुए क्रांति की सूचक बनती हैं।

3. मित्र को मित्र पर विश्वास ही तो था तभी प्रेम की अग्नि से प्रक
चमक उठा था परन्तु अब जबकि दिये (दीपक) में ही तेल सूख चुका
तो ज्योति बुझ गई है और आले (दिया रखने के स्थान) के स्तंभ के चर
तले अंधेरा क्रांति का द्योतक है।

4. जब भी कभी शब्दों पर से लपेटा हुआ कृत्रिम आटा धुल गया। उ
समय दो दिलों के मुकुर सामने आये और बदलाव आया।

5. तेरी कहानी लम्बे हस्त-पत्र (नसब नामे) के मानंद छप गई पर
केवल मैंने पढ़ी और किसी को कानोंकान खबर न हुई। परन्तु जब मै
छोटी सी परची (पत्र) भेजी तो सहसा क्रांति सी उत्पन्न हुई।

6. प्रत्येक फ़लसफ़े की वास्तविक आयु (मान्यता) असल में एक सौ बी
वर्ष ही होती है। तत्पश्चात् वह बिगड़कर हृास की ओर बढ़ता है। समय-च
का मुँह आगे की ओर होता है तथा कठिनताओं को तो परिवर्तन ही
कर सकता है।

7. आँगनों के कोलाहल से महलों की तीसरी छतों के स्तंभ कैसे
सकते हैं। 'वीर'! बीच में मध्य वर्ग के लोग व्यर्थ में पूर्ण क्रांति की प्रती
करते हैं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(20 जुलाई, 198

(4)

तलपऽतिस तल गऽयम तछ कतुॅर[1] दोस्तो।
वऽस्य् पे'यम ठस क'ऽरिथ मस मलुॅर दोस्तो।।

अऽदरुॅ मंदोरि गव बरनि कुॅर दोस्तो।
न्यऽबरुॅ अलबानि छे'न्यु आहितुॅर[2] दोस्तो।।

यथ वुजारस अंदर छुस कुनुय कावुॅ कुल।
अऽदरुॅ खल छम करान कुल्य् ददुॅर दोस्तो।।

चव नुॅ हरगिज़ मे' यि छे' वननुॅ दपतुॅच फरक।
म्वठ कऽरिथ रठ साऽ वाऽलिंज मे' मुॅर दोस्तो।।

नो'व छु नोजुक पलव मायि वुशनेरुॅ रस।
प्रानुॅ वारन छे' पेमुॅच़ अऽथुॅर[3] दोस्तो।।

मसलुॅ ब्ये'यि सुंद सनुन हल करुन मुशकिला।
यसलुॅ गरुॅ खुरय् तुॅ पननी यसुॅर दोस्तो।।

बेग्वनाहस ति खारुन ग्वनाह बो'ड ग्वनाह।
क्या ग्वनाह गव, मे'कुन थर मुॅ फिर दोस्तो।।

आऽस कऽम्य् ताम वऽवमुॅच़ तुॅ सय स्वय[4] लऽजुॅम।
वरनुॅ सगवुॅम नुॅ कर साऽ बबुॅर[5] दोस्तो।।

हसदुॅ नारय नसाऽ वीर जाऽलिथ ह्ये'क्यून।
मायि मन तस मऽदुॅर तन अऽदुॅर दोस्तो।।

(14 दिसम्बर, 1981)

---

1. ठीकरी, बर्तन का टुकड़ा, कंकड़। 2. हल में लगा लकड़ी का टुकड़ा जो रस्सी से बंधा होता है। 3. कीटाणु। 4. एक विषैली जड़ी जिसको छूकर फुन्सियां होती हैं। 5. बबर नाम का पौदा जिससे सुगन्ध फैलती है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(4)

1. मेरे मित्रो ! मेरे तलवे के नीचे एक गर्म ठीकरी चिमट गई तथा मेरे सिर पर रखा हुआ मदिरा पूर्ण घड़ा सहसा धड़ाम से नीचे आ गिरा। हे मित्रो !

2. महल के अन्तःकोष्ट से दरवाज़े के खुलने की थोड़ी सी आवाज़ सुनाई दी तो बाहर खेत में भयबीत बैलों के कंधों पर बंधे हल को लगा हुआ लकड़ी का बंधक (टुकड़ा) टूट गया, मित्रो !

3. इस वीराने में मैं उस अकेले पेड़ के समान हूँ जिस पर थके हारे कव्वे आराम करते हैं। परन्तु मित्रो ! इसी पेड़ को 'लकड़हारा-पक्षी' कुतर-कुतर कर छलनी तथा छेद करता है।

4. मैंने तो स्वयं कभी मदिरा पी नहीं। केवल यह कहने सुनने का अंतर है। ले पकड़ो मित्रो ! मैंने हृदय को मुठी में निचोड़ा तथा पीस-पीस करके इसे आटा बनाया।

5. नया नाजुक कपड़ा प्रेम रहित (ठण्डा) होता है। परन्तु पुराने कपड़ों को भी धुन (कीड़ों) ने खाया है। हे मित्रो !

6. दूसरे की समस्या की ओर ध्यान देना तथा उसका समादान करना कठिन कार्य है। क्योंकि प्रायः लोग प्रत्येक घर में अपनी ही उलझनों तथा व्यस्तता में फंसे हुए हैं।

7. निष्पापी को पापी ठहराना बड़ा पाप है। हे मित्र ! मेरी ओर पीठ मत फेर, सम्मुख देखा इसमें कौन सा पाप है?

8. किसी ने विषैली जड़ी बोई थी जो मुझे छू गई। वरन् तो कब मैंने 'बबरी' नामक सुगंध फैलाने वाले पौदे नहीं सींचे थे। हे दोस्तो !

9. इर्षा की अग्नि से आप 'वीर' को जला नहीं सकते। उसका मन प्रेम भरा है और शरीर मधुर तथा स्नेह से आर्द्र[1] (ओतप्रोत) है। हे मेरे मित्रो !

(14 दिसम्बर, 1981)

1. आर्द्र = यौवन भरा शरीर, स्नेहमय।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(5)

मुलकन करि आबाद म्वहबत।
खलकन बो'ड जादाद म्वहबत।।

दिल छि गछ़ान छ्यनुॅ रावान यछ़ पछ़।
याम गछ़ान बरबाद म्वहबत।।

त्राव तुॅ नफ़रत हाव रफाकत।
थाव तुॅ पथ कुन याद म्वहबत।।

फलकी गोलन कऽशिश छे' 'लोलुच।
ज़ुव ज़्यतुॅ होंज़ तुॅ राद म्वहबत।।

पतुॅ यिम ज़ायवुॅ गो'ववा मऽशथुॅइ।
आदम[2] सुंद हमज़ाद म्वहबत।।

हतुॅ बजुॅ वतुॅ कथुॅ ब्यो'न अदुॅ आऽसिन।
पतुॅवथ लातेदाद म्वहबत।।

'वीरॅन्य्' बऽत्य्[3] ज़लि न्यह गटि वावस।
नाशादन करि शाद म्वहबत।।

(28 मार्च, 1986)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1. Gravitational pull of heavenly bodies. 2. Adam, मनु, मानव। 3. दीपक।

(5)

1. प्रेम ही संसार के देश देशंतरों को सुख शांति तथ समृद्धि देगा। लोगों के पास प्रेम ही बड़ी संपत्ति होती है।

2. प्रेम के मिट जाने से दिलों में दूरी पड़ती है। तथा विश्वास और श्रद्धा उठ जाती है।

3. नफ़रत छोड़कर मित्रता बनाओ तथा अपने प्रेम की यादें पीछे रख छोड़ दो।

4. आकाशीय गोलक प्रेम के आकर्षन से ही जुड़े हुए हैं। प्रेम ही उनकी जीवन शक्ति का आधार है।

5. तुम, जो बाद में जन्में हो, को क्या भूल ही गया है कि मानव के साथ ही प्रेम भी उत्पन्न हुआ था।

6. सैंकड़ों मार्ग और फ़लसफ़े भिन्न-भिन्न हो सकते हैं तो होने दो। प्राचीनकाल से प्रेम ही अमर रहा है। असंख्य प्रेम! अनंत प्रेम!

7. 'वीर' की ज्योतिर्मय बत्ती अंधेरे तथा आँधी में भी प्रकाशमान रहेगी तथा वह प्रेम का प्रकाश दुःखी लोगों को प्रसन्नता प्रदान करता रहेगा।

(28 मार्च, 1986)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(6)

कथ किच़ कथ स्वम्ब्राव्यम ज़्यव।
पतुॅ कुस न्यंगलावनाव्यम ज़्यव।।

दंदुॅ बरिनुॅय मंज़ अंद रुज़िथ।
खंदुॅ कऽर्य कऽर्य मंदुॅछाव्यम ज़्यव।।

व्वंदुॅ नय खोलुॅ बुॅ पानुॅ पनुन।
आऽसस मंज़ कुस थाव्यम ज़्यव।।

तापुॅ वुडुॅर मंज वुतनि छे' लाश।
प्रारान कुस शे'हलाव्यम ज़्यव।।

कूॅत्यन बुथ्य् फुट्य्[1] कूॅत्यन दिल।
क्या क्या वुनि अफ़साव्यम ज़्यव।

मरज़ी तऽम्य् सुंज़ अरज़ी म्याऽन्य्।
द्रन मा छे़'न दिवनाव्यम ज़्यव।।

मोनुन ती न्युन ई द्युन ओस।
ज़ोनुन व्यन्य् मा हाव्यम ज़्यव।।

'वीरस' वाऽलिंजि वठ गोमुत।
हाव्यम नबुॅज़ न हाव्यम ज़्यव।।

(15 दिसम्बर, 1981)

1. दूसरों से सेवा करवाकर शोषन किया।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(6)

1. किसलिए जिह्वा बात करना सीख लेगी? बात करना सीखने के पश्चात् कौन होगा जो मेरी इस बातूनी जिह्वा को निगलवाने की शक्ति रख सके।

2. दो दन्त-मालाओं के बीच किनारे होके तथा छिपकर यह जिह्वा कलाबाजियाँ करके तथा नाचनूच कर मुझे ही लज्जित करेगी।

3. यदि मैं स्वयं ही अपना हृदय खोलकर न रख सकूँ अर्थात् दिल की बात न बाता सकूँ तो दूसरा कौन मेरे मुँह में अपनी जिह्वा रख देगा।

4. धूप से तपी पहाड़ी डलवान भूमि पर तो शव आकाश की ओर मुँह किये हुए पड़ा है। वह इस प्रतीक्षा में है कि कौन (पथिक) उसके मुँह में पानी डालकर उसकी प्यासी जिह्वा को ठंडा करे।

5. इस जिह्वा से कितनों के ही माथे झुककर चूर हुए तथा कितने ही दिल टूट गए। अभी भी क्या पता कि यह जिह्वा कितनी कहानियां बनाएगी।

6. अब उसकी इच्छा है कि स्वीकृति दे या न दे। मैंने तो याचिका पत्र पेश किया है। कहीं अब मेरी जिह्वा ही अनाप-शनाप कहकर दो अर्थात् याचिका तथा स्वीकृति के बीच दरार (दूरी) पैदा न करे।

7. अब तो उसने मूल वस्तु ही लेना मान लिया है जो कि मुझे ऋण था। ऐसा तब हुआ जब उसने भांप लिया कि कहीं देने वाला अतिरिक्ति देने के स्थान पर जिह्वा दिखाकर मूल से ही इनकार न कर दे।

8. 'वीर' का दिल अब पत्थर की तरह जड़ बना हुआ है अर्थात् प्रियतम की दूरी के कारण बेजान सा पड़ा हुआ है। परन्तु वह न तो वैद्य को नाड़ी (नब्ज़) ही दिखाता है और न जिह्वा ही ताकि इस बीमारी का उपचार होता।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(15 दिसम्बर, 1981)

(7)

बूदस[1] तुॅ नाबूदस अंदर इनसान प्राऱ्‌ॅनोव।
रुदस तुॅ काकज़ पाहरि मंज़ मे'हमान प्राऱ्‌ॅनोव।।

ज़ंजीर गऽर तुॅ ख्वर पनुॅन्य् वुछ्य् ब्वंगरि करे'न मंज़।
पखुॅ वायि खूब पथरि प्योमुत पान प्राऱ्‌ॅनोव।

गव इमतिहानुॅ बुज़्य् सु वाऽसि हुंद स्कूलुॅशुर।
मज़मून केंह नुॅ सास दिथ उनवान प्राऱ्‌ॅनोव।।

फ़ो'ज सोसनुॅच[2] कबर तुॅ छुकाऽव जनतुॅच फुलय्।
प्रथ मोसिमस अंदर सु रुह हाऽरान प्राऱ्‌ॅनोव।।

प्यठ टीनुॅ पट्यन ज़ाऽन्य् हुंद्य् खो'ट्य् लीख्य् इश्तिहार।
मंज़बाग चुवति वतुॅ गथा अनज़ान प्राऱ्‌ॅनोव।।

स्वम्ब्राऽव्य् वर्‌क नाव ब नाव मिसलुॅ बनाव्यख।
दानायि दऽहर हाऱ्‌ॅनोव, नादान प्राऱ्‌ॅनोव।

अरमान ह्यथ वतन म्वचेयि काऽफिलुॅक्य निशान।
पथकुन सु वांऽसि स्वम्ब्रमुत सामान प्राऱ्‌ॅनोव।।

अस्तानुॅ डेडि निश वो'नुख आगाह छु व्वन्य् म्वकुल।
तकरीर बूज़ 'वीर' ह्यू जानान प्राऱ्‌ॅनोव।।

(19 मार्च, 1982)

---

1. 'है' तथा 'नहीं है' के बाद विराम में। 2. 'सोसुन'— एक सफ़ेद रंग का फूल जो प्रायः कब्रों पर उगाया जाता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

14

(1)

1. अस्ति (है) तथा नास्ति (नहीं है) के मध्य में मनुष्य को प्रतीक्षा करवाया। एक तो वर्षा में, और फिर कागज़ी झोंपड़ी के अंदर, अतिथि को प्रतीक्षा करवाया।

2. स्वयं ही बेड़ियां बना लीं और देखा तो कड़ियों के बीच अपने ही चरण फंसे पाए। पंख तो खूब फड़फड़ाए परन्तु अपना धराशायी शरीर ही प्रतीक्षा करवाया।

3. वह आयु भर का स्कूली बच्चा परीक्षाओं की भेंट चढ़ गया। विषय (प्रस्ताव) कुछ भी न थे परन्तु सहस्त्रों शीर्षक देकर उसे प्रतीक्षा करवाया।

4. 'सोसन' नामक पूष्पों से युक्त कब्र जब लहलहा उठी तो हम उनका मूल्य स्वर्ग की पुष्पराशियों से भी बड़कर जितलाने लगे। परन्तु प्रत्येक ऋतु में उस मृत आत्मा को प्रतीक्षा करवाया।

5. टीन की चादरों पर जानकारी देने वाले खोटे विज्ञापन लिख डाले। तथा चौराहे के बीच में दुविधा में पड़े हुए अजनबी पथिक को प्रतीक्षा करवाया।

6. पृष्ठ पृष्ठ एकत्र करके मुद्दई[1] तथा 'मुद्दालय'[2] के नाम, बनाम, लिखकर 'मिसलें'[3] बनाईं। इस प्रकार प्रबुद्ध कहलाने वाला चतुर मुकदिमाबाज़ हराया और नादान अर्थात् साधारन प्रतिद्वन्दी को भी प्रतीक्षा करवाया।

7. आकाक्षाएँ लेकर पथ पर चलने वाले क़ाफ़िलों के पद चिन्ह ही पीछे रह गए। जीवन भर में एकत्र किया हुआ सामान पीछे छूट गया तथा प्रतीक्षा करवाया।

8. देवालय के मुख्य द्वार के पास पहुँचकर हमें बताया गया कि अब नज़रों के परदे हट गए हैं। तथा परोक्ष को देखा जा सकता है परन्तु 'वीर' जैसे प्रेमी[5] युवक को वक्तव्य सुनने के पश्चात् प्रतीक्षा करवाया।

(19 मार्च, 1982)

---

1. मुद्दई = याचिका दायिर करने वाला। 2. मुद्दालय = प्रतिद्वंदी। 3. मिसल = फ़ाइल। 4. जानान = यौवनयुक्त प्रेमी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(8)

सुबहय द्राव कालुक खाब सही।
असि चोमुत ज़नतु शराब सही।।

नबुॅ नो'च़ को'र क्वमुॅ करि क्रहन्यारस।
कुल्य् गामुॅ छे़'व्यव अखताब सही।।

मुलुॅ मायि कऽरिथ चे'युॅ अऽन्य् खलि पछ़।
वुसखनन चाऽर तनाब सही।।

द्रदुॅ कुॅयुॅ थवि हावुॅन्युॅ फऽट्य् तावस।
चिनि प्यालन पश्प्योव आब सही।।

परुॅ प्यव परद्यन तकबीर परुन।
पतुॅ पनन्यव लोग कसाब सही।।

क्रमुॅ द्रदुॅ क्वलुॅ फिरि तकरीरन मंज़।
फो'ल गाश ननेयि सराब सही।।

वऽथ्य् ठानुॅ खज़ानय खाऽली ग'य।
गलतानुॅ गलत तुॅ हिसाब सही।।

यनुॅ ब्वंगरि नरे'न मंज़ ह्यनुॅ आव दिल।
'वीरस' कूरन छि अज़ाब सही।।

(12 दिसम्बर, 1982)

गलतान = पूंजी की पेटी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(8)

1. प्रातः सवेरे जागते ही रात का देखा हुआ स्वप्न सत्य साबित हुआ। मानो हम सबों ने सचमुच शराब ही पी हो।

2. हमने आकाश में खूब नाचा। तमस (अंधेरे) को दो-दो बाहों से गले लगाया। ऐसा कि पेड़ों भरे गांव में सूर्य पूर्ण रूप से बुझ गया।

3. हमने गोया श्रद्धा को अंधविश्वास की परत चढ़ाकर पी लिया। तथा पूरी तरह शरीर के अंगों (अवयवों) को श्रृंखलाओं[1] में जकड़ लिया।

4. दूध के मटके तो जली प्यासी काया को दिखाने मात्र के लिए सामने रखे परन्तु मिट्टी के कटोरों तथा प्यालियों से सर्वथा पानी ही टपकने लगा।

5. हमें मार डालते समय हलाल[2] करने की आयत[3] (तक्बीर) पढ़ना शत्रुओं को भूल गया परन्तु अपनों ने तो हमें मारते समय पूरी तरह 'कसाई'[4] का काम किया।

6. रात्रि के दौरान हमने तकरीरों में कैसी-कैसी दूध की नदियां बहाईं परन्तु जब प्रभात आने पर प्रकाश हो उठा तो वे सब पूरी तरह 'सराब'[5] ही सिद्ध हुईं।

7. (जब जब) खज़ानों के ढक्कन उठ गये, तुरंत खज़ाने खाली किये गये। पूंजी की पेटियां यद्यपि खाली पड़ी रही परन्तु आय व्यय का हिसाब सही रखा रखाया गया।

8. जब से 'वीर' का दिल चूड़ियों भरी भुजाओं में फंस गया तब से विरह का दुःख उसके दिल को चीरता रहता है।

(12 दिसम्बर, 1982)

---

1. ज़ंजीर। 2. इस्लाम की विधि से मारना (ज़बह करना)। 3. कुरानी आयत (मन्त्र) जो भेड़ आदि मारते समय पढ़ा जाता है। 4. कसाब, कसाई, मारने वाला। 5. मरुस्थल में दूर से दिखाई देने वाला पानी जो वास्तव में धोका होता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(९)

आयिहम चुॅ मायि मऽच़ खयालुॅ अऽदुॅर्य्।
छख मे' अऽछन तल शराबुॅ प्यालुॅ अऽदुॅर्य्।।

बूटि ज़ंगुल ज़ोतुॅवुन मे' दाग़ि जिगर।
त्राव नज़र रोगि म्यानि नालुॅ अऽदुॅर्य्।।

गव ज़ि जंगुल मे'य छु त्यंगलुॅ त्यंगलुॅ वुहान।
अवुॅ ज़ि मे'य छे' हरनुॅ निवान डालुॅ अऽदुॅर्य्।।

काऽदुॅ अऽदुॅर्य् छुस बुॅ छनान आबु क्रेंजुल[1]।
आऽश च़टान छख चुॅ जुलफि ज़ालुॅ अऽदुॅर्य्।।

हरदुॅ म्वच़ान गरदि फऽल्य् तुॅ सोंतुॅ फ्वलान।
कऽन छु लगान बऽस्तियन ज़वालुॅ अऽदुॅर्य्।।

रव ति बालुॅ बुज़्य् छु ग़ो'मुत रोव सुबुह।
कूत काल तां मशालि ज़ालुॅ अऽदुॅर्य्।।

अख अऽकिस वुछिथ छि अपज़ि अऽस्य् ति असान।
वरनुॅ कस नुॅ द्रुॅह ड्यकस मलालुॅ अऽदुॅर्य्।।

श्रूचि़ श्रानि पूचि़[2] म्यानि 'वीर' लमान।
हसरतुक तकाजुॅ यी छु च़ालुॅ अऽदुॅर्य्।।

(20 दिसम्बर, 1979)

1. क्रेन्जुल = टोकरी जिसमें पानी नहीं ठहरता। तीलियों से बनी टोकरी। 2. कश्मीरी औरतों के सिर पर पूच़ नामक लम्बी ओढनी जो सर्पाकार होती है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(९)

1. तुम प्रेम में मत्त[1] बनी मेरी कल्पनाओं में दृष्टिगोचर हुई। इस समय भी तुम मेरी शराब की प्याली के अन्दर मुझे दीख पड़ती हो।

2. मेरा घावों भरा दागी हृदय मानो 'संजीवनी' जड़ी बूटियों से परिपूर्ण वन है। (लोगों से) नज़रें बचाकर विश्वास करने के लिए मेरे गिरेबान[2] के अन्दर झांक कर देख।

3. सत्य है कि मेरा हृदय रूपी वन धहकते अंगारों से परिपूर्ण है परन्तु यह भी सत्य है कि मेरे ही इस वन के अन्दर मृग झूम-झूमकर नाच रहे हैं।

4. बंधी गृह के बाहर रहकर भी मैं काठ की टोकरी के बीच से पानी की भांति छनता (टपकता) हूँ। तुम तो अपने केशों के जाल रूपी कारावास में रहकर भी चैन से रह रही है।

5. जो (पुष्प) शरद ऋतु[3] के आते ही रजकणों में परिणित होते हैं वही रजकण बसंत आते ही फिर खिल उठते हैं। इसी प्रकार बस्तियां उजड़ कर फिर निर्मित होती हैं।

6. सूर्य भी पर्वतों के पीछे ओझल हुआ है तथा प्रातःकाल भी अगोचर है। अब मैं कितने समय तक अंदर ही अंदर मशाल[4] जलाता रहूँ।

7. एक दूसरे के सामने हम नकली हँसते रहते हैं वरन् तो किसके माथे पर क्रोधी बल नहीं हैं और किसके मन में शिकायतें नहीं।

8. 'वीर' तो मेरे सिर की लाज रूपी पवित्र ओढनी को खींचता है। निराशा की सीमा अब निष्कर्षता यही है कि मैं यह सब अंदर-अंदर से सह लूं।

(20 दिसम्बर, 1979)

---

1. पागल। 2. नाल = गिरेबान, गला। 3. पतझड़ = Autumn, शरदकाल का आरम्भ।
4. बड़ा दिया (दीपक)।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(10)

थऽव्य् गरन मंज़ महशरॅक्य्[1] सामानॅु कूॅत्य्।
नऽव्य् सपॅुद्य् पऽज्य् किन्य् ग्वनाह ननिवानॅु कूॅत्य्।।

वो'न कजॅुल्य् टार्यन यिमय गऽयॅु हरनॅु अऽछ।
बे हकीकत वऽन्य् यिथी अफसानॅु कूॅत्य्।।

सरहदव तऽर्य् दूर रुव्य् गाशिर्य् मुनार।
गर गऽटिस मज़ रावॅुराऽव्य् परवानॅु कूत्य्।।

सीनॅु तरिनॅुय मंज़ व्वबॅुर्य् आतश फिशान।
स्वयचनॅुय हो'ख तील छे'व्य् नूरानॅु कूॅत्य्।।

म्वख तसुंद स्वखॅु साऽव्य् ह्यू बासान ओस।
द्वख दितिन मऽशरावॅु कूॅत्या ज़ानॅु कूॅत्य्।।

दऽरजॅु पाऽथॅुर[2] यिन गछन बे'यॅु बेवसा।
गरॅज़मऽदी हुंद्य् छ्वकन यारानॅु कूॅत्य्।।

'वीर' क्या गछि़ खाम तमाह बाज़रस।
तस पद्यन तल नाज़ कूॅत्य् नज़रानॅु कूॅत्य्।।

(28 अप्रेल, 1984)

1. कयामत, प्रलय। 2. दऽरजॅु पाऽथॅुर = कश्मीरी भांडों द्वारा खेले जाने वाली एक प्रसि... नौटंकी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(10)

1. हमने अपने घरों में प्रलयकाल के लिए कितने ही सामान एकत्र करके रख लिए। खुल्लमखुल्ला नये-नये नाना रंगी पाप किए।

2. काजल भरी कृत्रिम सुंदर आँखों को मृगनयन कह डाला। इसी प्रकार के कितने ही अफ़साने कह डाले।

3. सीमाओं को लाँघकर दूर देशों तक हमने प्रकाश स्तंभ (मीनार) खड़ा किये परन्तु अपने घर देश में हमने कितने ही प्रेम पखेरु[1] (परवाने) गंवा डाले।

4. छाती के अस्थि-पिंजरे की दरारों के बीच से ज्वालामूखी पर्वत फूट पड़े। दीपकों में रूई की बत्तियां बिना तेल के सूख गईं। और कितने की प्रकाश स्रोत बुझ गए।

5. उसका मुखड़ा सुखी तथा आनंदमय दिखता था। परन्तु उसने फिर इतने दुःख दिए कि कितने भूलें और कितने याद रखें।

6. जगह-जगह घूमने वाले भांड नौटंकी नाटक[2] खेलने के लिए आते रहेंगे। परन्तु उन पर क्या विश्वास। इस प्रकार के स्वार्थी मित्रता के सम्बंध थक चूर कर समाप्त ही हो जाएंगे।

7. 'वीर' कवि इस सुंदरतापूर्ण बाज़ार को देखकर क्या मचलेगा इसके पैरों के पास कितनी ही सुंदरियों के कितने ही अभिनय तथा उपहार डोल रहे हैं अर्थात् प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(28 अप्रेल, 1984)

---

1. परवाना = **Moths.**

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(11)

बुथि छुख व्वशलन व्वशलन क्या साऽ।
चुँ ति छुख मे'य ह्यू हन हन क्या साऽ।।

स्वरखी हिश छय चऽश्मन क्या साऽ।
थर हिश मे'ति ज़न नबज़न क्या साऽ।।

वो'दमय ज़ुव कुठिक्यन तसवीरन।
यिनुँ साऽ ज़िंदुँ सपदन ख्यन क्या साऽ।।

दरगाऽही सुबहय रऽट आऽही।
वारय को'रथा द्वह द्यन क्या साऽ।।

ब्रांदन पऽहरुँ तुँ शांदन इशरत।
फुट पाथन हुंद्य् ज़ानन क्या साऽ।।

ज़्यनुँ प्यठुँ अऽन्य् खलि गलि गलि पछ़ चथ।
शैख़ छुखा किनु ब्रह्मन क्या साऽ।।

अऽक्य् सुँय डूरिस मंज़ द्वन छ़्यन लो'ग।
रुँच़ आऽस स्वय खाह मिलवन क्या साऽ।।

'वीरस' सूँत्य् छुय रतुँ म्युल बतुँ म्युल।
ये'लि यिछ़ मिलवन त्ये'लि ब्यन क्या साऽ।।

(18 अक्तूबर, 1984)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(11)

1. क्यों जी! तुम्हारा चेहरा तो मानो बुखार से लाल दिखाई देता है। तुम तो पूर्ण रूप से मेरे जैसा हो, क्यों जी?

2. तुम्हारे नेत्रों में शराब की सी लालगी है। मेरी नाड़ियाँ भी थर-थर कांपती हैं, क्यों जी?

3. तुम्हारे कमरे में टंगी गई तस्वीरें इतनी सुंदर हैं कि उन पर अपने प्राण न्योछावर करना चाहता हूँ। परन्तु यदि यह तस्वीरें पुनः जीवन पाकर आखड़ी होंगी तो यहां क्या खाएंगी पियेगी, क्यों जी?

4. देवालय की ड्योडी पर प्रातः सवेरे ही किसी का आर्शीवाद प्राप्त हुआ। क्योंा जी, दिन तो कुशलपूर्वक गुज़रा कि नहीं?

5. दरवाज़ों पर बाहर बरामदे में सुरक्षाकर्मी पहरा दे रहे हों तथा अन्दर सिरहानों पर मौजमस्ती चल रही हों, यह बातें फुटपाथों पर सोने वाले दरिद्र लोग क्या जानें, क्यों जी?

6. जन्मकाल से ही अंधविश्वास के साथ श्रद्धा को घूंट घूंट पीकर तुम शैख (कट्टर मुस्लिम) बन गए हो या ब्राह्मण, क्यों जी?

7. यदि एक ही चमन में दो दिल जुदा हो गए तो इस चमन से बेहतर वही पुराने खेतों का प्राकृतिक मिलाप सुंदर था, क्यों जी?

8. 'वीर' के साथ तुझे रक्त और अन्न के सम्बंध हैं तो फिर भिन्न-भिन्न रहने का आचरण किसलिए? क्यों जी?

(18 अक्तूबर, 1984)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(12)

नब गव नुं द्वहस साफ़ रछ़ा गऽयुॅ तुॅ सपुॅज़ राथ।
पो'त पऽहरॅ को'रुन ताफ जुॅच़ा पे'युॅ तुॅ सपुज़ राथ।।

यादाव'री हुंज़ वाऽज शकन्तूलि अथस लाऽज।
त्रेशल अथस लो'ग शाफ म'शिथ गऽयुॅ तुॅ सपुॅज़ राथ।।

कति पूरॅ स़पद्यव खाब, अ़ऽस्य् हय लूस्य् मंदान आब।
पतुॅ त्रोव लबरिस़ डाफ, न्यऽदुॅर पे'युॅ तुॅ सपुॅज़ राथ।।

पाहल्यन छि वे'दी नीर्य्, बऽरिथ ख्ये'ल्य् छि वाऽरिस तीर्य्।
न्यथ ह्यथ ति छुख तनि ज़ाफ, थनय पे'युॅ तुॅ सपुॅज़ राथ।।

बऽस्ती छे' न्यऽदुॅरि मस, प्रुॅछ़व नेब तुॅ प्रुॅछ़व कस।
द्वस छख गऽडिथ को'ह 'काफ़' त्रप्यख लुयुॅ तुॅ सपुॅज़राथ।।

डंडूरची छि मवाऽल्य्, त्रुक्यव थाऽव्य् पुरिथ आऽल्य्।
द्वह रावुॅरान अतराफ़, थकान गऽयुॅ तुॅ सपुॅज़ राथ।।

'वीरस' छु अकोय पाफ, प्रथ शायि यछान ताफ।
कोंकूॅत्य् तिथ्य् अशराफ छतान गऽयुॅ तुॅ सपुॅज़ राथ।।

(4 अप्रेल, 1987)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(12)

1. दिन भर आकाश साफ़ न हुआ, थोड़ी देर के बाद ही रात हो गई। सूर्य के अस्ताचल होने से थोड़ी देर पूर्व धूप दिखाई दी, परन्तु थोड़ी सी किरण आ पड़ी ही थी कि रात हो गई।

2. याद दिलाने वाली अंगूठी तो शकुंतला[1] ने अपने हाथ में पहन रखी थी। परन्तु प्यासे हाथ को ऐसा शाप लगा कि वह भुलाई गई और रात हुई।

3. स्वप्न कहां पूरे हुए। हम तो केवल पानी का ही मन्थन करने में लगे रहे तथा थक चूर कर फिर डलवान ज़मीन पर लेटे पड़े रहे। नींद आई तो रात हो गई।

4. गडरियों को तो सारे वन, चरागाह मालूम ही हैं। भेड़ों के रेवड़ काल कोठरियों में भरे पड़े हैं। उनके शरीरों से ऊन काट लिये जाने पर भी उन्हें मारे जाने का भय रहता है। जन्मकाल से ही उनकी रात बनी रहती है।

5. बस्ती तो नींद में बेहोश जैसी पड़ी है। यदि अता-पता पूछें तो किससे पूंछें। दीवारें ही दीवारें 'काफ'[2] नामक पर्वत की भांति ऊंची बनाई गई है। सब लोग अपने मकानों की खिड़कियों की दरारें तक बंद कर के बैठे हैं कि कहीं किसी की नज़र न पड़े। अतः रात आन पड़ी।

6. डिंडोरची, मवाली[3] तथा चालाक लोगों ने तो अपने-अपने घोंसलों घरों को धीरे-धीरे भर कर रख दिया। मूर्ख लोग तो व्यर्थ में अपना ही समय नष्ट करते हैं। फिर रात होती है।

7. 'वीर' को तो एक ही पाप चढ़ा है कि वह प्रत्येक स्थान पर धूप ही धूप चाहता है। परन्तु उस जैसे कितने ही लोगों के बाल सफ़ेद हुए[4] तथा रात हुई।

(4 अप्रेल, 1987)

---

1. दुष्यंत से दी गई अंगूठी शापवश अपना प्रभाव खो चुकी (शंकुतला नाटक)। 2. एक प्रसिद्ध पर्वत। 3. लफंगा, गुंडा। 4. बूढ़े हुए।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(13)

फ्वलान छुख वुछित रे'वायती हसीन काँह।
मे' हा दो'प चे़' मा बनाऽवुँथ मशीन काँह।

र्वबस द्वहय छऱ्यव अथव पो'रुथ हमुद तुँ बस।
नबस अंदर लऽबुँथ नुँ राऽवमुँच़ ज़मीन काँह।।

कन्यन करान म्वन्युँ तुँ हाय चोन एतिकाद।
जने'न ज़न्यन नुँ कांऽसि काऽसि प्यठ यकीन काँह।।

यि दफ़तरी हु नौकरी तुँ नफ़चुँ कारोबार।
न रुद माहरोय(2) कांह न माहजबीन(3) काँह।।

छु पीरुँ वारि क्युत यि बीरुँ खेलि हूंद सवाल।
पटाखुँ करतुँ सर अगर चे़' दरुँम दीन काँह।।

यि क्युथ वहम यि क्युथ गुमान तुँ यसलुँ अकलि खश।
नच़ान सरफ़ तुँ नाग युथ वज़ान छे' बीन काँह।।

हवा न नब न ख्वश्क व तर न ज़ोर व ज़र छु चोन।
गरस अंदर ति 'वीरुँ' चुँइ पनाह गुज़ीन काँह।।

(3 अप्रैल, 1987)

1. चांद जैसा चेहरा (सुंदर युवती)। 2. चांद जैसे माथे वाला प्रियतम।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(13)

1. आप तो परम्परागत सुंदर युवतियों को देख-देखकर फूले नहीं समाते हो। मैंने समझा था कि आपने कोई 'मशीन' बनाई होगी अर्थात् आविष्कार किया होगा।

2. आपने केवल खाली हाथ ऊपर आकाश की ओर उठाकर 'हमुद'(1) अर्थात् ईश्वर के प्रति धन्यवाद ही पढ़ना सीख लिया है। परन्तु अंतरिक्ष में गुम हुई किसी पृथ्वी के ग्रह को नहीं ढूँढ निकाल सका।

3. हाय! क्या यही आपकी श्रद्धा है कि आप पत्थरों को चूमते रहते हो। इधर हाल यह है कि किसी पुरुष या स्त्री को एक दूसरे पर विश्वास ही नहीं रहा है।

4. दफ़तरीपन, नौकरी तथा पेट के व्यवसाय के कारण न तो कोई चाँद जैसा मुखड़ा ही रहा तथा न कोई यौवनयुक्त सुन्दर चेहरा ही।

5. ऋषियों तथा पीरों की भूमि (काश्मीर) में तो अब क्रिकेट गेंद की खेल का सवाल है। यदि आपका भी कोई धर्म या 'दीन' है तो (भारत पाक) किसी भी देश की जीत हार पर पटाखे बम गोले सर कर लो।(2)

6. यह कैसा अंधविश्वास और कैसा भ्रम है। प्रायः बुद्धिमानी का गला घोंटा जाता है। जब भी कोई बीन बज उठती है तो नाग तथा सर्प नाचने लगते हैं।

7. 'वीर'! हवा, आकाश, पृथ्वी तथा सागर कोई भी आपका नहीं बन सका। आप तो अपने ही घर में कोई पनाहगुज़ीन (आश्रित) से बने हुए हो।

(3 अप्रैल, 1977)

---

1. ईश्वर की कृतज्ञता दिखाना। 2. कुछ समय से फैशन सा बना था कि क्रिकेट खेल की जीत हार पर गली कूचों में बम पटाखे सर किये जाते थे। यहीं से आतंकवाद की नींव पड़ी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(14)

युस ति बन्योम यार को'रुन प्यार-अपुज़।
यसलुॅ ड्यकन पो'र मे' इश्तिहार-अपुज़।।

सोंतुॅ काऽल्य् करतुॅ खार खार कचुल।
हरदुॅ काऽल्य् वनतुॅ करदु गार-अपुज़।।

कुस ति वुछुम द्रसुॅ नुॅ दिवान द्रसि नुॅ खसान।
क्वस नुॅ थ्यकान छस बुॅ गुर्य् सवार-अपुज़।।

'या ख्वदा' कर्योम दितुथ बर तुॅ थ्यो'कुथ।
'बा ख्वदा' छि अ'स्य् ति बागुज़ार-अपुज़।।

करतुॅ न्यबर निब चुॅ पनुॅन्य् लाग व्वपर।
वनतुॅ कलम म्योन छु तलवार-अपुज़।।

सीरुॅ कथन ठरि चे' थो'वुथ पीर्य् वो'तुर।
संगतराशुॅ गर मुॅ मरगुज़ार-अपुज़।।

नोकरियन वालुॅ वाशुॅ पाऽज़ फसान।
च़ाटुॅ हालुॅ द्राव गाटुॅ जार-अपुज़।।

छुय यिवान शराबुॅ मुशुक गज़लुॅ कथन।
'वीरुॅ' छुख पज़ी चुॅ ग्वनाहगार-अपुज़।।

(17 दिसम्बर, 1979)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(14)

1. जो भी मेरा मित्र बना, उसने प्यार तो किया परन्तु झूठा। प्राय: माथों पर से मैंने विज्ञप्तियां (अर्थात् इश्तिहार) पढ़ी परन्तु सब झूठी।

2. रे कृषक! बसंत ऋतु में बीज बोने के समय आप उपज बड़ाने के बड़े-बड़े दावे करते रहते हो परन्तु जब फ़सल काटने का समय आता है तो फिर प्रारब्ध या ईश्वर की ही रट लगाते रहते हो। यह तेरा विश्वास भी झूठा ही है।

3. किस पुरुष को मैंने अपने बड़प्पन की डींगें मारते न देखा और कौन नहीं दूसरे व्यक्ति को घोड़े पर सवार देखकर स्वयं दीवार पर चढ़ता है यह भी झूठा है। कौन सी स्त्री अपने को अच्छा घुड़सवार नहीं कहती। परन्तु सब झूठ।

4. 'या खुदा' कहके मैंने भीख मांगी। आपने दरवाज़ा बंद कर दिया। उस पर ईश्वर की शपथ लेकर कहा कि हम धनवान हैं। परन्तु यह सब झूठ है।

5. अपने कलम की निब बाहर निकालकर पराई निब लगाकर फिर कह्ते हो कि मेरा कलम तलवार है– परन्तु यह सब झूठ।

6. रहस्य की बातों को तूने अपनी वंशावली के परदे में छिपाकर रख दिया है। हे मूर्तिकार! पत्थरों का यह मज़ार[1] (बुतखाना) बनाकर मत रख। यह झूठा है।

7. नौकरियों के जाल में कैसे-कैसे राजहंस फंस जाते हैं। पाठशालाओं में से झूठी बुद्धिमत्ता प्रकट हुई है।

8. आपकी 'ग़ज़ल' जैसी बातों में से शराब की सी गन्ध आती है। हे 'वीर'! आप तो कहीं सचमुच में ही पापी शराबी नहीं तो हो। जो कि सब झूठ है।

(17 दिसम्बर, 1977)

1. कब्रिस्तान।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(15)

यांतुॅ पनुॅन्य् छम नज़रुॅय बदल बदल।
नतुॅ छख सासन मंज़ चुॅय बदल बदल।।

छावुॅन्य् नारुॅव्य् पोश तुॅ नारुॅन्य् छ़ठ।
म्याऽनिस लाऽनिस सोंथुॅय बदल बदल।।

कुल आलम बरहान यथ वाऽलिंज़ि मंज।
ग्वनमाऽत्य् दिलस दरदुॅय बदल बदल।।

पानय तुजमुॅच़ नऽव्य् छम पननी लाश।
चाऽनी लय पननी दुॅय बदल बदल।।

वुठ त्रपराऽविथ बाऽवुॅथ नज़रव कथ।
हाऽवुॅथ ज़न म्याऽनी द्रुॅय बदल बदल।।

तिहरिस तिहरिस ज़ायम नऽव्य् नऽव्य् शाख़।
मऽंज़िलस वाऽतिथ मऽंज़िलुॅय बदल बदल।।

सरहम मोमुॅव्य् पान तुॅ मोमुॅव नस।
ब्ये'बि छुख फऽर्य् वुशनेरुॅय बदल बदल।।

यिम यिम आयि तुॅ रुॅख रुॅख दिथ तिम द्राय।
'वीरस' तोति छि अथुॅ ज़ुॅय बदल बदल।।

(1 जनवरी, 1976)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(15)

1. या तो मुझे अपनी ही नज़र और प्रकार की है या तुम ही सहस्त्रों में विरल हो।

2. मुझे अपना शरीर सजाने के लिए आग के ही फूल रखे गए हैं तथा हवा भी आग ही है। इस प्रकार मेरे भाग्य में दूसरे ही प्रकार की बसंत ऋतु लिखी हुई है।

3. चाहता हूँ कि सारा संसार अपने हृदय में भर दूँ। मेरे इस कवि हृदय में पीड़ा ही दूसरे प्रकार की है।

4. मैंने तो स्वयं ही अपना शव कांधे पर उठाया है। मुझे तो आपका प्रेम भी विचित्र ही है तथा अपने आप की अप्रियता भी कुछ दूसरे ही प्रकार की है।

5. आपने होंटों को बंद करके अर्थात् चुप्पी साधकर, नज़रों से ही दिल की वास्तविक बात बता दी। मानो आपने और ही प्रकार से मेरी शपथ ली।

6. वृक्ष की प्रत्येक टहनी की चोटी पर नई-नई शाखें पैदा हुईं। चर्म सीमाओं अर्थात् ध्येय तक पहुँच-पहुँचकर भी मेरे लिए नई-नई चर्म सीमाएं दूसरे ही रूपों तथा दूरियों के साथ दीख पड़ीं।

7. सारे शरीर मोम के बने हुए हैं तथा उनके चेहरों पर नाक भी मोम की ही बनी हुई हैं। उनकी कोख[1] में शारीरिक उष्णता भी दूसरे ही प्रकार की है।

8. जो भी आए[2] उन्होंने मेरे दो हाथों पर रेखाएँ खींच ली तथा चले गये। परन्तु 'वीर' के दोनों हाथ फिर भी और ही प्रकार के हैं अर्थात् निर्विकार रहे।

(1 जनवरी, 1976)

---

1. कोख = यहां कपड़ों तथा पेट के बीच की जगह 'ब्यब' कहलाती है। अंदर की ओर गोद।
2. जन्मे या मेरे जीवन में आए। सम्बंधी बने। प्रेम किया।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(16)

चुॅ सरहमन फिर शराब साक़ी तुॅ थाव ब्रोंह कनि छो'रुय मे' प्याला।
मे' आसि हसरथ दिलस तुॅ दुनिया मे' त्रावि ठाह ठाह असन खंगाला।।

बज़म बऽरिथ मस चवन तुॅ चावन, छि ज़िंदुॅगी हुंद लुतुफ़ वुडावन।
मगर बुॅ मोयूस गेन्युॅ ड्यकुॅ ह्यथ, छु म्यानि लसनुक कऽमिस खयाला।।

दिहम नुॅ म्वहलथ दिहम नुॅ र्‌वखसथ, न ज़ांह लग्यम छ्‌यन मे' इतिंज़ारस।
छि आवलुॅन्य् सुॅय मे' नाव लऽजमुॅच़, बठी बिहिथ वुछतुॅ म्योन हाला।।

र्‌वखन मे' व्वशलुन छु प्यालि हुंद ह्यू व्वशव तमव सूॅत्य् टाऽर्‌य् नम छिम।
छे'किथ छु शबनम गवलाब रोयस, यऽहय छे' चनुॅ वाऽल्य् सुंज़ मिसाला।।

छु जूनि तामथ यि दाग़ रो'ट मुत, ज़रुॅद गऽमुॅच़ अमि शरय छे' साकी।
दज़ान छु हन हन सु खूनि दिल चथ, छु दाग़ ह्यथ प्यठ वछस ग्वलाला।।

युसुय मे' कित्य् ज़हरुॅ दाम अथि ह्यथ, मंगान हयातुक बुॅ दाम तऽस्य् छुस।।
ज़मानुॅ अकि प्यठुॅ मे' युस छु दुश्मन, मे' जुव पनुन को'र तऽमिस हवाला।।

अगर मे' निश ठहरुॅ हख रछा अख़, बे' वायुॅ प्रुॅछुॅ हय कथा बुॅ साकी।
ज़ि म्यानि चनुॅ पेंचवारि चान्यन नट्यन तुॅ नार्‌यन यिया ज़वाला।।

खबर चुॅ ज़ानख ति हक तुॅ नाहक, खबर चुॅ मा रायि बाऽगरावान।
ग्वनाह छु चाऽनिस हकूमतस मंज़, वनुन जवाबा प्रुॅछुन सवाला।।

छु सोज़ुॅ साज़ा बहानुॅ बापथ, दिलुॅक्य् छु सऽन्य् सीर 'वीर' बावान।
अऽदुॅर्‌य् अऽदुॅर्‌य् सु छु पुच़ान पनुन वछ, न्यऽबुॅर्‌य् वनान छिस छु रुत गज़ाला।।

(2 दिसम्बर, 1967)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(16)

1. हे साक़ी[1]! तुम तो सबों के सामने शराब के प्याले भर कर रख दो तथा मेरे आगे खाली प्याली ही रख। तकि मेरे दिल में हसरत[2] अर्थात् मायूसी रहे तथा सारा संसार ज़ोर ज़ोर से मुझ पर कहकहा लगाए।

2. महफ़िल[3] तो खचाखच भरी है। सब मदिरा पीते-पिलाते हैं तथा जीवन का आनन्द लेते हैं। केवल मैं ही हताश सिलवटों से भरा माथा लेकर बैठा हूं। मेरे जीने का ग़म किसको है?

3. एक तो न तुम मुझे अपना वचन निभाने के लिए समय दोगे तथा न ही मुझे विदा ही करोगे। इस पर मुझे प्रतीक्षा करने का भी कोई अंत नहीं। मेरी नाव (किश्ती) तो भंवर में फंस चुकी है। तुम तो केवल किनारे पर बैठकर मेरा तमाशा देखते रहते हो।

4. मेरे गालों की लाली शराब की प्याली जैसी है। दीर्घ श्वासों तथा रुक-रुक कर सांस लेने से मेरे नेत्रों में आँसू भरे रहते हैं। गुलाब जैसे चेहरे पर शबनम जैसा पसीना फैला हुआ है। ऐसे ही चिन्ह पीने वाले के भी होते हैं।

5. चन्द्रमा को भी यही काला दाग़ छाती पर अंकित है। तथा इसी परेशानी से उसके चेहरे का रंग भी पीला पड़ गया है। 'लाला'[4] नाम के फूल की बूटि-बूटि भी इस प्रेमातप से जलती रहती है। तभी तो उसकी छाती पर काला दाग है।

6. जो मेरे लिए हाथों में विष के प्याले लेकर बैठा है उसी से मैं आयु बढ़ाने वाली दवाई मांगता हूँ। ज़ो युगों-युगों से मेरा शत्रु है मैंने उसी को अपना जीवन समर्पित किया है।

7. यदि तुम मेरे पास पलभर भी ठहरते तो मैं निर्भीक होकर तुमसे एक बात पूछ लेता कि आधे अखरोट[5] के सूखे खोल से बनी छोटी प्यालियों द्वारा मेरे पीने से क्या तुम्हारे मटके तथा मटकियां खाली हो जाएंगी?

8. पता नहीं तुमको हक़[6] तथा नाहक़ की पहचान भी है या नहीं। क्या पता कि तुम अपना पराया समझकर दुई के भाव से मदिरा बांटते होंगे। तुम्हारी सरकार में प्रश्न पूछना भी पाप है तथा उत्तर देना भी पाप है।

9. साज़ व संगीत तो बहाने के लिए है। वास्तव में 'वीर' दिल के गहरे रहस्य प्रकट करता है। अन्दर-अन्दर से वह अपनी छाती नोचता रहता है और बाहर से उसे तो अच्छा ग़ज़ल रचायिता कवि कहते हैं।

(2 दिसम्बर, 1967)

---

1. शराब पिलाने वाला। 2. दुःख, हताशा। 3. सभा, मजलिस। 4. कश्मीर का एक प्रसिद्ध फूल जो खेतों तथा पहाड़ी क्षेत्रों में खिलता है। यह लाल रंग का होता है। बीच में काला दाग होता है। 5. कश्मीर में जब सूखे अखरोटों से गिरी निकाली जाती है तो खाली आधे खोल को 'पींट' बोलते हैं। 6. ठीक, नाठीक, हलाल, हराम।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(17)

मे' ताऽरॅय दिच़ नुॅ ये'म्य् तम्बलावनस केंह।
कऽमी क्या कऽर तऽमी ठऽऱ्य् थावनस केंह।।

यि चुॅय बे माऽल ओसुख शीशुॅ वऽस्य् प्यव।
मे' नतुॅ गलती गऽया पिलनावनस केंह।।

छि केंह छ़ऽऱ्य् केंह स्वम्बुरमुत बाऽगरावान।
छि केंह मस्तानुॅ लऽग्य् स्वम्बरावनस केंह।।

ज़ऽमिस्तानस ति नय शहल्योव युस दिल।
सु कथ प्यठ प्रारि हारस श्रावनस केंह।।

दिलुॅक्य् पन सोंतुॅ वाऽटिम पो'ह्य् कुल्युक़ पन।
चे' मा परुॅ थोवथम परुॅ पावनस केंह।।

खबर लोलुॅय छुमा वोलान नतुॅ ज़न।
कमी मा छय चे' हुसनस यावनस केंह।।

ह्यकय लऽहज़स अऽकिस यो'दक्य वुछिथ रोय।
लग्यम मा चोन दिल परखावनस केंह।।

यि ज़न थफ़ थुस दिवान गो'ल खंड चवान छुस।
थो'वुथ क्या परुॅ मे' नतुॅ परुॅ पावनस केंह।।

फिरुॅन्य् बाऽगर थुरुॅन्य् छिम बाऽथ पननी।
चे' छुय अदुॅ तोति करनस क्रावनस केंह।।

छु 'वीरस' नाज़ कथ दिल क्यन वुल्यन प्यठ।
छि लऽग्य् मित्य् बे'यि ति तस हिव्य् तावनस केंह।।

(31 दिसम्बर, 1969)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(17)

1. जिसने मुझे अपने पर मोहित करने में ज़रा भर भी देर न कर दी उसने फिर परदा रखने में भी अर्थात् बीच की बाधाएं खड़ा करने में भी कौन सी कमी शेष रखी।

2. तुम ही तो अनिच्छुक अर्थात् न चाहने वाले थे जिस कारण बोतल (शीशी) गिर पड़ी। वरन् तो वह पेश करने में मैंने कौन सी ग़लती की थी।

3. कुछ लोग तो खोखले अर्थात् निर्धन हैं। कुछ संचित किया हुआ (धन) बांटते हैं, कुछ मस्त मलंग (निश्चिंत) हैं तथा कुछ लोग केवल धन बटोरने में लगे हुए हैं।

4. जो हृदय हेमन्त ऋतु में भी शीतल न हो सका वह किसलिए अब आषाढ़ तथा सावन मास की प्रतीक्षा करे।

5. दिल के धागों को मैंने पोष मास के गिरते पत्तों सदृश्य मानों बसन्त ऋतु के आने पर पुनः शाखाओं के साथ जोड़ रखे थे परन्तु तुमने तो उनको गिराने में कौन सी कमी की।

6. पता नहीं यह प्रेम ही तो कहीं न हो जो मुझे पागल बना के अनाप-शनाप कहलवाता है। वरन् तो तुम्हारी सुंदरता तथा जवानी में भी कौन सी कमी आई है।

7. यदि मैं तुम्हारा मुखड़ा पल भर के लिए भी देख सकूँ तो तुम्हारा दिल परखने समझने में मुझे कुछ भी समय नहीं लगेगा।

8. यूं तो मैं इधर-उधर हाथ पांव मारकर घूँट भर प्राप्त करके पीता ही हूं वरन् तो तुमने मुझे कमी करके वंचित करने में कौन सी कसर शेष रखी।

9. मुझे तो अपने गीत ही गुनगुनाते रहने से सहारा मिलता है। तुमको तो फिर भी करने को कुछ न कुछ कार्य है ही।

10. 'वीर' को ही अपने दिल के सुराखों पर क्यों नाज़[1] है। और भी तो कितने ही प्रेमी उसकी तरह इन कष्टों को झेलते रहते हैं।

(31 दिसम्बर, 1969)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1. गर्व।

(18)

बून्या दऽदराऽव बदनुँक्य् नारन।
लज़था बऽल्य् लो'ग दल्य् शहजारन।।

चाऽनी ख्वरुँ फऽल्य् माऽज़े रऽंग्य्मित्य्।
म्याऽनी तलुँपऽत्य खे'युँ ज़ंगारन।।

टठुँवानव खेऽयि ज़ऽट पऽट म्याऽनी।
नठ छम क्या वनुँ ज़ोरावारन।।

सतुँ रे'श्य् त्ये'लि आऽस्य् फ़ाकुँ तुँ फुकरय।
बतुँ बो'छ्य् अज़कल कनि फऽल्य् कारन।।

यस गऽयुँ म्ये'चि़ म्वठ मुफ़लिस हवसन।
क्या करि ललुँ खुलुँ व्वज़्म्यन द्यारन।।

कुन्य् सुँय फयो'र फयो'र लगि हुरि दवि दो'व।
'वीरस' शुन्य् छिनुँ ज़ंरबन प्रारन।।

(11 दिसम्बर, 1970)

टुख :

तेज़ परव

कारवान् यिनुँ ब्रोंठ नेरी पथ गछ़ख पख तेज़ पख।
दूर छुय मऽंज़िल अवय छ़ंड सास क्रूह शाहपाऽज़ पख।।

लोरि ज़ोरन नेरि क्या दऽरराव को'ठ्य् थव 'वीरुँ' दिल।
प्यथ पथर व्वथ तोप पख या तीर पख आहरेज़ पख।।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(18)

1. चिनार के वृक्ष को पेट की अग्नि ने ही जलाकर खोखला किया है। हमें तो यूँ ही उसके दामन अर्थात् पत्तों की ठंडक आनंदित करती रही।

2. आपके लघु आकार चरण मेहंदी से रंगे हुए हैं और मेरे तलवे तो ज़ंग ने काट खाए हैं।

3. कपड़े धोने वाले ओखलों[1] ने मेरे चीथेड़े तक चाट खाए। 'बलवानों का क्या कहें?' यह सोचकर मेरे भयबीत शरीर में कंपन है।

4. प्राचीनकाल में सप्त ऋषि भूखे प्यासे रहकर भी निर्वाह करते थे। आजकल तो चावल के भूखे पत्थर भी उबालते रहते हैं।

5. जिसकी दरिद्र कामनाएँ मिट्टी हो गईं वह उधार के पैसों से कौन सी मौज़ मस्ती मनाएगा।

6. अंक 'एक' को शून्य[2] जोड़ने से दस-दस गुना मूल्य बढ़ता है। परन्तु 'वीर' का शून्य् गुना करने अथवा ज़रब देने की प्रतीक्षा नहीं करता है।

(11 दिसम्बर, 1970)

रुबाई :

तेज़ चलो

कहीं आपका यात्री दल आगे न निकल जाये और आप पीछे रहोगे। अत: चलो, तेज चलो। अभी आपके पहुंचने का स्थान[4] दूर है। सहस्त्रों कोस फांदकर राजहंस की भांति आगे बढ़ो।

लाठी टेकते कब तक रहोगे। अपनी टांगों से काम ले लो। 'वीर' का जैसा हृदय रख। गिर-गिरकर उठो तथा तोप, तीर या गोली की भांति आगे बढ़ो।

---

1. कश्मीर में नदियों के किनारों पर लकड़ी या पत्थर का बड़ा ओखल होता है। कपड़े उसमें डालकर पाँव से दबाकर धोए जाते हैं। 2. शून्य = Zero (0) यदि एक को शून्य जोड़ें तो 10,100,1000.... बनता है। 3. जरब = X (गुनी)। 1. मंज़िल, ध्येय।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(19)

म्यानि निशुॅ छा लालुॅ गोमुत बालुॅ बुज़्य् फ़रहाद कांह।
म्यानि निशुॅ छा ज़्यादुॅ गोमुत सादुॅ दिल बरबाद कांह।

द्रहलि लऽजमुॅच़ जून चऽश्मन, जूनुॅ राऽच़न इंतिज़ार।
प्रानि ज़न्मुक क्या सना खो'तमुत मे' छा अपराद कांह।।

जलवुॅ नूरुॅकि सूर्य् नय गव, पूरुॅ क्वह गव आब आब।
वरनुॅ ओसा बेबुजुख दिल म्योन ह्यू फौलाद कांह।।

चानि म्वखुॅ मूदुस यि ज़न ये'ति वरनुॅ मरनस छा मऽहल।
मरनुॅ मरनुय वरनुॅ मरनस छा म्वकुल आज़ाद कांह।।

स्वख द्रखन राऽच़न द्रहन ग़मखार चऽश्मय यार दोस्त।
काऽयनातस मंज़ अऽछन ह्यू बे'यि ति छा ईजाद कांह।।

छुस बरान बाऽसिस बुॅ दफ़तर डेंशुॅ हथ यो'द बावुॅ हय।
मोकुॅ विज़ि मशरब गछ़ान छुम कथ प्यवान छा याद कांह।।

वुछ 'ग्वलालो' जूनि हुंद वाऽरान प्योमुत आऽनुॅ खान।
दाग़ रटि हर कांह सु दिल यथ मंज़ नुॅ गव आबाद कांह।।

बुथ्य् परस्तव बुत परस्तस वुछतुॅ किथुॅ ईमान ओ'न।
दोद छुस इनसानुॅ सुंद नतुॅ 'वीर' छा व्वस्ताद कांह।।

(17 मई, 1970)

1. कश्मीर में पर्वतीय क्षेत्र में तथा बागों में खिलने वाला एक लाल रंग का पुष्प जिस के बीच पत्ते में काला दाग़ होता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(19)

1. क्या मुझ जैसा गुलि लाला (पुष्प) भी कोई पवर्तों की भेंट चढ़ा है। क्या मेरे जैसा सीधा सादा दिल भी कहीं कोई मेरे से ज़्यादा उजड़ा हुआ है।

2. दिन को ही मेरे नेत्रों पर अंधकार की परत चढ़ी है। तथा चांदनी रातों को प्रतीक्षा करते-करते मेरी दृष्टि क्षीन हो गई है। कहीं पुराने जन्मों में मुझसे कोई अपराध तो नहीं हुआ हो?

3. यद्यपि ईश्वरीय प्रकाश की किरण पड़ने से (तूर नामक) पर्वत[1] भस्म न हुआ फिर भी पूर्ण रूप से पानी-पानी हो गया अर्थात् पसीज गया। वरन् तो मेरा वह मासूम (अनभिज्ञ) हृदय फौलाद जैसा कठोर था जो कि पिघल गया।

4. यह तो मैं ही हूँ जो तेरे लिए मरता गया वरन् किसको मरने की फ़ुरसत है। वैसे एक न एक दिन तो मरना ही होता है परन्तु न कोई मरने के लिए तैयार है और न आज़ाद।

5. सुख-दुःख तथा रात-दिन में अपने नेत्र ही दुःख निवारक तथा प्रिय मित्र हैं (जोकि रो-रोकर मन हलका करते हैं)। इस सारे ब्रह्मांड में क्या नेत्रों के समान भी कोई आविष्कार है?

6. मैं तो पूरी तैयारी करके अपने सीने में दफ़तरों के दुफ़तर भर देता हूँ ताकि जब भी तुझे देख लूँ तो सारा कुछ कह डालूँ। परन्तु जब तुम मेरे समक्ष आते हो तो सब कुछ भूल जाता हूँ और कहने के लिए कोई भी बात याद नहीं आती।

7. हे 'गुलाल'[1] नामक पुष्प! चांद का वीरान पड़ा हुआ शीशमहल भी तो देख। वैसे तो प्रत्येक उस दिल पर घावों के निशान पड़ सकते हैं जिसमें कोई भी नहीं बस गया हो।

8. देखो चेहरों को पूजने वाले किस प्रकार मूर्ति-पूजक (प्रेमी) पर विश्वास कर बैठे क्योंकि इस 'वीर' के दिल में इनसान के लिए दर्द है वरन् तो वह कोई उस्ताद नहीं है।

(17 मई, 1970)

1. 'तूर' नामक पर्वत पर 'नूर' (ईश्वरीय प्रकाश) की किरण पड़ने से वह पर्वत भस्म हुआ था, ऐसा कहा जाता है। 2. कश्मीर का लाल फूल जिसके पत्तों पर काला दाग होता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(20)

पऽतिम पऽहरन च़्यतस पोवुम पनुन हाल।
कंड्यव त्राव्योस यलुॅ पोशव च़ो'टुम नाल।।

छे' अपजुॅय माय दिल दिलबर ति नकली।
बुथ्यन थावान जऽरिथ योरय सियाह खाल।।

बऽरिथ थो'व ज़ीरुॅबम साज़न अंदर बंद।
कऽरिथ थऽव ज़िंदुॅगी प्रथ हालुॅ पामाल।।

व्यछ़य वक्तुॅच सऽचुॅय सऽच़ सिफ़रि सिफ़रय।
यिछ़य गरि च़िह्य् यिथी यिथ्य् माह तय साल।।

हमाकत माऽंचुॅ मो'र तख़लीक़ सपद्यव।
अऽकिस पंजरस अंदर बीठ्य् सास जंजाल।।

मरुन ओसुय मऽरिथ सूरा ज़्यनुॅच कल।
न्यऽदुॅरि वक्तन ति फ़ो'र अऽद्री य'दुॅरज़ाल।।

वछस मंज़ दरदे दिल अटबारि दुनिया।
छु 'वीरस' बारि खो'तमुत पीर पाँच़ाल।।

(17 जुलाई, 1991)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(20)

1. रात के पिछले पहर में मैंने अपना सारा हाल याद किया। कि किस प्रकार काँटों ने मुझे छोड़ दिया परन्तु फूलों ने मेरे वस्त्रों के गले[1] को ही फाड़ डाला।

2. आजकल तो प्यार भी झूठा होता है। दिल तथा दिलबर[2] भी नकली हैं जोकि युवतियां अपने गालों पर काले चिन्ह मढ़ लेती हैं।

3. हमने लय तथा ताल को साज़ों के अंदर बंद करके रख दिया है। इसी प्रकार हमने जीवन को हर प्रकार से पाबंध (परतन्त्र) बना रखा है।

4. समय की कमी है, आकाक्षाएँ अनंत है और परिणाम शून्य ही होता है। अर्थात् कुछ हाथ नहीं लगता है। ऐसी ही घड़ियां, ऐसे पल महीने तथा वर्ष इसी प्रकार बीतते चले जाते हैं।

5. यह कैसी बिडम्बना है कि मनुष्य का शरीर तो बनाया गया परन्तु इस एक ही घर में हज़ारों जंजाल[3] घर कर गए।

6. मरना तो था ही। परन्तु मरकर भी सदा जीते रहने की इच्छा कब समाप्त हुई। नींद के दौरान भी हमें अंदर से जादुई इन्द्रजाल[4] लूटता रहता है।

7. हृदय में प्रेम की पीड़ा है तथा सारे संसार की चिंता पीठ पर उठाया हुआ है। 'वीर' को तो 'पीर पंचाल'[5] पर्वत का सा बोझ दबोच रहा है।

(17 जुलाई, 1991)

---

1. गिरेबान। 2. प्रेमी। 3. परेशानियां, कष्टों के समूह। 4. एक प्रकार का जादू टोना। 5. कश्मीर का एक ऊंचा पर्वत।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वच़न

(1)

पसी वनुँ वऽछ़खय कुन्य् ज़ऽन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये नचि़ नाऽगिन्य्ये।
्वपुँ सीनस डखि थाऽविथ कऽन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

रबतुँ जूगिस छख जोलि अंदर, वीगिस प्यठ या र्‌वन्युँ डोलि अंदर।
क़स माऽंज़ि मऽतिस किच़ माहरिन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

रसुँ वस हुँकुँ पख पाँ डलसुँयकुन, ह्यनुँ आयख ग्रटुँबलुँ छलसुँय कुन।
ुछुँ फिरवान वक्तुँच गिरकिन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

वावान चुँ मो'दुर मस अमर्‌यत ज़न, रावान तुँ करान छख पागल मन।
ज़ावान विह त्रहरान सऽर्‌य्पिन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

मऽज़िल छुय ज़्यूठ तुँ क्रूठ सफ़र, पाहुँ अऽन्य्मित्य् च़ऽल्यये बाऽच़ नफ़र।
गरुँ मंज़य कऽरहख परुँ छे'न्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

डल किस तूनिस फल च़ऽद्र हलान, या जूनि छु पम्पोश नाफुँ मलान।
नतुँ हऽस्य् कर छख नाऽल्य् गरदुँन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

आकाशुँ वऽछुँख, पातालुँ खऽचुँख, मनि मंज़ 'वीरस' पृथ हालुँ गऽछुँख।
म्याऽनी किन्य् पख म्याऽनी किन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये, नचि़ नाऽगिन्य्ये।।

(20 अगस्त, 1987)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वचन (गीत)

(1)

1. तपोवन से अकेली नीचे उतरी हो। हे नागिन[1] तुम नाचो, नाचो। चाँदी के जैसे चमकते हुए वक्षस्थल क़े साथ पत्थर का सहारा रखकर नाचो, खूब नाचो।

2. पर्वत रूपी योगी की थैली में तुम इस प्रकार हो जैसे योगचक्र[2] पर दुल्हन या जैसे छोटी-छोटी घंटिकाओं की मालाओं से सुसज्जित डोली में क्या पता किस मतवाले प्रेमी वर के लिए वधु जैसी रखी गई हो। नाचते जाओ।

3. पर्वतीय क्षेत्र से ज़रा धीरे-धीरे उतरते जाओ। तत्पश्चात् वेग के साथ 'जलमय' डलझील की ओर बढ़ चलो। परन्तु चलते-चलते बीच रास्ते में ही तुम पनचक्की[3] के निचले चक्र के साथ उलझकर रह गई हो। तुम ही तो मानो समयचक्र जल्दी-जल्दी घुमाती रहती हो। नाचो, और नाचो।

4. तुम तो अमृत जैसा मीठा रस पिलाती हो, जब भी मिलती हो। परन्तु जब छिप जाती हो अर्थात् धरातल की ओर चली जाती हो तो हमारा मन पागल हो जाता है अर्थात् तरस्ता है तुम तो ऐसे मायावी रूप दिखाती हो कि सर्पिनिआं भी त्रास खाती हैं। अत: नाचो, नागिन नाचो'।

5. तुम्हारा ध्येय (लक्ष)[4] बहुत दूर है तथा यात्रा कठिन है। उधार लाए हुए तुम्हारे घर के संगी-साथी[5] तुझे छोड़कर भाग गए। और तुझे घर में अकेले तथा पर कटी बनाकर छोड़ दिया। अब नाचो, रे नागिन! नाचो।

6. 'डल' झील[6] की नाभि (केन्द्र) पर तुम मानो पूर्ण चन्द्रमा की भांति **डोल रही** हो अर्थात् हिल रही हो। या चन्द्रमा के शरीर को कमल पुष्प कस्तूरी (नाफ़ा) मल रहा है। या तुम हाथी के कर (सूंड)[7] की भांति टेढ़े आकार में गले का हार (माला) बनी हो। नाचो, नागिन नाचो।

7. तुम तो गंगा की भांति आकाश से नीचे पृथ्वी पर उतरी हो तथा पाताल लोक से उमड़ कर पुन: ऊपर आई हो। 'वीर' तुझे प्रत्येक स्थिति में मन से चाहता है। मेरी इच्छा यही है कि तुम सदा ही मेरे पास से ही बहती रहो। हे नागिन! नाचो, नाचो !![8] **(20 अगस्त, 1987)**

---

1. झरना, सांप, छोटा चश्मा, कुंडलिनी, योग क्रिया। 2. कश्मीरी 'व्यूग', चूना, आटा या रंगों से बनाया हुआ भूमि पर एक गोलाकार चक्र जो वर वधू के मिलने का प्रथम स्थान (योग) होता है। 3. 'ग्राट', पनचक्की के नीचे एक लकड़ी का बना हुआ चरखा सा होता है जो पानी से घूमता है तथा चक्की को घुमाता है। 4. समुद्र। 5. इन्द्रियाँ इत्यादि विषय। 6. कश्मीर की एक प्रसिद्ध 'झील' जिसमें चाँदनी रात का दृश्य तथा पुष्प 'कमल' आकर्षक होते हैं। 7. गणपति की सूंढ, सुषम्ना नाडी। 8. इस सारे गीत में योगिक प्रक्रिया की चर्चा है तथा इसमें प्रयुक्त शब्दावली में भी पारमार्थिक अर्थ निहित है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(2)

हय मांछ गऽनी ठहरी ठहरी,
यिम द्वह नेरन पतुॅ फेरी मा।
पतुॅ लंजि लंजि फेरनुॅ क्या नेरी,
यिम द्वह नेरन पतुॅ फेरी मा।।

यथ पोशि पथुॅरि छय वुनि ख्वशब्वय,
चमनुॅचि प्रथ बेरि छि गुल ख्वशर्‌वय।
ल्वति पो'त खोरी वापस फेरी,
यिमं द्वह नेरन पतुॅ फेरी मा।।

तारख छि असान चमनस चमनस,
वुनि जूनुॅ ज्यवान शबनऽम्य् द्रमनस।
वुनि लालुॅ चे़' प्यालन रस शेरी,
यिम द्वह नेरन पतुॅ फेरी मा।।

नंगुॅ पानन वुनि रंगुॅ पलव वलन,
छंग चथ ब्वटुॅ बबर्‌यन दाऽद्य् बलन।
चंगुॅ वायनुॅ चानि मे' रंग फेरी,
यिम द्वह नेरन पतुॅ फेरी मा।।

काँह थऽर गछ़ि वरि काँह खसि बालन,
बुलबुल वसि नालन मंज़ नालन।
पोंपुॅर्‌य् वुनि छि करान गो'ह गीरी,
यिम द्वह नेरन पतुॅ फेरी मा।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(2)

1. हे मधुमक्खी! ठहर! ठहर!! ये दिन यदि निकल गए तो फिर तुमको पश्चाताप करना पड़ेगा और फिर यादें तुझे सतायेंगी। तत्पश्चात् यदि तुम प्रत्येक टहनी भी छान मारोगी तो कुछ लाभ नहीं मिलने वाला अर्थात् हम नहीं मिलेंगे। यदि यह दिन निकल गए तो फिर मेरी यादें सतायेंगी।

2. इस फुलवाड़ी में अभी भी सुगंध फैली हुई है। चमन के प्रत्येक किनारे पर अभी कुछ सुंदर फूल विद्यमान हैं। चुपके-चुपके बापस लोट आओ क्योंकि फिर तुम्हें इन बीतें दिनों की यादें ही सतायेंगी।

3. टिमटिमाते तारे जैसे पुष्प इस बाग के प्रत्येक चमन में अभी भी हंस रहे हैं तथा अभी भी शबनमी घास में से चन्द्रमा सदृश्य पुष्प खिल रहे हैं। अभी भी 'लाला'(1) नामक पुष्प अपने पत्तों की प्यालियों में तुम्हारे लिए रस भर लेगा। यदि ये दिन बीत गये फिर तुझे यादें सतायेंगी।

4. अभी भी वे पुष्प अपने नंगे शरीर को रंगीन कपड़ों से ढांप लेते हैं। तथा छंग(2) पीकर लद्दाखी सुंदर युवतियों(3) की सारी प्रेम पीड़ाएं दूर होती हैं। 'चंग'(4) नामक वाद्य के सदृश्य तुम्हारे स्वर-संगीत से मेरे अंग-अंग में नया रंग भर जायेगा। परन्तु यदि ये दिन निकल गए तो फिर तुम्हें यादें ही सतायेंगी।

5. कोई फूल-पौदा खिलते ही मुर्झा जायेगा। कोई पर्वत पर चढ़ जायेगा। बेचारा बुलबुल चिल्ला-चिल्ला कर नदी नालों की ओर ढूंडता फिरेगा। अंभी भी फूलों की आशा में तितलियां घूम फिर कर तलाश करने में कोई कमी नहीं करती हैं। परन्तु जब यह दिन निकल जायेंगे तो फिर तुमको यादें ही सतायेंगी।

---

1. कश्मीर का लाल रंग का फूल। 2. लद्दाख की एक शराब। 3. 'बबुॅर' कश्मीर की सुगंधपूर्ण झाड़ी जिसके छोटे फूल होते हैं। सुन्दर युवतियां। 4. 'चंग' एक वाद्य।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सरदी ये'लि हऽट्य चीर दियि हरदस,
चऽट्य् चऽट्य् थवि सूरुँदग पृथ परदस।
लऽट्य् छेन्य् छेन्य् पोशन त्यह मोरी,
यिम द्वह नेरन पतुँ फेरी मा।।

त्ये'लि यिखुँ ये'लि नल नख ह्यखि वऽथरन,
ये'लि शिशरुन लगि कतरन कतरन।
प्रथ बेरि ज़जुर ये'लि पखुँ वऽहरी,
यिम द्वह नेरन पतुँ फेरी मा।।

चे' ति शामन बाऽगिन लोसी द्वह,
पतुँ पान तुलुन थो'द बासी क्वह।
तति वीरुँन्य् कथ वाऽलिंज कोरी,
यिम द्वह नेरन पतुँ फेरी मा।।

(11 अगस्त, 1986)

काऽशुर शास्तुँर्य् 'वनवुन'
(लग्नन तुँ मेखलन हुंद)

संकलन : सोमनाथ भट्ट 'वीर'
म्वल : त्रुँह र्‌वपयुँ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6. जब हेमंत ऋतु की ठंड शरद्काल (पतझड़) का गला घोंट लेगी तथा पाला[5] प्रत्येक फूल-पत्ता काट-काटकर धराशायी कर देगा। तत्पश्चात् फूलों की डंडियाँ कट-कट कर गिर जायेंगी तथा उनका यौवन-शृंगार समप्ति की ओर अग्रसर होगा। अतः यदि यह दिन बीत गए तो यादें ही तुझे सताएँगी।

7. क्या तुम तब जाओगी जब पत्तों का अंग-अंग सूख जायेगा। जब बूंद-बूंद जल शीत से जम जायेगा। यह दिन बीतेंगे तो तुझे फिर यादें सतायेंगी।

8. शाम होते ही तेरा भी दिन अस्त होगा। फिर तुझे अपने आपको खड़ा रखना भी पर्वत उठाने के बराबर कठिन होगा। उस समय 'वीर' की बातें तुम्हारे हृदय को काटती रहेंगी। अतः यदि यह दिन बीत गए तो तुझे फिर यादें सतायेंगी।

(11 अगस्त, 1986)

कश्मीरी वनवुन

कश्मीरी पंडितों के विवाह तथा यज्ञोपवेत संस्कारों के अवसरों पर मात्रशक्ति द्वारा गाये जाने वाले शास्त्रानुसार लोक गीत।

संकलन : **सोमनाथ भट्ट 'वीर'**

मूल्य : तीस रुपये (रु० 30रु/-)

5. कश्मीर में ओस के कण हेमंत काल में ठंड से जम जाते हैं जिसे 'सूर' कहते हैं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(3)

तथ मीलुॅ कनि निश समखुन पॅहरा, क्या याद छिया ल्वकचारुॅक्य् द्वह।
मोसुम छ्ववपि मंज़ गुफ़तारुॅक्य् द्वह, तिम द्वह आऽस्य् उलफ़तुॅ प्यारुॅक्य् द्वह।।

क्या याद छुया तापॅुल्य् लबि तल, ये'लि सोंतुॅच छ़ठ वुशनावान आऽस्य्।
हाऽरिंजुॅ म्वछि मंज़ थावान दो'पथम, यिम ज़ारुॅक्य् द्वह छि बहारुॅक्य् द्वह।।

क्रें'जि सूॅतिन फ्यारुॅन्य् सॅदरुॅ मलर, लंजि लंजि वुफनावुॅन्य् जानावर।
खंजि करवुॅनिं हवंजि हुंज़ ग्राय गज़ब, कम कम स्वनहऽर्य् अनहारुॅक्य् द्वह।।

अछि दार्यन मऽत्य् म्वनि मीठ्य् करुॅन्य्, प्रवुॅ शीशिवि त्रावुॅनि हलमन मंज़।
तिम द्वह आऽस्य् गाऽज़न गुॅरज़न हुंद्य्, चुकराऽविथ बुथ सो'गन्यारुॅक्य् द्वह।।

वख च़लवुन वाव गनीमत दम, तम द्युन ति गलत गम ह्योन ति ग़लत।
कति फेरन पथ मिलच़ारुॅक्य् द्वह, खुलुॅ दिलुॅ खुलुॅ डुलुॅ दरबारुॅक्य् द्वह।।

वुन्युॅ वन साऽ केंह 'वीरस' निश बे'ह, नज़रन छुम से'ह तुॅ बहारुॅच ते'ह।
वुन्युॅ कें'ह छि व्वजुॅम्य् सरकारुॅक्य् द्वह, पतुॅ फेरन गरदिगुबारुॅक्य् द्वह।।

(18 दिसम्बर, 1984)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(3)

1. क्या तुझे उस मील-पत्थर के पास थोड़ी देर मिलना याद है? क्या वे लड़कपन के दिन याद हैं? मासूम अर्थात् सरल स्वभाव की ख़ामोशी द्वारा प्रेमपूर्ण मनोभाव व्यक्त करने के दिन क्या याद हैं? वे दिन दिल लगी तथा प्यार के दिन थे।

2. क्या तुझे याद है जब हम धूप से उष्णित, घर की बाहरी दीवार[1] के पास बैठकर बसंत ऋतु की ठंडी हवा के झौंकों को उष्णित करते रहते थे। तथा जब एक बार तुमने मेरी मुट्ठी में सीपियाँ[2] थमाकर कहा था कि आज के दिन जुआ खेलने के दिन हैं और बसंत के दिन भी।

3. क्या याद हैं वे दिन जब हम एक छोटे कबगीर[3] से समुद्रीय जलधाराएं छानते रहते थे तथा हम प्रत्येक टहनी से पक्षियों को उड़ाते फिरते थे। उस समय तुम्हारी ठुडी का हिलना दिल को चीरने वाला था। वे दिन कैसी-कैसी सुन्हली आकृतियों तथा कल्पनाओं के दिन थे।

4. वे दिन भी क्या दिन थे जब हम दोनों, गुडियों को गले लगाते तथा उन्हें दुल्हा-दुल्हन समझकर माथे चूमते थे। जब हम एक दूसरे की चोलियों (गोद) में आईनों से धूप के प्रतिबिंब डालते थे। वे दिन डांटने डपटने के भी थे और जब हम कभी रोष दिखाकर मुँह चिढ़ाते थे तथा फिर मुस्कराते थे मानो बदली छटकर आकाश स्वछ़ होता था।

5. समय तो भागने वाली आँधी की भांति है तथा वर्तमान ग़नीमत समझ। इसमें आराम से बैठना भी ग़लत है। तथा दुःख को दिल में स्थान देना भी अनुचित है। वे मिलन के दिन कहाँ से लौट कर आयेंगे। वे दिन तो दिल खोलकर तथा बेखटके बातें करने के दिन थे।

6. अभी भी 'वीर' के पास बैठकर कोई बात तो करो। क्योंकि अभी मेरी आँखों में आर्द्रता (स्नेह) है तथा बसंत का जैसा यौवन भी अभी कुछ दिन के लिए सरकार की देनदारी[4] है। तत्पश्चात् धूल उड़ने अर्थात् चित्ता में भस्म होने के दिन फिरेंगे।

(18 दिसम्बर, 1984)

---

1. प्रांगन की ओर घर की बाहरी दीवार। 2. कश्मीर में त्यौहारों पर बच्चे 'हारुँ' नामक सीपियों से खेलते थे। 3. लोहे का कबगीर (क्रंड) जिसमें सुराख होते हैं। या तेल मापने का चमच। 4. सरकारी नौकरी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(4)

कर नज़र यि छा इन्साफ़ुॅ त्रकुॅर
चुॅ तुॅ कऽछहरि, बुॅ तुॅ सवाल्यन मंज़।
यि छु दुनिया अजब तमाशा अख,
चुॅ मे' जिगरस मंज़, बुॅ चे' ज़ाल्यन मंज़।।

पे'युॅ ज़न नुॅ मे' प्यठ ग्वनमाऽत्य् नज़र,
नतुॅ ओसुस बुॅ ति अख मो'त दिलबर।
खो'त ज़न नुॅ मे' मकबरुॅ ताज बऽनिथ,
नतुॅ बुॅ ति छुस म्वहबत वाल्यन मंज़।।

अख आलम गाऽज़न गुॅरज़न हुंद,
ये'ति पाऽजुॅ व्वटल करि राजुॅ सिया।
बेताब छु ब्याखा लोलुॅ कथन,
ये'तिं अख अख लो'ग दकुॅ दाल्यन मंज़।।

प्रुछ़ रोबुॅ रऽटिथ मे' ति टेंचुॅ फऽलिस,
दो'पनम बुॅ ति आऽसुॅस शैल द्रहा।
तनुॅ तुल्यहम तनि प्यठुॅ वरक वरक,
यनुॅ ज़ायस क्वह तेंताल्यन मंज़।।

मे' छे' बासान साऽरुॅय पऽर्य्युॅ कथा,
क्वलुॅ कतरे'न मंज़ नतुॅ कति गय्युॅ लाल।
स्व छे' अलगुॅय लोलुॅच सोगाथा,
ख्वसुॅ तोरय वातान ड़ाल्यन मंज़।।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(4)

1. अपनी आँखों से देखो कि क्या यही न्याय की तूलिका (तराजू) है जो कि आप स्वयं कच्हरी (अदालत) की कुर्सी पर बिराजमान हो तथा मैं सवालियों अर्थात् याचकों (दोषियों) की पंक्ति में खड़ा हूँ। यह संसार एक विचित्र तमाशा बना हुआ है जो कि मैंने आपको अपने हृदय में बसाया है तथा आपने मुझे अपने पंजों अर्थात् ज़ंजीरों में जकड़ के रखा है।

2. यूँ तो मुझ पर कवि की दृष्टि नहीं पड़ी वरन् तो मैं भी एक मतवाला प्रेमी था। यद्यपि मेरी कब्र पर ताजमहल नहीं खड़ा हुआ परन्तु मैं भी प्रेम करने वालों में से हूं।

3. एक संसार ऐसा है जहां प्रताड़ना सहन करके एक व्यक्ति 'बाज़'[1] की भांति उछल कूद कर राज्य का सा सुख भोगता है। दूसरों का संसार यह है कि जहां तड़पता प्रेमी दर-दर[2] की ठोकरें खाता है।

4. मैंने पत्थर के एक छोटे कण (कंकर) को सामने करके उसे एक प्रश्न पूछा तो उसने उत्तर दिया कि एक दिन था जब मैं भी एक बड़ी शिला थी। परन्तु उसी समय से मेरी तन से परतें ही परतें उतारी गई जब मैं पर्वत शिखरों के बीच जन्मी थी।

5. मुझे तो यह सब परियों की कहानी सी लगती[3] है अर्थात् झूठी दिखती हैं वरन् तो नदी में पड़े ठीकरों[4] में से कहां रत्न और जवाहर प्राप्त होंगे। वह बहुमूल्य सोगात[5] तो अलग ही प्रकार की होती है जो सौभाग्यवंश वहां (भाग्य) से ही तोहफ़े[6] के रूप में स्वयं ही आती है।

---

1. एक तेज़गामी पक्षी। 2. प्रत्येक दरवाज़े पर। 3. लोक कथाओं में कहा जाता है कि 'लालमाल परी' के लाल एक नदी में बहते रहते थे। हम बाल्यकाल में यह सुनकर अपनी नदी के कंकरों में 'लाल' ढूंढते थे। 4. बर्तनों के टुकड़ों (ठीकरी)। 5. मूल्यवाद वस्तु। 6. उपहार।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नो'न वनतम कुस अख ज़ाव नुँ नो'न,
नो'न वऽन्य् वऽन्य् कुस अख द्राव नुँ नो'न।
यि छु म्वहबत मिलचारा न्यथुँ नो'न,
युथ महलन मंज़ त्युथ पाल्यन मंज़।।

कुलसुँय मंज़ जुज़, जुज़सुँय मंज़ कुल,
प्रथ तनि मंज़ हनि हनि जुव तुँ जुव्युल।
'वीरुन' ताहो बाला आलमे कुल,
कुल्य् जंगुल छ्यफ दिथ ब्याल्यन मंज़।।
(दिसम्बर, 1974)

अकि गंटुक टी-सीरीज़ कैसेट

वनवास

1. काऽशर्यन हुँदि खाऽतरुँ महागीत।
2. विस्थापितन हुँदि बननुक गुदरनुक दास्तान।
3. द्रदुँ माजि हुँज़ लीला।

म्वल : पाऽंच्रत्रुँह र्वपयुँ

मुख्य् आवाज़ुँ : स०न० 'वीर'
विजय गोरखा

कवि तुँ संगीतकार : स०न० 'वीर'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6. लगी लिपटी के बिना साफ़-साफ़ बताओ कि कौन है जो नंगा नहीं जन्मा। परन्तु कौन है जिसने सत्य बात कही और फिर समाज में प्रतिहत न किया गया हो। यह प्रेम मिलाप तो नग्न तनों का होता है जो जैसा भवनों में होता है वैसा जुग्गी झौंपड़ियों में भी होता है।

7. पूर्ण वस्तु[1] में अंश[2] तथा अंश में पूर्ण वस्तु विधिमान होता है। प्रत्येक शरीर के अंग-अंग में जीव तथा जीवन तत्त्व[3] फैला हुआ होता है। वीर का यह आकाश पाताल अर्थात् सारा ब्रह्मांड उसी प्रकार से है जैसे बीजों के अंदर निहित पेड़-पौदों से भरे हुए जंगलों के जंगल होते हैं।

(दिसम्बर, 1974)

एक घंटे का टी-सीरीज़ कैसेट

वनवास

1. कश्मीरियों के लिये 'महागीत'।
2. विस्थापितों की दर्दभरी दास्तान पर दो कवितायें।
3. माता 'क्षीर भवानी' के प्रति लीला (भजन)

मूल्य : **35/- रुपये**

मुख्य गायक-गायिका : स॰न॰ 'वीर',
विजय गोरखा

कवि तथा संगीतकार : स॰न॰ 'वीर'

1. Whole. 2. Part. 3. Cell.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(5)

अऽस्य् छि साऽरी हें'द्य् मुसलमान बाऽय बाऽय।
अस्य् लसव मा ज़ाँह ति अख अऽक्य् सुॅय वराऽय।।

दज़ि तुॅ डूरिस असि छु यिकुॅवटुॅ सग बरुन।
प्रथ दुकानस म्वहबतुक सोदा करुन।।
तस शिनाऽई युस करान असि छ्यनुॅ छुदाऽय।
अऽस्य् छि साऽरी हे'द्य् मुसलमान बाऽय बाऽय।।

दफतरन मंज़ कामि कारुक बाऽय तोन।
कारखानन मा छु ज़ानुन चोन म्योन।।
मदरसन वरतावनी लोलुॅच पड़ाऽय।
अऽस्य् छि साऽरी हें'द्य् मुसलमान बाऽय बाऽय।।

अख अऽकिस रो'स असि छु सख़ मुश्किल दरुन।
असि छु यिकुॅ वटुॅ वारुॅ रोजुन ज़्यो'न मरुन।।
अऽस्य् ग्यवव गिंदव करव व्वन्य् ग़म दफाऽय।
अऽस्य् छि साऽरी हें'द्य् मुसलमान बाऽय बाऽय।

आसि ये'लि असि अख अऽकिस प्यठ एतिमाद।
त्ये'लि छु तरकी कारुबारस कांह मफाद।।
वरनुॅ परतीतस गुज़ारस क्वसुॅ बकाऽय।
अऽस्य् छि साऽरी हें'द्य् मुसलमान बाऽय बाऽय।

'वीरुॅ' सोज़ान गछ़ बुज़रगन ब्ये'यि सलाम।
अऽस्य् यिमव ह्ये'छनाऽव्य् यछ़-पछ़ एहेतिराम।।
होश कर यिनुॅ काँह ति करि जोरे जुदाऽय।
अऽस्य् छि साऽरी हें'द्य् मुसलमान बाऽय बाऽय।।

(25 फरवरी, 1986)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(5)

1. हम सब हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं। और हम एक दूसरे के बिना कभी जीवित नहीं रह सकते हैं।

2. हमें मिलकर खेतों को सींचना है तथा प्रत्येक दुकान पर वस्तुएँ मोल लेनी हैं। उसका भी सर्वनाश हो जाये जो हमको एक दूसरे से जुदा करता है। हम सब हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं।

3. दफ़्तरों में हम भ्रात्रभाव के साथ काम-काज करते हैं। कल-कारखानों में भी हम तेरा-मेरा' या 'अपना पराया'[1] नहीं मानते हैं। हमको तो पाठशालाओं में प्रेम का पाठ पढ़ाना है। हम सब हिन्दू तथा मुसलमान भाई-भाई हैं।

4. एक दूसरे के बिना हमारा जीना कठिन है। हमें एक साथ जीना मरना है तथा कुशल मनाना है। हम मिलकर गायेंगे, खेलेंगे तथा दुःख दूर करते रहेंगे। हम सब हिन्दू तथा मुसलमान भाई-भाई हैं।

5. एक दूसरे पर विश्वास रखकर ही हम उन्नति तथा व्यवसाय से लाभान्वित हो सकते हैं। वरन् तो भलेमानसी तथा दुनियादारी कब तक साथ देगी। हम सब हिन्दू तथा मुस्लिम भाई-भाई हैं।

6. 'वीर'! तुम अपने पूर्वज ऋषियों-मुनियों को फिर नमस्कार करो जिन्होंने हमें विश्वास करना तथा भ्रात्रप्रेम सिखाया। सचेत रहना कि कहीं कोई इस हिन्दू-मुस्लिम जोड़ी को जुदा न कर दे। हम सब हिन्दू तथा मुस्लिम भाई-भाई हैं।

(25 फरवरी, 1986)

---

1 द्वैतभाव।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(6)

वलुॅ अज़ दिलबरॅ गिलुॅ मऽशरावव, छावव ना पो'त जून।
बुॅ ति बनुॅ लाऽल तुॅ मन मऽदरावव, चुॅ ति बन मो'त मऽजलून।।

तारख नब यियि ज़ंगि असि शामन, सतुॅ रेश्य् कांछन आय।
शबनम तर करि चोनुय दामन, छठ दियि म्योन जनून।।

चो़नुय सायि मे' बनि वतुॅ हावुख, हो'सनस गथ करि माय।
कथि कथि यिनुॅ गम गोसुॅ मे' बावख, ज़खमन छकिहम नून।।

कथ यिनुॅ त्रावख यिनुॅ ज़ाँह रोशख, कथनुॅय रोज़्यम जाय।
सथ छम चाऽनी वाऽसि मे' पोशख, वंदुॅ हय क़बीलुॅ क्रोन।।

यिनुॅ अज़तामत ह्यो'कमय बाऽविथ, तमिकुय दिमुॅहय बास।
लछुॅ बऽद्य् ज़ऽद्य् वछ मुच़रिथ हाऽविथ, वनुॅ हय नो'व क्यो प्रोन।।

चमुॅ हव टूर्यव टार्यव बरॅ हव, ल्वति हे दिलकुय बार।
वद वदि अऽद्री असुना कर हव, कथुॅनुॅय दिम हव दून।।

'वीरॅ' सवालन चान्यन ह्यथ यियि, सुबहुक नूर जवाब।
राशन सान्यन नवि सरॅ फ्युर दियि, गाशुर ह्ये'यि प्रज़लून।।

(14 जनवरी, 1968)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(6)

1. प्रियतम मेरे ! आजाओ, हम सब पुरानी शिकायतें भूल जायेंगे तथा पिछले पहर की चाँदनी में बैठकर आनन्द अनुभव करेंगे। मैं भी 'लैला' बनकर तुम्हारे साथ मन मीठा करूँ। तुम भी 'मजनून' बन जा।

2. तारों भरा आकाश सायंकाल को हमारी अगवानी करेगा तथा सप्त ऋषि नामक सात तारे हमारी दीर्घ आयु की कामना करेंगे। शबनम[1] तुम्हारा दामन तर अर्थात् स्नेहमय करेगा तथा मेरी दीवानगी[2] में उफान उत्पन्न होगा।

3. तुम्हारी छाया मेरा पथ प्रदर्शक बनेगी। प्रेम सौन्दर्य की परिक्रमा करेगा। परन्तु बातों-बातों में तुम कभी गिले-शिकवे न छेड़ना तथा मेरे घावों पर नमक न छिड़कना।

4. कभी भी मेरे साथ बातें करना त्यागना नहीं, न कभी रूठना। वरन् तो लोग मुझे उलाहने देंगे। मुझे तो तेरी ही आशा है कि तुम मुझे आयु भर का साथ दोगे। मैं तुझ पर अपने सारे वंश तथा सगे-सम्बंधी छोड़ने के लिए तैयार हूँ।

5. जिस बात को आज तक तुम्हारे समक्ष कह न सकी, उसी का आभास तुझे आज दूं। लाखों छेद छाती चीरकर तुझे दिखाऊँ तथा नई और पुरानी बातें सुनाऊँ।

6. इच्छा यह है कि प्रेम की मदिरा के बर्तन भर-भरकर पी लें तथा आँखों को अश्रुओं से भर लाएं[3] ताकि दिल का भोझ हलका हो जाए। रोने के दौरान भी हम हंस पड़ें तथा अनंत बातें किया करें।

7. 'वीर' ! प्रभात कालीन प्रकाश तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर लेकर आएगा। तेरी राशों अर्थात् ग्रहों सितारों का नया फेर बदल होगा[4] जब सूर्य भगवान चमकने लगेगा।

(14 जनवरी, 1968)

---

1. ओस। 2. जनून। 3. आँसू बहाएँ। 4. शुभ घड़ियां आयेंगी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(8)

सीनुँ स्वरुँम्य् मे' गव करान,
पानुँ बरान छु टारि लो।
पोशुँ बदन मे गव हरान,
पानुँ जरान छु कारि लो।।

आसि अगर नुँ सो'न बदन,
पोशि नुँ दम सतन ज़दन।
बीनि छे' ज़ीठ ज़िंदुँगी,
नयि छे' दम शुमारि लो।।

मऽज़िलुँ कऽरिम तुँ चऽल्य् मऽज़िल,
दिल मुरुम को'रुम मे' दिल।।
बारि ह्रहय मऽज़िल तुलिम,
नऽख्य् तुँ गाह सवारि लो।।

दऽद्य् जिगर स्ये'किल्य् बनेय,
सास प्रयाग ति राऽस्य् गऽय्।
व्यथुँ कमन चुँ आपरान,
त्रेश पेंचवारि लो।।

दीन दरुँम छे' बागनय,
ज़ाऽच़ बाऽच़नुँय बन्येय।
नाऽर स्वना दिलुँच अवय
गऽयि मे' नारि नारि लो।।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(8)

1. उसने मेरे सीने को पीसकर सुरमा बना डाला और उस काजल को अब वह अपनी आँखों को लगाता रहता है। उसने मेरे फूल जैसे शरीर को मुरझाकर गिरा दिया तथा अब वह स्वयं उस पुष्प को अपनी ग्रीवा पर लटके हुए केशों में सजाता रहता है।

2. यदि मन में गम्भीरता न हो तो वंशी के सात छिद्रों में बजने हेतु भरी गई हवा ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगी। इस कारण 'बीन'[1] की दीर्घायु है तथा वंशी की आयु बार-बार हवा फूँकने पर ही निर्भर करती है।

3. ध्येय[2] तक पहुँचते-पहुँचते वे मुझ से बार-बार दूर होते गए। मैं अपना मन मसोस कर बैठा तथा अपना हृदय विशाल बनाया। मैं तो सदा ही अपने ध्येय कभी पीठ पर तो कभी कन्धों पर उठाकर अग्रसर हूँ।

4. हृदय जलकर मरुस्थल बन गए। सहस्त्रों प्रयाग उन मरुस्थलों में विलीन हो गये। अब तुम किन को सूखे हुए आधे अखरोट के खोल से सारी वितस्ता नदी[3] का जल प्यास बुझाने के लिए पिला रहे हो?

5. दीन[4] तथा धर्म केवल दिलों का बटवारा करने वाले रह गए हैं। एक ही परिवार के सदस्यों को जातियों में विभाजित किया गया है। इसी कारण मेरे हृदय की नाड़ियां तथा दमनियों से परिपूर्ण कोख (गोद) तार-तार हुई है।

1. सपेरे की बीन जिसको हवा की थैली होती है। 2. मन्ज़िल, Goal. 3. कश्मीरी में 'पींट' या पेंच वोर' बोलते हैं। गिरी निकालकर बचा हुआ अखरोट का आधा खोखला। 4. मजहब।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साक़्या यितुँ शबाब ह्यथ,
म्वहबतुक शराब ह्यथ।
वारि वारि अऽस्य् चमव,
फिर तुँ नटि तुँ नारि लो।।

आलमस मच़र च़ऽलिन,
नफ़रतुक शिशुर गऽलिन।
मायि बो'रुत सुबुह फो'लिन,
अपारि क्यो यपारि लो।।

लितरि खश ज़रुन ज़बर,
दऽतरि नून प्यथ अ'हर।
बनि सु कतरि ज़ाऽर्य् कर,
युस नुँ ज़ॉह ति हारि लो।।

हावुँ हय बुँ दिलि जिगर,
वीरुँ अख रछ़ा ठ्हर।
अऽज़्य् चि लारि लारि मंज़,
कुस मे' पचि़ तुँ प्रारि लो।।

(17 जुलाई, 1971)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6. रे साक़ी ! तुम पूरे यौवन को साथ लेकर आओ तथा प्रेम की मदिरा भी साथ लाओ। हम बारी-बारी से पी लेंगे और तुम इसे मटकों मटकियों से उंड़ेलते रहो।

7. कामना है कि सारे विश्व से पागलपन दूर हो जाये तथा द्वेष की जमी हुई हिमपरत पिघल जाए। सीमाओं के आर-पार उषा अपनी प्रेम रूपी किरणें फैलाए।

8. आरी के कतरने की पीड़ा सहन करना ही अच्छा रहेगा। घावों पर नमकीन छिड़काव को सहन करते हुए खड़ा रहो। वह कब ठीकरियों[1] के साथ खेलने वाला पक्का जुआरी बन सकता है जिसने कभी भी हारा न हो?

9. 'वीर' ! पल भर के लिए ठहर जा। मैं तुझे ही अपना हृदय खोलकर दिखाने का इच्छुक हूँ अन्यथा आज की भागदौड़ में कौन मुझ पर विश्वास करेगा तथा प्रतीक्षा करेगा।

(17 जुलाई, 1971)

1. जब एक जुआरी सारा कुछ हारता है और एक नम्बर जुआरी बनता है तो फिर वह पैसों के बदले ठीकरियों से खेलता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(७)

बर बाम रुज़िथ सुबुह प्यठुँ ता शाम,
बुलबुल थो'क वन्य् पिचान पिचान।
दारि तुँ बऽर्य् द्रास वऽन्य् दिनि कसताम,
अऽछ मे'ति लोसम वुछ़ान वुछान।।

मकदूरस वुनि ईच़ कदुँर छा,
कदरन निश तथ बऽल्य् खो'त पोर।
नतुँ क्युथ हंग रंग नंग नामोश क्राम,
मे' ति गऽयि वांऽसा हे'यछान हे'छान।।

कनि पे'यि वावथ वऽछ़्य् गऽयि हऽस्य् ठ्वलि।
कावन अथि लो'ग रावण राज।
स्वन ख्यव सरतलि, सरतलि गव त्राम,
कूँत्यन गऽयि ज़्वलि वुछान वुछान।।

ज़्यवुँ गऽयि न्यऽदुँरि पिलुँ पिलनावान,
नरि हरकऽच़ गऽयि स्वम्बरावान।
ये'म्य् दो'प ये'ति असि कस पानस ताम,
पानसं क्युत गव रछांन रछान।।

ख्यथ चथ पथ पलि थो'व 'कोरुनन',
कावन ह्यथ च़ो'ल वावुँन्य् डून्य्।
जनत त्रोवुन बद गव बदनाम,
जहनम तोवुन बे'छान बे'छान।।

या गछ़ि आसुँन्य् कदरा वुम्बरन,
नतुँ क्या खम्बर्यन प्यठ द्वह राथ।
'वीरस' प्यतरुँन्य् प़्ये'यि शाह तुल्य् ताम,
वांऽसा गऽयि तस ख़िचान खिचान।।

(10 दिसम्बर, 1970)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(9)

1. बुलबुल प्रात:काल से सायंकाल तक छत के ऊपर बैठ कर बोलते-बोलते थक चुकी[1] तथा अतिथि के आने की सूचना देती रही। मैं भी खिड़कियों तथा दरवाज़ों को बार-बार खोल कर किसी के आने की सम्भावना से रास्ता तकता रहा।

2. क्या अभी भी भाग्य का इतना आदर किया जाता है? उसे गुणों के समक्ष व्यर्थ ही ऊँची पदवी मिली। अन्यथा, कैसी कुलीनता, रंगभेद, ऊँचा आदर सम्मान, नाम का बडप्पन तथा जाति भेद? मुझे तो यह सीखते-सीखते सारी आयु बीत गई।

3. यहां तो पत्थर पर सोने का सुहाग (रंग) चढ़ाया जाता रहा। गाय के बछड़े हाथियों को सींग मारने दौड़े। कव्वों के हाथ रावण का राज्य लग गया। सोने को पीतल ने खाया। पीतल तांबा हो गया। इतना देख-देखकर भी कई लोगों की आँखें धोका खा गईं।

4. जुबानें[2] तो निद्रा लाने वाली पिलें[3] बांटती रहीं। भुजाएं आगे हो-होकर धन बटोरती रहीं। जिस किसी ने भी यहां कहा कि कब कुछ किसी के वश में है वही स्वार्थी बनकर अपने लिए एकत्रित करता गया।

5. खा-पीकर कारुन ने धन एकत्र किया। वह तब तो कव्वों के चोंच से गिरे आंधी के अखरोट[4] तक उठाकर ले भागा[5]। उसने स्वर्ग त्याग कर नर्क तपाया और वह भी भीख मांगते-मांगते।

6. या तो ज़िंदा रहने वालों को जीवन भर आदर मिलना चाहिए। अन्यथा तीक्ष्ण नोकदार पत्थरों पर लेटकर रातें बिताना किस लिये? 'वीर' को तो थोड़ से सांस भी भार बन गये तथा इन भारी सांसों को सहता गया। ऐसे श्वास खींचते-खींचते उसे सारा जीवन व्यतीत हुआ।

(10 दिसम्बर, 1970)

---

1. कश्मीर में यदि सवेरे खिड़की पर बुलबुल बैठाकर बोलने लगे तो अतिथि के आने का सूचक माना जाता है। 2. जिह्वा। 3. गोलियां। 4. 'पतझड़' ऋतु में पेड़ों से हवा से गिरते अखरोट जो कव्वे उठाकर खाते हैं। 5. अत्यंत कंजूस।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(10)

म्यय छुनुँ वऽन्य् वऽन्य् अंदॅनुॅय, कथ छस पथ पथ थावान।
चय छुख मऽज़्य मऽज़्य् फ़ंदुॅनुॅय, कथि कथि कथ कथ बावान।।

नारस बुथि लोग शबनम, प्रथ कथि बुथ्य् प्रथ ह्युत्थम।
शऽतरन ब्रोंह कनि छी हम डून्य् ड्यकस फुटरावान।।

कूॅत्यन गऽज्ज ये'ति पऽद्य्च़म, पुल पा'तव[1] गऽयि बरहम।
यिथ्य् बुथ्य् श्रे'प्य् वति कम कम, कथ छुख बुथ चुकरावान।।

वुछ्य् वुछ्य् शदादुॅ लरिनुॅय, लुॅयि क्या सनुॅ अथुॅ छ़रिनुॅय।
सु छु च़्वंजुॅ फरिनुॅय नरिनुॅय, गरि हुंज़ हरकत थावान।।

ज़ंड़ गछ़ि वति हुंद कतरुन, को'ड गछ़ि बूटन वथरुन।
कथ क्युत बद बुथ प्यतरुन, सरफन छा द्वद चावान।।

फयो'र लगि छ़ो'र गछ़ि हुरॅनुॅय, दागव गछ़ि दिल पुरनुय।
कथ छुख मसखरॅ कुरॅनुॅय, वीरुन जो'हदत त्रावान।।

(6 दिसम्बर, 1970)

1. पा'तव = सर्दी में टांगों पर बांधी जाने वाली ऊनी पट्टी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(10)

1. बातें कर कर के वास्तविक बात ही कह नहीं पाती हूँ। क्योंकि बातों का कहीं अंत ही नहीं दिखता। बातें करते-करते कहने वाली बात ही अनकही रह जाती है। तुम तो बीच-बीच में चालबाज़ी से बातों द्वारा एक-एक बात कहते ही जाते हो।

2. मैं अग्नि के पास आकर मानो ओस टक्कर लेने लगी। तुमने तो प्रत्येक बात को काटकर मेरे मुख पर मानो चाँटे मारे। तुम तो शत्रुओं के सम्मुख मुझे कड़वी बातें सुनाकर प्रतिहत करते हो मानो मेरे माथे पर अखरोट तोड़ रहे हो[1]।

3. कितनों के पैरों की चमड़ी यहां घिसती रही। कितनों के ही घास के जूते[2] तथा टाँगों पर बांधी जाने वाली पट्टियाँ फट चुकी हैं। ऐसे कितने ही मुखड़े तो इस मार्ग पर धूल में मिल गए। अतः तुम अपने मुखड़े पर क्रोधवश क्यों बल चढ़ा रहे हो।

4. 'शदाद'[3] के जैसे ऊँचे भवनों को देख-देखकर खाली हाथों वाले दरिद्रों को क्या मिलेगा। 'शदाद' रूपी धनाड्य मनुष्य तो दासियों की भुजाओं को घड़ी की सूईयों की गति देके रखता है।

5. पथ में झाड़ियों की बाधाएँ हटा देनी चाहिए। तथा काँटों को जूते से मसल देना चाहिये। दुष्ट का मुँह क्यों सहन किया जाये। सर्पों को दूध पिलाने से क्या कोई लाभ हो सकता है?

6. खाली एक (1) अकेले को शून्य (0) जोड़ देने से एक (1) का मूल्य बढ़ता ही रहता है। इसी प्रकार घावों के निशानों से दिल को भर लेना चाहिए। तभी दिल का मूल्य बढ़ता है। विदूषक[4] के झूठे कोड़ों को देखकर क्यों तुम 'वीर' का साहस छोड़ देते हो।

(6 दिसम्बर, 1970)

---

1. माथे पर अखरोट तोड़ना : कश्मीरी भाषा में कड़वी बातें सामने आकर कहना। 2. पुलहोर = घास की जूती। 3. एक विदेशी अहंकारी राजा जिसने अपना एक स्वर्ग बनाया था जो बाद में नष्ट हुआ। 4. भांड (नट)।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(11)

टोठ वतन

म्यानि वतन टाठि मनस छम मे' गनान माय चाऽन्य्।
मानि व्वपर ज़ानि क्या, क्या ज़ानि कत्यन जाय चाऽन्य्।।

कुकिलुॅ गू गू पोशुॅ नूलुॅन्य् ताल, कोतर छ़ालुॅ छ़ाल।
लय मऽदुॅर खारान हय अथ, पाँ छुलुॅच श्वशराय चाऽन्य्।।

नाव नस थकनुक नुॅ ह्यवान, बालुॅ तऽल्य् तऽल्य् नागुॅराद।
कावुॅ कुमर्यन चानि हुबुॅ हावस, दिलन दुबराय चाऽन्य्।।

चोन पय आरन क्वलन नारन्न तुॅ सब्ज़ारन अंदर।
आरुॅ वलि हुंद रंग, क्वलन मंज़ बोलुॅ वुॅन्य् दो'ब्य्बाय चाऽन्य्।।

रो'ट वनव वार्यव तुॅ यार्यव दिवदारव चोन रंग।
संगरन ड़ाऽखन खांन मंज़ म्वख्तुॅ ची श्रवन्यराय चाऽन्य्।।

कऽतिजि हुंद गुस्ताख नचुना, वन च़र्यन हुंद बोल बाश।
नाल वो'लमुत वावुॅ माले, बालुॅ तेगस छ़ाय चाऽन्य्।।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(11)

प्यारा वतन (कश्मीर)

1. हे मेरे प्यारे वतन, कश्मीर! आपका प्रेम तो मेरे मन में घर करता ज़ा रहा है। पराया आदमी आपका अर्थ क्या समझेगा। वह क्या जाने कि आपका सर्वोच्च स्थान कहाँ पर है।

2. कोकिलों[1] का 'गू-गू' नाद, पोशनूल[2] की ताल तथा कबूतर का नृत्य, इस पर आपके जल प्रपातों के 'शर्र-शर्र' सुर मधुर लय उत्पन्न करते हैं।

3. पहाड़ी के दामन के साथ-साथ बहने वाली चश्मे से निकली नदी थकने का नाम तक नहीं लेती है। 'काव कुमरी'[3] अपने हृदय में आपकी धड़कनें होने के कारण आपका ही प्रेम तथा आकांक्षा रखते हैं।

4. आपकी सूचना तो नदी-नालों, पहाड़ी दर्रों[4] तथा हरे-भरे उपवनों में मिलती है। 'आरवल'[5] पुष्पों का रंग तथा नदी किनारे गाती फिरती 'धोबन'[6] पक्षी आपके ही चिन्ह स्वरूप हैं।

5. वनों, उपवनों, चीड़ तथा देवदारू के वृक्षें ने तुम्हारा ही रंग पकड़ा है। श्रंगों, टीलों तथा चट्टानों में मोती रूपी कंकरों की मधुर आवाज़ आपकी ही है।

6. अबाबील का निर्भीक नृत्य, वनवासी चिड़ियों का चहकना तथा पर्वत की चोटी पर तेज़ गति से हवा लाने वाली मेघ मालाओं का घेराव[7]– ये सब तेरे ही प्रतिबिम्ब हैं।

---

1. कोयल। 2. एक पक्षी विशेष। 3. काले रंग का छोटा कव्वा जैसा एक पक्षी विशेष। 4. दो पर्वतों के बीच का रास्ता। 5. एक झाड़ी के पुष्प जो पर्वतीय-क्षेत्र में पाये जाते हैं। 6. एक पक्षी विशेष। 7 पीर पांचाल की हवा जो मेघ पैदा करते हैं (वावमाल)।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ग्रूस मिंज़विस हो'ब्य् निवान आऽसस, करान मुस दांदुॅ ज़ूर्य्।
ज़न व्वमेज़न च़फ दिवान, छस तल अऽछन दां लाय चाऽन्य्।।

क्वह बियाबानन अंदर चान्यन खज़ानन ठानुॅ वऽथ्य्।
लाल माल ही मालि मंज़ डारन खाहन दसराय चाऽन्य्।।

रंग फिरान शुस मांछ गऽन्य् ब्ये'यि सोंतुॅ तापव, यिथ बहार।
पोशुॅ डोर्यन मंज़ ग्यवान छय, पोशुॅ वुन्य् गुंगराय चाऽन्य्।।

मंज़ ड़लस शिकारि साऽला, 'वीरुॅ' वुछ व्वलरुॅक्य् शिकार।
अऽह्‍रुॅ बलुॅ हे'र्य् छिम मे' बासान स्यें'दि हुंद्य् गित्य् ग्राय चाऽन्य्।।

(14 मार्च, 1966)

फ़ा'शन

यथ गरस यथ आंगनस मंज़ च़ाव फ़ाऽशन।
तथ हसद व्यह वाऽर ज़िद ह्यथ आव फ़ाऽशन।।

क्वदरऽती स्यो'द सादुॅ क्या नुंदुॅ बोन ओसुख।
रावुॅ रुॅथ इनसानुॅ सूरत त्राव फ़ाऽशन।।

(6 जून, 1965)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

7. कृषक का मद्याह्न को मुँह भर-भरकर भोजन खाना तथा तब तक बैलों की जोड़ी का अपनी थकान दूर कर देना– मानो वह कृषक अपनी आशाओं की परतें एकत्र कर रहा है। उसको अपनी आँखों के समक्ष शाली काटने के दिन नाचते हैं।

8. पर्वत मालाओं पर आपके कोषों से डक्कन उठे हैं। 'लालमाल परी'(1) जैसी 'हीमाल'(2) को खेत खलियानों में लाल जवाहिरात की वर्षा होती है।

9. ठंड में अशक्त पड़ी मधुमक्खी बसंत के पुनः आगमन पर रंग भर लेती है। पुष्पित क्यारियों में वह आपके ही अमर गीत गाती है।

10. 'डल' झील में शिकारे(3) द्वारा सैर करना देख। हे 'वीर' ! 'वुल्लंर'(4) के शिकार (पक्षी) देख। मुझे तो 'अहरा बल' के ऊपर (कौंसरनाग) में 'सिन्धु' नदी का बहाव तथा चाल-डाल दिखाई देती हैं।

(14 मार्च, 1966)

फैशन

जिस घर में तथा जिस आंगन में फैशन प्रवेश कर गया। वहाँ वह अपने साथ ईषा, विष तथा वैर भाव साथ लेकर आया। आप तो प्रकृति-पुरुष होकर स्वयं सहज़ानन्द तथा सीधे-साधे सुन्दर मनुष्य थे परन्तु फैशन से आपने अपना मनुष्य रूप ही बिगाड़ दिया। अतः फ़ैशनपरस्ती को छोड़।

---

1. एक लोक कथा में एक 'परी' का नाम। 2. एक लोक कहानी की नायिका। 3. छोटी नाव। 4. प्रसिद्ध झीलें (डल, वुल्लर)।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नज़मुॅ

(1)
पो'त कल

माऽल्य् मिरासुॅकि हंग कुठि म्याने
कोताह लिविथ डुविथ रचनाव्योमख
ज़ाऽज तुजेयम वाऽज पुरेयम
नचुॅ दी दी
लबन कऽरिथ गंगुॅ वान्युक रंग
रोगन फश दिथ
हाऽशी त्राऽविथ
नपुॅ नाव्योम लबुॅ चाख
तगे ठपाऽविथ दिलुॅ संग फोटू
बुथि बुथि वुछ्य् वुछ्य्
ब्यहनाव्येयम तिमुॅ संग सूरऽच़
पननिस लाऽविस सीनस मंज़।
पननि वजूदुक न्यरल तुॅ न्यऽशब्वद
शूच़ तुॅ शो'द व्वंदुॅ
को'रुम परागंदुॅ
शखसा ओसुस रखुॅत मे' बदलिम
बन्योस व्वनमत शखुॅस परस्त
थो'कमुत छ्यो'नमुत, हवस गछ़ान छुम
छाऽरिथ अनुॅहा तिमय
ज़रुॅल्य् सुॅद्य् ज़ाल
तुॅ मडुॅहा कुठ्य् कूनन कुन
डुवुॅ हा लिवुॅ हा गुरुॅ म्ये'चि़ सूॅत्य्
प्रथ अंदुॅ यियि हन मुशकुॅन्य् अदफ़र
मुअत्तर मुअत्तर
बे ढंग
बे ज़र
बेहतर
बेहतर

(28 जुलाई, 1986)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नज़में (कविताएँ)

(1)
पुरानी यादें

पैत्रिक संपत्ति में मिले हे मुख्यद्वार के ऊपर वाले कोष्ट[1] !
मैंने लेपापोती करके तुझे कितना ही सुंदर बनाया था,
मकड़े की जालियां हटाईं थीं।
चूहों के बिल, चीथड़े ठोंक-ठोंक कर बंद कर दिये थे।
दीवारों पर गंगा के पानी के साथ मिलाकर रंग पोता था।
रोगन का लेपन करके तथा किनारियाँ छोड़कर हाशिये छोड़ दिये थे,
चारदीवारी को चमकाया था।
पत्थर दिल फोटो पंक्तिबद्ध करके सजाकर,
उनके मुखड़ों को अपनी ओर सम्मुख करके उन्हें तकता रहा।
उन पत्थर की बनी मूर्तियों को
अपने नन्हें सीने में बिठाया था।
अपने अस्तित्व का निराला तथा मासूम,
पवित्र तथा शुद्ध मन मलिन बनाया।
व्यक्ति था मैं और फिर अपने रूप बदलता गया
बन गया उन्मत्त तथा व्यक्ति पूजक
थका मांदा टूटा हुआ मैं कामना करता हूँ
फिर से ढूंड लाऊँ
वही मकड़ी के जाल
और उस कोष्ट के कोनों में चिपकाऊँ
झाड़ू मारके लेपन करूं पीली मिट्टी से
ताकि प्रत्येक दिशा से अदफ़री[2] सुगंध आये
इतर की सुगंध जैसी
बे तरतीबी के साथ
बिना किसी ठाठबाठ या रख रखाव के
उत्तम
उत्तम[3]

(28 जुलाई, 1986)

1. कश्मीर में प्रत्येक पंडितघर में प्रवेशद्वार के ऊपर एक छोटी क़ोठरी होती है– हंग कुठ-जहां ठाकुर पूजा जाता है। इसे 'ठोकुर कुठ' भी कहते हैं। 2. एक सुगंधित इतर, महक वाली वस्तु।
3 प्राचीन संस्कृति के गुण।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(2)

साऽन्य् वथ

-1-

वथ साऽन्य् छे' प्रानि ति प्राऽन्य्
नवि ख्वतुॅ नऽव नुंदुॅ बाऽन्य्
अम्युक स्यथुर सनि खोतय सो'न
कनि[1] खोतय सख
थनि खोतुॅ नरुॅम
अथ पथ कालुॅकि पातालुक कऽन
आशन हुंद तारख नब सायस
प्यठुॅ कनि हदुॅ रो'स थो'द आकाश
अऽद्य् अंद्य् अंदुॅ वंद सायि शिहिलय् कुल्य्
पदि पदि मायि सरायि तुॅ कुठ्य्
दयायि अहिंसायि हुंजुॅ कुटय्यायि
रे'शन बाबन हुंजुॅ मिलुॅ कनि
अमन मसा वातुक पाऽगाम
प्रथ कांह वतुॅ गथ
अथ वति पकनस क्युत आज़ाद

-2-

व्वन्य् ज़न थवि कांह रऽट्य् तुॅ रुकावटुॅ
दरुॅ गऽड्य् गऽड्य् गछ़ि रोटुॅ सु पानय
वथ साऽन्य्[2] प्रथ विज़ि ज़िंदाबाद

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1. नि = ञि। 2. न्य् = ञ।

(2)
हमारा पथ

-1-

पथ हमारा प्राचीन से भी अति प्राचीन
नवीनतम अति नवीनतम सुंदर
इसका फर्श[1] गहरा अति गहरा
भूतल पत्थर से भी कठोर
मक्खन से नर्म
इसकी नींव अतीत के पाताल की है
आशाओं का तारों भरा आकाश इसकी छत्र छाया
ऊपर अनंत गगन असीम आदि से अंत तक
छायायुक्त ठंडे वृक्षों से सीमाबद्ध किनारे इसके
पग-पग पर प्रेममय सरायें तथा कोष्ठ
दया तथा अहिंसा की कुटियायें हैं
ऋषियों, सूफ़ी संतों के मील पत्थर
शांत तथा समानता का संदेश
प्रत्येक पथिक
इस पथ पर चलने को आज़ाद[2] है।

-2-

अब यदि कोई बाधाएँ तथा रुकावटें खड़ा करे
बंदिशें बाँध बाँध कर वह स्वयं ही बंध हो जायेगा
हमारा पथ हर समय अमर जो है।

---

1. ज़मीन (Floor)। 2. स्वतंत्र।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-3-

हति वति यथ वति ज़ख ह्युन वात्या
स्वनुँ सायि कुल्यन मख वायुन
हंगुँ मंगुँ यंगुँ ह्युन मूलन शूब्या
शिहिल्य् सरायन पोरस पोर खारनुँ बदलय
यड़ कूरॅन्य्
ख्वनुँ वटुँ ख्वड़ खऽन्य् खऽन्य्
थऽर कोंड़ फुटरुन
कऽन्य् कऽन्य् वाटनुँ बदलय प्राटुन कऽन

-4-

व्वन्य् द्रायि स्व बुध शठवार
तुँ लऽट्य्दार तारुख लूस
ड़ो'ल सायि तम्युक मनहूस
नो'व सुबुह पनुन गाह त्रावुँनि लो'ग
न्यऽदरि वुजुँनि लऽग्य्
वति हुंद्य् सोख़तुँ गऽमित्य् छ्वकुँ दाऽव्य्
मुसाफिर
राऽच़ हुंदिस गटुँ गुँहलिस मंज़
ह्यनुँ आमुँत्य् अऽस्य् छऽकरनुँ आमुँत्य्
हो'ति ये'ति सो'त्य् सो'त्य् अऽस्य्
व्वटुँ सऽस्य् न्यऽदरॅ करान
मो'मचि़ ग्वलाऽमी हुंद सुय वहशत
खोफ़ तुँ दहशत खाबन मंज़ यिथ
नवि सरॅ फिर्य् फिर्य् त्रहरावान
प्रथ पानस प्रथ सायस प्रक्च़न च़ामुँत्य् भूत
न्वकरि कऽरिथ नस्तन नस्तन
नवि सरॅ बासान ज़ंजीरॅ ग्वडन
CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri
फाऽस्य् हट्यन

-3-

सौ-सौ प्रकार से इस पथ को क्या हानि पहुंचानी चाहिए?
सुनहरी छाया वाले वृक्षों को कुलहाड़ी मारना
तथा अकारण जड़ों में हींग लगाना[1] क्या शोभा देता है?
छाया देने वाली सरायों[2] को छत पर छत डालने के
बदले पेट ही चीरना
कुहनी से गड्डे खोदकर (काफ़ी यत्न करके)
रीड की हडी ही तोड़ना
पत्थर से पत्थर जोड़ने के बदले
नींव ही उखाड़ फैंकना क्या शोभा देता है?

-4-

अब वह बुध शठवार[3] समाप्त हुई है
तथा दुमदार[4] तारा डूब गया है
उसकी क्रूर छाया टल गई
नव प्रभात ने अपना प्रकाश डालना आरम्भ किया है
नींद से जागने लगे
रास्ते में तपे प्यासे घायल पथिक
रात्रि के घने अंधेरे में
फंसे हुए हम बिखर पड़े हैं
इधर-उधर अधमरे पड़े हम
अधखुली आँखों से नींद कर रहे हैं
मरी हुई पराधीनता का वही त्रास
भय और आतंक स्वप्नों में आकर
नए सिरे से पुनः त्रासित करता है
प्रत्येक शरीर प्रत्येक साये की प्रकृति में
भूत-प्रेत प्रवेश कर गये हैं
हम अपनी नाकों को रस्सियों से बंधी पाते हैं
तथा पुनः पैरों में ज़ंजीरें और ग्रीवाओं में
फांसी के फंदे प्रतीत होते हैं।

---

1. हींग लगाने से पौदा सूख जाता है। 2. पथिकों के ठहरने के लिए भवन (Inn)। 3. क्रूर ग्रह।
4. धूम्रकेतु।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-5-

आज़ाऽदी सान वुनि ति छु न्यथ ह्यो'न आम
ग्यल वाऽलिथ वुनि पांऽसुॅ बनावुन बो'ड हशमत
सियाह कारव सियाह द्यारव
सूॅतिन गरुॅ व्यठ स्वम्ब्रावुॅन्य्
ड्रे'गजल दुनियादाऽरी हुंद व्यो'ठ बोड़ मडुन
दरवाजुॅ हंगस
फिरेबकाऽरी मक्काऽरी हुंद
अख़बाऽरी गुमराह गलगोश
सियाह सफ़ेद चूरि थावनुॅ म्वखुॅ
अख अऽक्य् सुंद हो'ट व्वज़लावुन
मंदुॅ छावुन आदम ज़ाद
सादुॅ मनोश

-6-

अऽत्य्नुॅय ऐटम बम त्रहरावान
अऽत्य्नुॅय कलुॅ प्ये'ठ्य् तारख जंग
इनसान कुन ज़ानुन मनसाऽविथ
ब्यन ज़ानुन आज़ाऽदी छा
असली मुजरिम यलुॅ त्रावुन आज़ाऽदी छा
बनुॅ गऽड्य्-गऽड्य्, वति-वति छ्यन थावुन
ज़्येऽवि हुंद्य्, पे'जि पुरुॅनि हुंद्य् रंग रोदादुॅक्य् ठऽर्य्
नसलुॅक्य् ठऽर्य्
मशीदुॅ मंदरुॅक्य्
गुरुद्वारुॅक्य् ठऽर्य्
छ़्वचि़ ये'छि़ पछि़ हुंद्य् दनुॅ द्यारुॅक्य ठऽर्य्

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-5-

अभी भी स्वछंदता के साथ शोषन आम है
चमड़ी उतार कर पैसा बनाना अभी भी आदर की बात है
काले करतूतों और काले धन से
घर का सामान एकत्र करना
धनाड्य् दुनियादारी का मोटा बोर्ड
अपने दरवाज़े के ऊपर चिपकाना[1]
फिरेबकारी और मक्कारी से भरा हुआ
अखबारी कौतूहल जो पथभ्रष्ट कर देता है
सियाह और सफ़ेद[2] छुपाने के लिए एक दूसरे
का गला काटना तथा 'आदम'[3] के पुत्र मानव को
लज्जित करना आम बात सी है
जो मानव कि एक साधारण मनुष्य है

-6-

अभी इधर से अणु बम भय उत्पन्न करता है
तो अभी उधर सिरों के ऊपर
सितारों[4] का युद्ध त्रासित करता है।
समस्त मानव जाति को समान रूप से मानने क़ी भावना त्याग कर
यह भिन्न-भिन्न प्रकार का मानना[5]
क्या यही आज़ादी है?
असली अपराधी को छोड़ना क्या आज़ादी है?
दीवारें खड़ी करके रास्तों पर बाधाएँ डालना;
भाषा, क्षेत्र तथा बस्ती और रंग नसल की
बाधाएँ ;
मंदिर, मस्जिद तथा गुरुद्वारे की बाधाएँ,
खोखली श्रद्धा एवं विश्वास तथा
धन संपत्ति की बाधाएँ ;

----

1. बड़ा बनने की चेष्टा। 2 सत्य और झूठ। 3. मनु। 4. Star war. 5. भेदभाव।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

टगि प्यठ लाउड़स्पीकर चाऽरिथ
दयुँ गरुँनुँय मंज़
तुंद गुफ्ताऱुँक्य् ठऽर्य्
आज़ाऽदी छा?
आज़ाऽदी गऽयि वति हुंद प्रथ कांह ठो'र कासुन
आज़ाऽदी गऽयि सोरुय आलम कुन बासुन

-7-

वति वति सियाह तखतियुँ हे'य हे'य
जलूसुँ जलसुँ तुँ कनि पथराव
प्ये'जि खऽसिथ खंजि कर वुँनिबावऽच़
पतुँ कनि डखि थाऽविथ बदसूरत
मकसदुँ मोकल परदस तल
वथ छनुँ खोचान यिहंद्यन नारन नालन
बाज़ाऽरी डांबल हड़तालन

-8-

ह़वसुँकि तापुँ छु मगज़न मगज़न
क्रूदुँ सऽदुँर ग्रकवान गज़ब
नफरऽच़ हुंदि आकाशुँ छु नेशुक कालुँ ओ'बुर
थाह लाऽयिथ अंदुँ वंदुँ फाऽह्लान
मोतुँय मोत!
"शाऽंती! शाऽंती!! शाऽंती!!!"
गरुँ गरुँ पाठ पऽरिथ
नब छु अशाऽंती– रुदुँ फुसर तऽच़ वरशावान।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिद्वन्दता के भाव[1] से वशीभूत होकर लाउडस्पीकर लगाए हुए
ईश्वर के घरों में[2] ऊँचे स्वरों में वक्तव्यों की वाधाएँ,
क्या यही आज़ादी है?
आज़ादी होती है पथ की प्रत्येक बाधा हटाना
आज़ादी होती है सारा विश्व एक समझना।

-7-

प्रत्येक रास्ते पर काली तख़्तियाँ लेकर
जलसे जलूस तथा पथराव;
मंच पर चढ़कर हृदय विदारक वक्तव्य–
जिनमें निहित
तकिये जैसा सहारा बना कुरुप स्वार्थ रूपी दैत्य
परदे के पीछे है।
पथ तो इनकी नाराबाजी,[3]
चिल्लाहट के साथ दुहाई देने[4] तथा बाज़ारों की
पाखंडी हड़तालों से डरता नहीं है।

-8-

लालसा रूपी धूप के प्रचंड से मस्तिष्कों में
क्रोध का भयावह सागर उबलता रहता है
तत्पश्चात् नफ़रत[5] से भरे हुए आक्रोश से
बदला लेने की भावना का काला मेघ
आकाश में चारों ओर फैलकर ग्रास
कर लेता है।
यह तो मृत्यृ ही मृत्यु है।
'शांति ! शांति !! शांति !!!
प्रत्येक घर में इस पाठ का उच्चारण होके भी
आकाश अशांति की गर्म उबलती वर्षा बरसाता है।

---

1. मुकाबलाबाजी। 2. मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे। 3. Slogans 4. फ़रियाद।
5. वैरभाव, नफ़रत।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-9-

पूर्य् किन्यथ व्वन्य् गाशुर खसि
गाह त्रावि च़्वपाऽर्य्
म्यनि दिलावर वति हुंद्य् नक़ली जिन तुॅ
ड़े'ठायक तसरुफ़दर
अख अऽक्य् सुॅय ख्यन खून रगन चन
व्यगलन व्वन्य् तुलुॅकतरिक़्य् पाऽठ्य्
तुॅ सपद़न राऽस्य्
मुसाफ़िरन व्यन्य् बासि यि वथ पननी
मऽज़िल मोजून
याद प्ये'यख पथ काल पनुन स्वनहाऽर्य् म्वलुल
याद पे'यख गंगायि तुॅ वे'थि हुंद म्युल मीरास
याद प्ये'यख ज्ञानुक विज्ञानुक नो'व यखलास

(7 अगस्त, 1986)

काऽशरे'न हुंदि बापथ लेखनुॅ आमुत महागीत
"सती सरस छु बार-बार सोन नमस्कार..." छु
'वनवास' कैसेटस
मंज़ सहगान रॅपस मंज़ ग्यवनुॅ आमुत।
अथ गीतस मंज़ छे' कऽशीरि हुॅंज़ि तहज़ीबी वरासऽच़ हुॅंज़
ज़ानकाऽरी करनुॅ आमुॅच़।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-9-

पूर्व से अब सूर्योदय होगा तथा चारों ओर
प्रकाश ही प्रकाश फैलायेगा
हमारे शक्तिशाली पथ के नकली जिन तथा
भूत प्रेत एक दूसरे की ही नस नस का
रक्त पान करेंगे। वे अब यख़[1] की तरह
पिघल जायेंगे तथा मिट्टी में मिल जायेंगे।
पथिकों को तो यह मार्ग अब अपना ही पथ
दीख पड़ेगा।
उनको गंगा तथा वितस्ता का मिलन
अपनी पैत्रिक संपत्ति याद आयेगी।
उनको ज्ञान तथा विज्ञान का नया प्रेममय संगम
याद आयेगा।

(7 अगस्त,1986)

कश्मीरियों के लिये लिखा गया 'महागीत'
"सती सरस छु बार-बार सोन नमस्कार..."
(सतीसर कश्मीर प्रदेश को हमारा बारंबार नमस्कार हो)
'वनवास' कैसेट
में सहगान के रूप में गाया गया है।
इस गीत में कश्मीर की संस्कृति से अवगत कराया गया हैं।

1. जमा हुआ पानी या बर्फ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(3)

ब्वद फलसफ़ु ये'ति द्रदुॅ गंगायि।
अऽस्य् मऽत्य् वऽल्य्मित्य् लोलन मायि।।

शबनऽम्य् त्यहजन म्वखुतुॅ ज़िहिल्य् फे'र्य्।
सरुॅ सरुॅ नूरुॅक्य् गरुॅ व्वज़ल्यायि।।

थ्यऽच नुॅ क्वलावाऽली पथ कालुॅच।
पऽच ये'ति प्रथ काँह क्वल नवि आयि।।

अऽस्य् व्वन्य् मंदान ज़िस्य् दिथ सऽदरन।
रऽतनन हुँजुॅ चाऽगिजुॅ अथि आयि।।

न्यऽश्बो'द्य् शुर्य् वऽथ्य् वति वति लुकमान।
व्वथुॅ वुॅन्य् कूॅत्या 'सुय्या' ज़ायि।।

ज़िन्य् मूजूरन कऽम्य्ल्यन शामन।
दूरिकि दरशनुॅ दिल व्वलस्यायि।।

दोंछ़ान तारख नब छि हनूमान।
दजुॅ 'वीरन' लजुॅ स्वनुॅ लंकायि।।

(12 अगस्त, 1986)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(3)

1. बुद्धि तथा दर्शन[1] यहां दूध-गंगाओं[2] की भांति बहती हैं। हम मतवाले प्रेम तथा लगाव से ओतप्रोत हैं।

2. सब्ज़ घास के तिनकों के ऊपर ओस की रसीली बूंदें मानो मोती जड़ी हैं। प्रत्येक झील तथा सर से प्रकाश-ग्रह[3] चमक उठे हैं।

3. अपने कुल की प्रशंसा का बखान करने के बिना ही यहां प्रत्येक नदी अपनी नई चाल से बहती रही।

4. हम तो अब सागरों को छेद-भेद कर समुद्र मन्थन करते हैं। तभी तो हमें रत्नावलियां[4] हाथ लगी हैं।

5. यहां का प्रत्येक अबोध शिशु पग-पग पर 'लुक़मान'[5] उत्पन्न हुआ है, तथा कितने ही उभरते बच्चे 'सुय्या'[6] जन्मे हैं।

6. लकड़हारों तथा किसानों की दिनभर की थकान सायंकाल को दूरदर्शन दूर करता है तथा उनके दिलों को हर्षाता है।

7. कितने ही हनुमान अब तारों भरे आकाश को फाँदते हैं। यद्यपि सोने की लंकायें जल गईं परन्तु 'वीर' ने उनको फिर निर्माण किया।

(12 अगस्त, 1986)

---

1. फ़लसफे। 2. आकश गंगा, दूध की गंगा। 3. बिजली घर। 4. चाऽगिज = छोटी चटाई। 5. एक विदेशी बुद्धिमान वैद्य। 6. एक इंजीनियर।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(4)

यादाश

भरतुॅनि दरती हुँदि महासागरुॅ
क्या गरुॅ याद छुया किनुॅ मऽशरोवुथ
रलुॅ मिलुॅ ताहदार तहज़ीबुॅकि सरुॅ
क्या गरुॅ याद छुया किनुॅ मऽशरोवुथ
तपुॅ वनुॅ हिमालुॅ जटुॅ कलुॅ शंकरुॅ
ड्यकुॅ बडि कारि व्वगुॅनि ख्वपुॅ संगरुॅ
गंगोतरुॅ नेछे'ति पो'त मंज़रुॅ
बालन हुँदि शिनुॅ मालिनि थज़रुॅ
नालन आरन सबज़ारन सरुॅ
चाने असनुॅक्य् पोशे अंबर
लसनुॅचि बूटि तुॅ मुशकुॅन्य् अदफर
तिरथन, नागन, बागन हुँदि रस दिवताहुॅ इंदरुॅ
अज़ीम परबतुॅ असीम ज्ञानुॅकि दयायि–ध्यानुॅकि आगरुॅ !
याद छुया?
याद छुया कनुॅ प्यठुॅ पऽच गंग तुॅ जमन जरुॅ
करनुॅ फिर्यव प्यठुॅ मोतुॅकि युपि
सऽहलाऽब्य् अपुज़ अडहाख[1] सपुद यिरुॅ

1. 'अडहाख' वह लकड़ी, वृक्ष की कटी शाखें इत्यादि जो भाड़ अपने साथ बहाता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(4)

संस्मर्ण

भरत[1] की धरती के हे महासागर!
क्या तुमने अपना घर याद रखा है या कि भूल डाला?
मिली-जुली संस्कृति के रे सरोवर!
क्या तुझे अपना घर याद है?
या कि भूल डाला?
हे तपोवन के हिमगिरि पर्वत, जटाधारी शंकर!
हे विशाल ललाट तथा ऊँची ग्रीवा वाले
चांदी की हिमश्रृंग मालायुक्त हिमालय!
हे गंगोत्री की पिछली ओर के श्वेत वर्ण वाले
हिम पर्वतों के दृश्य!
हे हिम कोष पर्वतों की ऊँचाइयो!
नदी नालों तथा सब्ज़ज़ारों[2] में तुम्हारी ही
मुस्कान के पुष्प अंबार अनुभव होते हैं। यहां ही
जीवन दायक जड़ी बूटियाँ तथा अदफ़री[3] सुगन्ध है
हे तीर्थों, चश्मों तथा बाग़ों को रस देने वाले इन्द्र देवता चाँद[4]!
हे महान पर्वत हिमालय!
असीम ज्ञान, दया, ध्यान धारना और
प्रेमभाव के स्रोत!
क्या याद है तुम्हें?
क्या याद है तुम्हें कि कब से गंगा तथा यमुना नदियाँ
पथगामिनी रही हैं?
जब करणों[5] के फेरबदल अर्थात् आदिकाल से ही
मृत्यु रूपी जलप्लाव[6] में भाड़ ग्रस्त असत्य के
उखड़े हुए वृक्ष तथा झुंड इत्यादि चूर्ण बनकर बह गए

---

1. दुष्यन्त शकुन्तला का पुत्र 'भरत' के नाम पर हिन्दुस्तान का नाम भारत है। 2. घास के मैदान। 3. अदफ़र एक इतर का नाम। 4. इन्द्र, चन्द्रमा। 5. नई सृष्टि से पहले प्रलयकाल जो युगों की समाप्ति पर होता है। 6. प्रलय काल की भाड़।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

न्यरल तुॅ न्यरमल पज़थ्युक अमर्यतुॅ वोन्य् सपुद खरॅ
याद छुया?
का्ऽलासस प्यठ वसुॅवुन ईशर
बसुॅवुन शिव हर
खसुॅवुन रव अभिनव गुप्तस ह्यू ये'ती सती सरॅ
याद छुया?
ग्वफायि ग्वफायि रे'श्य् तुॅ मुनीशर
सतुॅमरॅ हतुॅमरॅ
रे'श्य्तिस पाऽर्य् तुॅ दरशन तंत्र
प्वस्तक ब्वक्तरॅ
जंत्र मंत्र
याद छुया?
नकुॅश नकुॅश सऽन्य् सऽन्य् खऽन्य् खऽन्य्
थऽव्य् मोहन्जूदरॅ
हडपा खंडहरॅ
कुनारकुॅ मंदरॅ
बुद्ध सुंद्य् शुद्ध उपदेश कन्यन श्रे'प्य्
ताशकंदुॅ तिब्बतुॅ खतनुॅ काशगरॅ
हिंसा गाऽज
अहिंसा पाऽज
अशोक चक्करॅ
सीमिनि छ़ावुॅजि त्रेश चे'यायि अकी सरॅ
रामुॅन्य् सीता

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तत्पश्चात् निराला तथा निर्मल सत्यता का अमृतजल
प्रकट हुआ
क्या तुझे याद है?–
जब कैलाश पर्वत पर अवतरित ईश्वर,
बसता हुआ शिव, हर, शम्भु,
अभिनव गुप्त जैसा चढ़ता सूर्य यहीं सतीसर[1] काश्मीर में उत्पन्न हुआ
क्या तुझे याद है?
गुफा गुफा में ऋषि तथा मुनिवर, सप्तऋषि या
शत शत ऋषि कश्मीर भूमि से जुड़े थे
उस ऋषियत पर बलि बलि. जायें
और वे दर्शन ग्रंथ, तंत्रों पर लिखी हुई बड़ी-बड़ी
पुस्तकें और भाष्य,
जंत्र-मंत्र जैसे ज्योतिष केन्द्र,
क्या तुझे याद है?
वह समय जब हमने वास्तुकला को गहराकर
पत्थरों पर खुदवाकर रख दिया।
जो कि मोहन्जूदारु और हड़प्पा के खण्डहरों तथा
कुनारक मन्दिरों में आज तक विद्यमान है।
बुद्ध देव[2] के शुद्ध उपदेश
ताशकन्द, तिब्बत तथा काशगर में
पत्थरों पर अंकित होकर रह गए
अशोक चक्कर द्वारा
हिंसा मारी और
अहिंसा पाली।
शेरनी तथा बकरी ने एक ही सरोवर तट पर इकट्ठे
पानी पिया था।
श्री रामचन्द्र की 'सीता' जी तन रूपी सरोवर में बस गई।

1. कश्मीर का प्राचीन नाम सतीसर है। वह पहले झील थी। 'सती' शिव की पहली बियाहता पत्नी का नाम है। 2. गौतम बुद्ध।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कृष्णॅन्य् गीता
बसेयि तन सरॅ
वुज़ेयि मन सरॅ
पाक पवित्र नारी चॖरितरॅ
वुछ्य् वुछ्य् आलम हाऽरान व्यसमरॅ
'ललॖॅ', 'मीरायि' छे' त्यागॖॅचि मूरचॖॅ
लोलॖॅचि द्वखतरॅ
'लक्ष्मी बायि' 'इंद्रायि'
बलावीर दिलावरॅ
याद छया?
नर तऽक्य्यन हुँदि कथक नचॖनॖॅ
स्वरनयि तुरयन हुँदे सति स्वरॅ
यूगॖॅ वुन्यों'दुर न्यऽदॖॅरि पावान
कर्मॖॅकि दरमॖॅकि थानॖॅ तु मंदरॅ
बूगस मंज़ ति छि स्वम्ब्रिथ पान
पछानन ज़रॅ ज़रॅ
ज्ञानॖॅ प्रकाशस मंज़ ति सजावान
विज्ञानुक गरॅ
अमर्यत नानक सरॅ हरॅ मंदरॅ
दशॖॅ ग्वर वाऽनी गरदिशि अंदरॅ
आकाऽशी रवकन क्वछि अंदर
अशोक चॖऽदर,
'बडशाह', अकबर सुँदि गरि
ज़ामॖॅति गंदरॅ
याद छुया?
किनॖॅ मऽशरोवुथ !!!

(28 अगस्त, 1985)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

श्री कृष्ण की 'गीता' मन रूपी सरोवर से उमड़ पड़ी।
यहां का पवित्र पावन नारी चरित्र देख-देखकर
सारा संसार विस्मय में पड़कर चकित रहा।
'ललेश्वरी'(1) तथा 'मीराभाई' जैसी नारियां
त्याग की मूर्तियां तथा प्रेम की
सुपुत्रियां उत्पन्न हुईं।
'लक्ष्मीबाई' तथा 'इन्दिरा गांधी' ज़ैसी बलवती
तथा साहसी नारियां
क्या तुम्हें याद हैं?
नर्तकियों के कथक नृत्य,
'शहनाई' तथा 'तूरय' नामक वाद्य के सात स्वरों
द्वारा संगीत,
योगाभ्यासयुक्त जागरण(2),
कर्म तथा धर्म के स्थानों
और मन्दिरों में मानो निद्राग्रस्त करता है।
भोग में भी अपने 'स्वयं' को एकत्रित
अर्थात् एकाग्रचित करके अपने आप को पहचानते हैं।
ज्ञान के प्रकाश में भी हम विज्ञान का घर सजाते हैं।
अमृत भरे नानकसर (अमृतसर) के हरमन्दिर में
दस गुरुओं की वाणी गुंजायमान रहती है
ये गुरुवानियाँ आकाश के वायुमंडल की कोख में अमर हैं।
महाराजा अशोक, ज़ैनुल्लाबिदीन बडशाह(3),
तथा सम्राट 'अकबर' के घर में उत्पन्न हुए
हे गन्दर्व रूपी नवयुवक!
क्या तुझे यह याद है
या कि भूल डाला?

(28 अगस्त, 1985)

---

1. कश्मीर की सुप्रसिद्ध कवित्री, 'ललद्यद' लल माऽज, पद्मावती उसके नाम हैं। वह शिव योगिनी थी। 2. योगनिद्रा। 2. कश्मीर का एक प्रसिद्ध मानववादी बादशाह जिसने भगाए गए पंडितों को वापस लाया था।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(5)
वापसी

तुल बुरुश तुल
यि तसवीर ति ना तसवीर बनाव
रंगन हुँज़ चाऽर मिटाव
सियाह सफेद रॅखन हुंद हजूम कर गाऽब
सियाहस सफ़ेद रलाव
तुल बुरुश कर कुनुय ज़मीन असमान
फितरतस बे'यि पनुन हो'सुन बखशाव
जुज़ कुलस मंज़ छि वोखुँ ह्यनुँ आमुँत्य्
ये'मि निज़ामुक हिशर खरॅवुन
तुँ ज़रुँ तरतीब
बद निज़ाऽमी हुँद्यव अथव बदलाव
जुज़ कुलुँक्य् बे'यि ये'त्यन हो'त्यन छऽकराव
हसीन बनाव
बुथ्य् छि अज़लय बे'सो'म्य्
व्यकाऽर्य् बन्याय
व्यकारुँ शाऽयिस्तुँगी हुँज़ चम
बुथिच जुँलिथ नाहनाव
ख्वखरि तहज़ीबुँक्य् पखाँडुँ परदुँ प्वशाख
हदूदुँ हाऽशयुँ
क्रहनि कलमुँ बे'यि क्रहनाव
तुँ ना तसवीर बनाव

(30 दिसम्बर, 1984)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(5)
वापसी

उठाओ ! बुरुश, उठाओ
इस चित्र को अचित्र बना डालो
रंगों की पहचान मिटा दो
श्याम श्वेत लकीरों की भीड़ अदृश्य कर डालो
श्याम रंग के साथ श्वेत मिला लो
बुरुश उठाओ तथा आकाश पृथ्वी एक कर दो
प्रकृति को अपनी सुंदरता पुनः भेंट करके वापस लोटा दो
अंश पूर्णतः अखिल[1] में असुंदर ढंग से फंस गए हैं
इस संगठन की बद्धी अर्थात् अप्रिय समानता[2]
तथा अंशों की क्रमबद्धता,
असंगठन के हाथों
से बदल दो
पूर्णता अर्थात् अखिल के अंश[3]
इधर-उधर बिखेर दो।
और सुन्दरता भर दो इनमें
चेहरे तो प्राकृतिक स्वभाव से ही
असमान हैं।
अब उनमें विकृति हुई है
आदर तथा सदाचारमय चेहरे की
कृत्रिम परत खुरच-खुरच कर मिटा दो।
खोखली संस्कृति के पाखंडयुक्त परदे
तथा वस्त्रावर्ण
तथा इसके सीमाओं रूपी किनारों को
काली सियाही के कलम से
पुनः काला कर दो
और अचित्र बनाओ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(30 दिसम्बर, 1984)

1. Whole. 2. Monotony. 3. Parts.

(6)

सथ

-1-

तारामंडलुँकि स्वंदर तारा च़ऽंदरुँ!
वुछथा मातम ज़द इनसान बिचोर
छिंदर्योमुत पनुँ पनुँ कमज़ोर
चा़लि क्वकालि यि काऽचा मुश्तुँ मुकालि चपाऽच़
कुठरेमिति समयिचि ज़ंजूरि ग्वडन
अथुँ खोर गऽंडिथ
पनुँदावन कुन आवेजुँ अवेज़ान
सोंचन हुंजुँ अछिदारि नचा़न
ब्रोंह कनि सुँथरुँ ख्वना खुर्य लद छस ज़िमुँ
छस ब्रय आमुँच़
चा़पुन क्युत च़ऽंद्रायुन छुस
नाऽल्य् गोमुत गरुँ हागुँर्य् ओल तुँ मोल बऽनिथ
नंगुँ न्यथुँ नो'न शुर्य् बो'क
ब्रोंठुँ कन्यथ आँपस क्रेशान
त्रेशल वुठ फेशान
माजि वराऽय ब्य्तसला ज़न
खोरान छिख कन
अऽछ दरुँ लज मचुँ छख वदान वदान
असमानस कुन
द्यव वसि कुनि किन्य् आकाऽशी गंग
द्रदुँ क्वलि हुंद्य् थन
नऽन्य् द्यव नेरन
हिक्य् रऽट्य् मित्य् श्रवक्न्यन चा़मुँत्य शुर्य्
बस अकि लटि ब्यमि
म्वमुँ दाम चे'हन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(6)
आशा

-1-

हे तारामंड़ल के सुंदर ताराचन्द्र!

क्या देखा मातम में डूबा हुआ बेचारा मानव जो भयभीत होकर तार तार
और निर्बल पड़ा हुआ है। यह इस कुसमय में कितने मुक्के, मुश्ते[1] और
थप्पड़ सहन करेगा। इसके पैरों में कठोर समय की श्रृंखलाएं हैं
तथा हाथ पांव बंधे हुए हैं।
इसकी कल्पनाओं की गुड़ियाँ गुडे धागों की दासता के साथ लटककर नाचते हैं।
सामने सूत के धागों का ढ़ेर पड़ा हुआ इसके ज़िम्मे है
जिसमें उलझाव ही उलझाव है तथा गुत्थियों में बिखराव है।
उसे चबाने के लिए चांद्रायण वृत का सा आहार है।

उसके गले में घर रूपी 'हागर'[2] नामक पक्षी का घोंसला लटका पड़ा है
और स्वयं यह पिता बना है जिसके सामने नंगे और वस्त्रहीन
बच्चों की टोली दाना-पानी के लिये तड़पती है
तथा प्यासे होंट चूसते यह बच्चे माता के बिना अतृप्त से हैं।
इनके कान आहट सुनके ही खड़े होते हैं।
रोते-रोते इनकी आँखें आकाश की ओर बंधी टिकी रहती हैं।
इस आशा से कि सम्भवत: कहीं किसी दिशा में 'आकश गंगा'[3] उतर आये
तथा उस दूध की नदी के स्तन शायद प्रकट हो जायें।
वे बच्चे गुड़कियों से ग्रस्त घर के कोनों किनारों में छिपकर काँप गये हैं
उनकी आकांक्षा है कि बस एक बार फिर माता के स्तनों से
दूध के घूंट पी लें।

1. बंद मुट्ठी से मारपीट करना। 2. कश्मीर में एक छोटे कव्वे की सूरत वाला पक्षी।
3. Milky way.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-2-

गुज़रेमिति सनुं !
ज़्यनुं विज़ि चे' दप्योहय राऽछ करोय
ख्यनुं विज़ि ख्योहय हरुं हरुं पान
चनुं विज़ि चोहय नाऽजन खून
राऽछ दरन हुंदि यिथि च़्यथ रछनुं
दय रऽछ्य् तन
ह्यनुंहार बऽनिथ छनुं असि किच़ लसनुंच
बाथ मगर
असि चोमुत अमर्यतुं वोन्य् सुली
व्वन्य् ज़हरुंक्य् गऽल्य् क्या हो'ट चीरन
पथ वनुक हिमालुक पतुंवथ डो'ख
गंगि हुंद ह्यू मनसर सॅदरुं सन्यर
पवन पो'थुंर आकाशुंक्य् नाद समीरुंन्य् सथ
यिम अज़ ति छि साऽनिस स्वतेमतिस
बेदार वजूदस व्वदनि रऽटिथ
अऽस्य् अज़ति छि आशावान गरीब
ग्रटुं पिह्य् पिह्य् नेरान परनि छनान
गुज़रान करान पनुं पार्यन मंज़
ख़्वददाऽरी हुंद्य् चरि आऽल्य् दऽरिथ
कऽड्य् खार्यन प्यठ
छ़े'यि हार्यन मंज़
आज़ाऽदी हुंज़ुं हिशुं हुंकचि करान
रऽव्य् बाऽथ ग्यवान
पतुं आज़ाऽदी हुंद ब्ये'यि काँह माने छ़ारान
आलुंम्य् ल्वग़तन मंज़

(16 दिसम्बर, 1984)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-2-

हे बीते हुए सम्वत्!
तुम्हारे जन्म पाते ही तुझे उन्होंने कहा था कि हम तुम्हारी रक्षा करेंगे।
परन्तु खाने के समय उन्होंने तुम्हारे शरीर की बूटी-बूटी खाई
तथा पीने के समय तुम्हारी नस-नस[1] से रक्त पिया।
रक्षकों की ऐसी सांत्वना से ईश्वर बचाए।
हम तो अब इस सीख[2] से
अवगत हुए कि यहां हमारे लिये ज़िन्दा रहने का कोई रास्ता नहीं है
परन्तु हमने तो बहुत पहले ही अमृत पिया है।
अब विष के घूंट हमारा गला क्या घोंट लेंगे।
हमें तो दूर-दूर तक फैले वनों तथा हिमलय का सहारा[3] आदिकाल से रहा है।
गंगा जैसे मनसर की सागर समान गहराई[4] है।
पवन पुत्र के आकाशीय नाद सुमेरु पर्वत की सी आशा है
जो आज भी हमारे थके टूटे परन्तु जाग्रत अस्तित्व को खड़ा रखे हुए है।
हम दरिद्र लोग पनचक्की में पिसे तथा छाननी से छाने जाते हैं।
तभी तो हम आज भी पत्तों से बनी झौंपड़ी में गुज़र-बसर[5] करते हैं।
चिड़ियों के स्वाभिमान रूपी घोंसले काँटों भरी झाड़ियों पर
तथा घासफूस के छत्तों में टिके हुए हैं।
इस दशा में भी हम 'आज़ादी' का सा नर्तन करते हैं
तथा रो'फ-गीत[6] गाते हैं।
तत्पश्चात् आज़ादी का और कोई अर्थ
संसार के शब्दकोषों में ढूंडते हैं।

(16 दिसम्बर, 1984)

---

1. नाड़ी। 2. Lesson सबक, पाठ। 3. Support. 4. गंभीरता। 5. जीवन व्यतीत करते हैं।
6. कश्मीरी लोक गीतों की एक पद्धति।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(7)

राऽत्य् रातस लाश म्याऽन्य्
वुतनि कलुॅ नलुॅ लेफ़ ह्यथ
मस न्यऽद्रि ज़न
दारि बर कमरस छि बंद
न्यऽबरिम्युक आलम दबंग
अऽंदरॅ गुहलिथ पॅतिमि पऽहरॅचुॅ गटुॅ
तुॅ कुठ्य् कूनस अंदर–
यख बस्तुॅ बिस्तर
मरदि रॅखुॅ दिथ दरबि द्रो'व
चऽश्मुॅ आऽखिथ आऽखिथुॅय बंद
कन वऽथी
शेंकान तुॅ प्रारान–
वुन्य् नुॅ वुन्य् गछ़ि कुॅर बरस
राऽसय अच़ख
चऽश्मुॅ बंद आऽसिथ
मे' हुथ बर चुॅरनि कुन दरॅ नज़रॅ रज़
वुन्य् अच़ख
वुन्य् वुन्य् अच़ख
ल्वति ल्वति तुॅ त्रावख पूॅर्य् सो'त्य्
त्रिसराय व्वथि वगुॅव्य् त्रिशन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(7)

रात भर मेरी लाश
ऊपर की ओर मुँह करके सिर से पांव तक लिहाफ[1] ओढ़ी हुई
ऐसी पड़ी है मानो गहरी नींद में हो।
कमरे की खिड़कियाँ बंद हैं दरवाज़े भी बंद हैं
तथा सारा बाह्य संसार गहरी नींद में पड़ा है।
कमरे के अंदर रात्रि के पिछले पहर का घना अंधेरा फैला हुआ है।
तथा कमरे के कोने में–हिमवत् ठंडा बिस्तर है।
जिसके नीचे 'दरब'[2] नामक घास बिछी हुई है।
और जिसके चारों ओर चूने की रेखा[3] अंकित है।
शव की आँखें झूठमूठ में बंद हैं
परन्तु कान खुले हुए हैं।
वे सुनने के लिए कातर तथा प्रतीक्षा में हैं
कि अभी न अभी दरवाज़े के धीरे-धीरे खुलने का शब्द–कर्र्र–होगा।
तुम तो चुपके से अंदर प्रवेश करोगे।
आँखें बंद किये हुए
मुझे, उस दरवाज़े की दरार की ओर
दृष्टि रूपी रस्सी बंदी टिकी है।
ऐसा लगता है कि अभी अंदर आओगे
और धीरे-धीरे पग-पग आगे बढ़ोगे।
फिर भी तुम्हारे चलने से
चटाई[4] की सूखी अकड़ी
तीलियों के दबने की आवाज़ें आयेंगी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1. शव। 2. रजाई। 3. कश्मीर में एक पवित्र घास उगती है जो धर्म कार्यों के अतिरिक्त मृत्यु शैय्या पर डाली जाती है, कुशा। 4. मरिद = चूना।

राऽसय अचख़
राऽसय तुलख
वऽथ्य् वानि कफ़नुॅच लूँट थो'द
अदुॅ ज़ानुॅ मदनवारुॅ आख
राऽसुॅ कफ़नस मंज़ अऽचिथ
लागख सरापा लाशि
वछसुॅय वछ, प्रकुॅच़ अचुॅहम
तुॅ नाऽठ्योमुत बदन वुश्न्यम
मुच़रुॅ अऽछ
मुच़रुॅ दंद
मुच़रावुॅ ज़्यव–
दूॅतन बुॅ वनुॅ–
लूको ! यि गव साईनस जदीद
मूद्य् प्रावान ज़िंदगी

(20 सितम्बर, 1978)

लेखक तुॅ कवि सुँजुॅ किताबुॅ तुॅ कैसेट मेलनुक पता :–

वीर पब्लिकेशंज़

94–तीर्थनगर 'बी', तालाब तिल्लो,

जम्मू–180002

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

धीरे से अंदर आकर
धीरे-धीरे मेरे अधखुले चेहरे से
कफ़न का एक छोर ऊपर उठावोगे।
तब मैं समझ पाऊं कि मेरा प्रियतम[1] आया है
फिर धीरे से जब तुम मेरे कफ़न में प्रवेश करोगे
तो मेरे सिर से पैरों तक सम्पूर्ण शव के साथ जुड़ कर
छाती के साथ छाती लगाओगे।
तुम प्रेतआत्मा की तरह मेरी प्रकृति[2] अर्थात् शरीर में प्रवेश करोगे
और मेरा हिमवत् ठंडा देह पुनः उष्णित होगा।
मैं आँखें खोल दूंगा
दांत ढीला छोड़ दूंगा
जिह्वा हिलाऊँगा–
और यमदूतों[3] को कहूंगा।
हे लोगो! यही आधुनिक विज्ञान है
जिससे मृत शरीर जीवन पाते हैं।

(20 सितम्बर, 1978)

लेखक तथा कवि की पुस्तकों तथा कैसेट के मिलने का पता :–

वीर पब्लिकेशंज़

94–तीर्थनगर 'बी', तालाब तिल्लो,

जम्मू–180002

1. कश्मीर के सरों में उगने वाली 'ज़ब घास' से 'वगुव' नामक चटाई बुनी जाती है। 2. मदनवार = कश्मीर की एक लोक कथा का नायक, प्रियतम। 3. कहावत है कि शव में यदि फिर जान आ जाये तो वह प्रेत प्रवेश करता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(1)

सियाह सफर

पथ कालुॅकि वथ हावन वाल्या !
पाव च्यतस ये'लि नावुॅ कनव निशुॅ
यलुॅ छुनथस
दो'पथम– वथ हावय
प्वहुॅ गटुॅ पऽछ्य् रोतुॅलि द्वह सपदी
न्यह गटुॅ काऽसिथ गाशा छावख
द्वदर्योमुत कुल बामुन प्रावख
भ'वुॅ सऽदरुॅ गुॅतन दिथ सीनुॅ
करान मां पूत्य् चुॅ पख
रामुन ह्यू सो'थ गंड़ खारुस ठऽठ्य्
नवि कऽदलुॅ तरी अदुॅ रेल–
जुॅ आलम येल यिनय
वातख मऽज़िलस

-2-

वतुॅ हावकुॅ ! व्वलुॅ वुछ अज़ कति छुख
कालुॅ प्यठय रज़ कनवो'ट ह्यथ
रुॅखि लोगुम जुव
नख आयम शानुॅ पिशम
ब्वाछि प्राचुॅ ह्वछम
पटरि बिछाव्यम

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(8)
सियाह सफ़र

-1-

हे अतीत काल के पथ प्रदर्शक !
याद करो वह समय जब आपने मुझे
पर्वतों के शिखरों पर पत्थरों के छिद्रों अर्थात् कर्णों[1] से बंधी नावों को
झील में तैरने के लिए खुला छोड़ दिया था।
उस समय आपने कहा था– "मैं तुझे मार्गदर्शन करूँगा।
पोष मास के कृष्ण पक्ष की काली अंधेरी रातें दिन में बदल जायेंगी
और तुम सूखे सड़े वृक्ष में नई कौंपलें फूटने के समान फूलो फलोगे।
भवसागर के भंवरों से छाती टकरा-टकराकर
तुम उन्हें चूमते हुए आगे बढ़ना।
राम का सा सेतु बाँध के
तुम सागर में पुल के स्तंभ निर्माण कर।
फिर नये पुल पर से तेरी रेल गाड़ी पार हो जायेगी।
फिर तेरे दोनों, इह लोक तथा परलोक सार्थिक होंगे
और तुम ध्येय तक पहुंच पाओगे।"

-2-

हे पथ प्रदर्शक ! आज कहाँ हो? आओ देखो।
मैंने कल शाम से ही 'कणवो'ट'[2] और रस्सी उठाकर
अपने प्राण दाव पर लगाए।
बोझ ढोते-ढोते मेरे कंधे घिसते गये।
पीठ पिसी गई।
भूख से मेरे होंट सूखते रहे।
परन्तु मैं यह रेल पटड़ी बिछाता गया।

---

1. नाव बंध, झील के चारों ओर पर्वतों की चोटियों के छिद्र वाले पत्थर। 2. कश्मीर में किसान या मज़दूर कंधे पर एक घास का बुना हुआ ज़ीन पीठ (कर्ण पट) और कंधों [illegible] रख कर 'य'ट' नामक टोकरी उठाकर बोझ ढोता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कनि फुटराव्यम
रतुॅ गंड अथुॅनुॅय, हठ फूसिम
बुमुॅ गुमवुॅय कुॅच़ नाऽविम वुठ
ब्रकुॅनाऽविथ नरि ज़ंगुॅ वथ वञ्हरुॅम
नवि कऽदलुॅ गुज़ाऽरुॅम रेल तु ताऽरुॅम गाऽड्य्
अख अख ड़बुॅ पूरुॅ जुतोवुह ड़बुॅ जूरिथ
शीरिथ प्रथ खानुॅ तुॅ पूॅरिथ तन
कमि ठकुॅ ठकुॅ कमि चिकुॅ चावुॅ
गऽयोव आगाज़ि सफर।
अथ शामुॅल्य् सफ्रस मंज़ ह्यनुॅ यिथ
जलदुॅय बास्योव
ज़न सुबहुॅय रोव
पो'त पञ्हरुॅचि गटि
सिरयय चव
गाशुॅय गव गाऽब
मऽज़िल मूद
तुॅ रोटुॅ सपुद परिलूकस मंज़

-3-

च्यलुॅ च्यल छे' मुसाफ़िर गाडि
तिमय यल ब्रख छि तिमय
अज़ति छे' खानस ख़ानस
पलवन अऽथुॅर पलान
गरुॅ की बसकीन मऽजदि मुसाफ़िर
दबदबि अंदर लबुॅ वालान

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पत्थर तोड़े,
रक्त फूटते हुए हाथों की मुट्ठियों से फुनसियाँ चढ़ीं और फूटीं।
भौवों से टपकने वाले पसीने ने होटों को तर[1] किया।
अपने होटों और पैरों को काट-काटकर
पथ का प्रसार किया और मार्ग बना लिया।
तत्पश्चात् नए पुल के ऊपर से रेल पटड़ी बिछा दी
तथा रेलगाड़ी पार कर ली।
इसका एक-एक डिब्बा जोड़-जोड़कर
पूरे बाईस[2] डिब्बों वाली रेलगाड़ी बनाई गई।
इनके प्रत्येक खाने को सजाया संवारा तथा इसका कलेवर आभूषित किया।
बड़े ही ठाठबाठ और चाव के साथ आरम्भ किया हुआ सफ़र क्या ख़ूब था।
परन्तु इस सायंकाल की श्यामल यात्रा में
फंसे हुए हम यात्रियों को शीघ्र ही ऐसा आभास हुआ
मानो कि प्रभातकाल ही खो गया हो।
जैसे रात्रि के पिछले पहर के घटाटोप अंधेरे ने
सूर्य ही निगल लिया हो
तथा प्रकाश ही गुम हुआ हो।
जैसे हमारा ध्येय[3] ही मर गया हो
तथा परलोक में जा अटका हो।

-3-

अब तो मुसाफ़िर-गाड़ी खचाखच भरी हुई
वही धक्के; वही धक्कमपेल, जो पहले हुआ करती थी।
आज भी प्रत्येक खाने में मानो वस्त्रों की तरह कीटाणु[4] पलते हैं।
घर के ही पारिवारी सदस्य् (बसकीन)
मानो अब मस्जिदों में रातें गुज़ारने वाले मुसाफ़िर बन गए हैं।
धींगामुश्ती तथा मल्लयुद्ध कर कर के यह लोग
अंदर की दीवारों को गिराने में लगे हुए हैं।

1. भिगोया, रस पहुंचाया। 2. प्रथमत: भारत की 22 रियास्तें थीं। 3. मन्ज़िल। 4. कश्मीरी में वस्त्रों को लगने वाले कीड़े को 'अ'थर' कहते हैं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

थ डबस छु अख अख कोन अलान
चि बरनि यलय
नुँ मुरव्यनहुंद्य् पाऽठ्य्
तेमित्य् पासुँक्य्दर
हज़न, रहबर !
असमानस चापान कागज़ क्ये'म्य्
रुँ गगर करान छि ज़मीन खऽव
व्खरावान च्ये'न्य्
प्राटान छिस पश
जिन ह्यव तुँ ड्यठायख याऽगी हिव्य्
व्वरुँ तलुँ सुँर सुँर
बुतराथ गछान ज़न खुँरि नीरिथ

-4-

अथ हगरस यिरुँ वुँन्य् नाव गऽमुँच़
भवसऽदरस मंज़
विजुँ वावस लऽजमुँच़ ग्रायि व्यवान
अऽस्य् अंदरुँ छि हमुँ तुल्य् त्राऽविथ–
छुरि ह्यथ अख अऽक्य् सुँय हो'ट व्वज़ लावान
रतुँ दाऽव्य् करान
दबुँ दबि मंज़ व्यसरावान थम
चुरमावान च़ो'क
कुनि शायि ति ह्ये'कि बुतराऽच़ खऽसिथ सऽहलाब
गछ़व गरकाब मगर
बुथि नावि नमस वुनि तार वज़ान
वुनि दौर चलान
वुनि विगनि बलस मंज़
चापुँर्य् कथुँ गऽर्य्
स्वरनयि वायान
गतकुँ नचान

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक डिब्बे की दीवारों की एक-एक फटी हिलती है।
इन फटियों की दीवारें तथा द्वार ढ़ीले पड़कर खुले पड़े हैं।
छछोंदरों की भांति असंख्य[1] भूत-प्रेत घूमते-फिरते हैं।
लुटेरे डाकू ही नेता बन बैठे हैं।

इस रेलगाड़ी के आकाशीय छत[2] को काग़ज़ के कीड़े चाट-चाटकर खाते है
घर के चूहे नीचे भूतल[3] में गड्डे खोदते हैं
और दीवारों के स्तंभ खोखले कर देते हैं
और छत उखाड़ते हैं।
दानव तथा पिशाच रूपी राक्षस अनयंत्रित[4] हो गये हैं।
पद तल से सर्....सर्र्... जैसा खिसकने वाला शब्द होता है
और जैसे कि पैरों तले की ज़मीन खिसकती चली जा रही हो।

-4-

यह रेलगाड़ी अब हथगाड़ी जैसी हो गई है
जोकि इस भवसागर में तैरती पथभ्रष्ट नाव की भांति
समुद्री तूफ़ान के झंझावात में फंसी हिंडोले की तरह घूम रही है।
हम अंदर से बादबान, चप्पू आदि छोड़कर
छुरियां लिये हुए एक दूसरे के गले काटकर लहूलहान कर देते हैं।
अकहाड़ा पहलवानी[5] में इसके स्तंभ ढीले कर देते हैं
तथा पेंदा चिकनाचूर किया जाता है।
किसी भी स्थान से इस भू-भाग पर भाड़ आ सकती है
तथा हम जलप्लाव में डूब जायेंगे।
परन्तु आगे नाव के मुख पर अभी भी संगीतमय तार बज रही है।
अभी भी पीने पिलाने के दौर चलते हैं।
अभी भी नर्तकियों के नृत्यशाला में
बातूनी तथा चापलूस लोग शहनाइयां बजाते हैं
और नर्तक नर्तकियां नाचती हैं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1. अनंत। 2. Ceiling. 3. फर्श, Floor। 4. वहशी, जंगली। 5. कुश्तीबाज़ी।

-5-

अज़ ति छि वुफनावान अऽस्य् कोतर जोरि नबस
अज़ ति छि रंगुॅ बुशतंगुॅ छुख्य् लाऽयिथ
वंज़लुॅ ववान आकाशस मंज़
े वतुॅ हावकुॅ !
येतुॅ दितुॅ दरशुन
े'यि कुनि क्वह किस
ावुॅ कनस कुन
व तुॅ यि यिरॅ वुॅन्य् नाव गऽंडिथ।

(5 सितम्बर, 1983)

काऽशुॅरि किताबुॅ नऽविस देवनागरी खतस मंज़ लेखन्युॅ या फिरन्युॅ छे' अज कलुॅच ज़बरदस्त ज़रूरत ताकि प्रथ क़ांह गाऽर काऽशुर सपदि सानि मीरासुॅ तुॅ ज़बाऽन्य् निशुॅ ज़ाऽन्य्याब। अमि बापथ छु नऽविस नसलस ब्रोंह पकुन।

-वीर

उर्दू खतस मंज़ छाप गाऽमचुॅ म्यान्युॅ बे'यि किताबुॅ :-

1. कलामि वीर (वचन बाऽथ)
2. मनुक मंगल (भजन बेतरि)
3. गुम हऽच़ बुमुॅ कमान (गज़लुॅ, नज़मुॅ, वचन बेतरि)
4. शबरंग (खाकुॅ Essays)
5. पोश अंबर (गज़लुॅ, वचन, नज़मुॅ बेतरि)
6. कुलयाति कृष्णुॅ जू राज़दान

-वीर

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-5-

आज भी हम कबूतरों के जोड़े आकाश में उड़ाते हैं।
आज भी हम पिचकारियों से रंग के फुहारे भर-भरकर फैंकते हैं
और आकाश में इन्द्रधनुष बोते हैं।
हे पथ प्रदर्शक!
आओ! दर्शन दे दो।
इस पथ भ्रष्ट तैरती नाव को फिर
और किसी पर्वत के 'नाव बंध'[1] पत्थरों के छिद्रों के साथ
बाँध कर रख दो।

(5 सितम्बर, 1983)

कश्मीरी पुस्तकें नई देवनागरी (हिंदी) लिपि में लिखना तथा अनूदित करना आजकल की अति आवश्यकता है ताकि कश्मीर से बाहर भी लोग हमारी संस्कृति तथा भाषा से अवगत हों। इस कार्य के लिए नई पीढ़ी को अग्रसर होना है।

-वीर

उर्दू खत में छपी हुई मेरी अन्य पुस्तकें :-

1. कलामि वीर (कविता संग्रह)
2. मनुक मंगल (भजन इत्यादि)
3. गुम हऽच़ बुम कमान (कविता संग्रह)
4. शबरंग (खाके Essays)
5. पोश अंबर (कविता संग्रह)
7. कुलयापि कृष्णुँ जू राज़दान

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-वीर

1. 'सती सर' के पर्वत श्रंगों की प्राचीन छिद्रों वाली शिलायें जिनके साथ नावें बांधी जाती थीं।

(9)
शहीद

-1-

लोलुॅ मऽच़ तारुॅच़ छे' तोलान ज़िंदगी
फांसि कूटे'न प्यठ छे' शोलान ज़िंदगी
ज़िंदगी गऽयि माऽज़ि माहरिनि हुंद्य् व्यदाख
राऽच़ पऽहरन ताम प्रारान वुन्य् नुॅ वुन्य् गाछि कुॅर बरस
वुन्य् नुॅ वुन्य् यियि माऽज़ि मो'त
त्रावि लवति ल्वति पूॅर्य् ज़न वुज़नावि ख़ाब
तस पता क्या बोलि पलवा
आसि खो'तमुत फांसि मा
अदुॅ छे' बोलान अदुॅ छे' शोलान ज़िंदगी
लोलुॅ मऽच़ तारुॅच़ छे' तोलान ज़िंदगी

-2-

आदुॅनय् ज़न आदमस ये'लि ज़ांह गरुरस टास आव
मोन तऽम्य् चो'न प्यालुॅ मोतुन सऽजदुॅ द्याऽव्वुॅन काऽयनात
छो़'ट ग्वलालव ख़ून, मालव संगरव व्वज़लोव पान
ज़ायि अब्दी वाऽस आदम ज़ाद अदुॅ तस नाव द्राव
आदुॅनय ज़न आदमस ये'लि ज़ांह गरुरस टास आव

-3-

बबरि लंजि हुॅंज़ क्वछ दपान कर ताम पे'यि खाऽली मत्यो
चाटुॅ हालुक शुर बबर बचुॅ याम खो'त काऽठिस क्वठ्यव

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(९)
शहीद

-1-

प्रेम की मतवाली तूलिका ही जीवन को तोल सकती है।
फांसी के खंबों पर ही ज़िंदगी चमक उठती है।
ज़िंदगी तो नई नवेली तथा मेहन्दी भरे पीले हाथों वाली
दुल्हन का विलापमयी जीवन है
जो रात गए तक प्रतीक्षा करती रहती है
कि अभी न अभी द्वार के खुलने की आवाज़ आएगी
तथा अभी न अभी मेहन्दी लगे।
पीले हाथों वाला वह नया नवेला दुल्हा आयेगा।
वह आते-आते धीरे हल्के-हल्के पांव से चलकर
मानो नये स्वप्न जगाएगा।
उस वीरांगना को क्या पता
कि उसका प्रियतम नीलामी हेतु लटकाये वस्त्र की भांति
कहीं फांसी पर चढ़ा हुआ तो नहीं है।
तभी तो जीवन बोलता है;
तभी जीवन चमक उठता है।

-2-

आदिकाल में ही जब 'आदम'[1] के अहंभाव (गर्व भावना) को चोट लगी
तो उसने विष का प्याला पीना मान लिया[2]
तथा सारे ब्रह्मांड को अपने सामने झुकाया।
'गुलि लाला' नामक लाल पुष्प ने रक्त बहाया
तथा पर्वत मालाओं और श्रृंगों ने स्वयं को रक्तरंजित करके लाल बनाया।
अनंतकाल का आयु जन्मा तथा तब उसे नाम पड़ा–मानव[3]।
आदिकाल में ही जब 'आदम' के 'गर्व' को चोट लगी।

-3-

कहा जाता है कि 'बबरी'[4] नामक सुगंधपूर्ण पौदे की टहनी जैसी
युवती की कोख काफी समय से रिक्त हुई है।
जब पाठशाला के शिशु, बबर शेर के बच्चे ने
फांसी के तख़ते पर क़दम रखा

---

1. मनु, हज़रत आदम। 2. स्वर्ग से बहिष्कृत किया गया। 3. मनुष्य, आदमी। 4. एक झाड़ी जैसा पौदा जो सुगन्ध फैलाता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ह्वंजि असवुँनि ज़िंदुँ दिल लो'ग करनि यथ कोमस सलाम
सानि शाहदऽच़ हुंद हसाऽ रऽछज़्यव मकाम
बस यऽह्य गऽयि शान शय आऽली मत्यो
बबरि लंजि हुँज़ क्वछ दपान् कर ताम पे'यि खाऽली मत्यो

-4-

खून छुनुँ अरज़ाँ नट्यव नार्यव चमव
खूनुँ बापथ खून हारान खूनुँ वाऽल्य्
यिथुँ बहारुक रंग लबान छुनुँ गुलिस्तान्
अथ छि आसान खूनुँ सगनाऽविथ चमन
अदुँ छि बुलबुल बोलि बोलान नव ब नव
खून छुनुँ अरज़ाँ नट्य नार्यव चमव

-5-

गाशुँ तारुख सुबुहपऽत्य् सखर्योव दप्योनवुँ आव गाश
यिथनुँ व्यऽखचारुक त्रि जुँरनाऽविव निशान
जुलमुँ जबरुँक्य् यिथनुँ खाऽरिव गर मकान
यिथनुँ लूटिथ कदरुँ चमकाऽविव दुकान
नंगुँ तुँ न्यथुँ तऽन्य् रोज़ि यिनुँ बुतराथ माऽज
म्याऽन्य् द्रुय छवुँ ये'म्य् जवाऽनी दावुँ लाऽज
यिथनुँ पाऽसुँकि इकतिदारुँकि हवसुँ कुँन्यूहून म्याऽन्य् लाश
गाशुँ तारुख सुबुह पऽत्य् सखर्योव दप्योनवुँ आव गाश

(25 दिसम्बर, 1981)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तो उस समय वह मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ,
प्रसन्नचित होकर अपने इस राष्ट्र से विदा लेके प्रणाम कह गया
तथा कहा–
हे लोगो! इस हमारे बलिदान के उच्चस्थान की रक्षा करना।
केवल इसी को 'शान' अर्थात् प्रतिभा कहते हैं।
तथा यही ऊंची पदवी होती है।
'बबरी'(2) नामक सुगंध बिखेरने वाले पौदे की टहनी जैसी युवती की कोख
कब से खाली पड़ी है।

-4-

लहू इतना सस्ता नहीं है
कि उसे मटके मटकियां भर भर कर पी लें।
लहू के लिये लहू रखने वाले लोग आँसुओं का लहू बहाते हैं।
यों ही गुलसितान अर्थात् फुलवाड़ी में रंग नहीं आता।
इसके लिए उसके चमन लहू से सींचे हुए होते हैं।
तभी तो 'बुलबुल' जैसे पक्षी नई-नई बोलियां गाती रहती हैं।
लहू इतना सस्ता नहीं
कि उसे मटके मटकियां भर-भर कर पी लें।

-5-

रोशनी लाने वाला प्रभातकालीन तारा
प्रातःकाल को अस्त होने की तैयारी करते-करते कह गया
कि अब प्रकाश हुआ है।
आप लोग जागकर किसी भी स्थान पर भयावह करतूत का
चिन्ह भी न रख छोड़ना
अत्याचार तथा दबाव द्वारा अपने घर तथा मकान न बनाना।
मूल्यों को 'लूट' में गंवाकर अपने दुकान न सजाना।
याद रखो यह धरती माता नंगी तथा वस्त्रहीन न रहे।
तुमको मेरी शपथ है, जिसने अपने यौवन को दाव पर लगा दिया।
पैसे तथा सत्ता के लोभ से मेरी इस लाश (शव) को बेचना नहीं।
रोशनी लाने वाला प्रभातकालीन तारा
प्रातःकाल को अस्त होने की तैयारी करते-करते कह गया
कि अब प्रकाश हुआ है।

(25 दिसम्बर, 1981)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(10)

गटुॅ किनुॅ गाश

रोतल डऽज शाहमथ हिश चक़ऽज
नो'व सुबुहदम ह्यू बे'यि व्वतलान आव
मो'मचन आशन व्यतुॅ गऽमचन नो'व जुव ज़्यतुॅ चाव
पूरिकि पासुॅ सासुॅ गाशा फो'ल
पो'त पऽहरुक हवा हवावा ड़ो'ल
ज़नतुॅ छु बासान गाशस ब्रोंठुॅय
न्यह गटुॅ सख कुॅटुॅ काल गनान
ज्ञानुॅ प्रकाशस ब्रोंठ पहन ज़न
चऽश्मन जून लगान
मऽशरावान ज़्वन
हवहुॅचि छ़टुॅ हिशुॅ पूर्य् कने यिथ
तूॅरावान तन
मुशकान हन हन
रुत साथ छु बुथि यिवुॅवुन वुनि क्यन
काँह यियि हे दियि हे व्वन्य् खे'न्य् आरामुॅच पिल
सुबहय पगहय न्यऽद्रा त्राऽविथ
तमहन हुंद्य् फुटजुॅ-पलव दिथ शाँद
रतुॅखलि सो'पनन जोलि बऽरिथ
शराऽब्य् शामुॅचि आऽही हुंद्य् पाऽठ्य्
क्वलि यिरुॅ व्यऽथि यिरुॅ त्रावव
होशिकि ये'मि दमुॅ
अख अऽक्य् सुॅय कुन आरामुॅचुॅ पिलुॅ पिलनावव
सुबहय पगहय खुलुॅ डुलुॅ न्यऽद्रा त्रावव
व्वन्य् लाचाऽरी मंज़
कालुॅचि ज़ेछि ग्वलाऽमी पतुॅ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(10)

तमस याकि प्रकाश

रात्रि ढलने लगी। ऐसा प्रतीत होता है कि बला टल गई।
नव प्रभात का सा उदय होने लगा।
शिथिल पड़ी हुई मृत आशाओं में नई प्राणशक्ति प्रवेश कर गई।
पूर्व दिशा से धुंधला प्रकाश सा फैल गया।
रात्रि के पिछले पहर की पुर्वाई हवा धीमे-धीमे बहने लगी।
ऐसा लगता है जैसे कि प्रकाश होने से पूर्व
उसी प्रकार घना अंधेरा फैला हो
जिस प्रकार कि ज्ञान के प्रकाश के उदय होने से पहले
योगियों के नेत्रों में घना अंधेरा सा छा जाता है।
और जो प्रकाश बर्हिमुखी चेतना समाप्त कर देता है(1)
पूर्व की ओर से मानो शीतल वायु के झोंके आकर
शरीर को ठंडा तथा प्रत्येक दिशा को सुगंधित करते हों।
अब तो आगे अच्छा मुहूर्त्त आने वाला है।
इस समय कोई आता तो हमें निद्रा लाने वाली पिल खाने को देता
ताकि हम प्रभात होते-होते निद्रा में पड़ जाते।
लालसाओं की पोटलियाँ तथा वस्त्र
सिरहानों के तौर पर अपने सिरों के नीचे रखते;
लहूलहान स्वप्नों को अपनी झोली में ठोंककर,
शराबी(2) सायंकाल के आशीर्वाद की भांति
वितस्ता(3) या किसी और नदी में बहा देते।
होश अर्थात् बेदारी के इस क्षण में
हम नींद लाने वाली यह गोलियाँ एक दूसरे की ओर बढ़ा देते
तथा सवेरा होते ही पाँव पसारकर सो जाते।
अब तो हमने लाचारी में
कल शाम की लंबी गुलामी के पश्चात्

---

1. लिपायमान रहने की भावना का अंत होता है। 2. मधुमय, मस्त। 3. कश्मीर की प्रसिद्ध नदी, जेहलम (वितस्ता)।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पो'त सादस कनि
बाऽगी याऽगी राथ गुज़ाऽर
बेदाऽरी हुँज़ बेज़ाऽरी हुँज़
द्वह दिथ कालुॅ दप्योव दिमव दम
तम दिथ दम खंड़ व्वश ह्यू त्राववं
सुबहय पगहय अऽस्य् थ्यकनाववं
गऽयि आज़ाद
कालुॅ प्यठय ज़न मगज़न मगज़न
इशारुॅ गव
गटुॅ पऽछ्य् राऽच़ वुदी थऽव्य साऽरी
सो'पनन जुव दिथ आज़ाऽदी रऽट
ग्ये'जि गंजि हवहस
मन गव यिरुॅ ह्यू ब्वदि गव नाश
गाशस गटुॅ वनि गटि वो'न गाश
कथि कथि अख अऽक्य् सुॅय ज़न खे'नि वऽथ्य्
हऽट्य् व्वज़लावुॅनि मारुॅनि वऽथ्य्
ज़न वनुॅ वऽछ़ वुछुॅ याऽगी ज़ाथ
हुति ज़न पानस यिति ज़न पानस
पानस सननुॅच म्वहलथ राऽव
कूस ज़ायि रे'वाजुॅ ड्यकस प्यठ
ग्वडुॅ मड़नोवुस दाजि सवाल
ब्राऽरा प्यायि तुॅ थे'क्य् थे'क्यं ख्यथ गऽयि गाऽरुॅय साल
मायि मऽछ़िजि कदरन हुँज़ि क्वछि मंज़
गो'बरन ज़िदुॅ हसदुॅकय् ओ'बरन वो'ल नाल
हुश मुश च़ो'र गव
ग्वरुॅ गऽछ्य् चहलव थापि नियुॅ ग्वर गऽयि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अंतिम स्वाद के तौर पर
विद्रोही और अनियंत्रित रात्रि व्यतीत कर दी।
वह जागरण तथा अनादर की रात्रि।
दिन निभाकर हमने सायंकाल को विश्राम लेने के लिए सोचा था
तथा सोचा था कि बैठकर पलभर के लिए आराम का सांस लें
और सवेरा होते ही घोषणा करते
कि अब हम स्वतंत्र हैं।
परन्तु कल शाम से ही मानो प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में
भूत-प्रेत प्रवेश कर गया।
कृष्ण पक्ष की रात्रि ने सबको जागरण में ही रखा।
स्वप्नों को मूर्तिमान करके तथा प्राणन्वित करके स्वतंत्रता पाई।
तत्पश्चात् हवा को गट्ठों(1) में बांधने का प्रयत्न करके झूठी आशाएँ रखी।
ऐसा लगा कि मन ही बह गया हो
तथा बुद्धि का भी सर्वथा नाश हो गया हो।
प्रकाश को अंधेरा तथा अंधेरे को प्रकाश कहा।
बात-बात पर हम एक दूसरे को मानो खाने दौड़ पड़े।
एक दूसरे को गला काटने तथा मारने लगे
मानो वन से कोई खूँखार(2) जाति उतर आई हो।
वह भी अपने आप में मस्त(3) हैं तथा यह भी।
अपने आप के बारे में सोचने का समय ही खो चुके।
पुत्री जन्मी तो रीति रिवाज़ के माथे पर
प्रथमतः उसे 'दहेज' का प्रश्नचिन्ह अंकित किया।
बिल्ली का प्रसव हुआ तो गर्व के साथ परायों ने
निमन्त्रण में बड़े भोज खाए और चल दिये।
प्रेम तथा स्नेह के मूल्यों की कोख में पुत्रों को
ईर्षा और वैर भाव के मेघों ने आच्छादित किया है।
धींगा मुश्ती आम हुई।
गुरु का आसन अर्थात् स्वमित्व शिष्यों ने छीनकर लिया
तथा स्वयं गुरु बन बैठे।

---

1 Bundles 2. भयानक, हिंसक। 3. निश्चिंत।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

खर गऽयि ख्यथ ज़न किताबुॅ बाऽर
यमुॅ केंकर ताम ग्वडुॅ फिरि. त्रहरान
मरान छि वुछ्य् वुछ्य् लाशन ढेर
कश्यप रे'शुन रुह पशतावान अज़
अज़लुॅ तपीश्वर आयोव क्याज़ि ग्वफव मंजुॅ नीरिथ
तपसी वनुॅ फीरिथ मंदुॅ छोवुन पान
बों'दकन रऽट तंदि कलमुॅच जाय
दरबि तुल्यव फुकरोवुक व्यह छऽकरोवुक नार
हलमस हलमस ओ'श पशप्यव
माहरिन्य् म्वंड गऽयि, शुर प्यव थनुॅ
गव माजि यतीम
पनन्यन पननी आयि गनीम
गरि नीरिथ सख वापस युन गव
युथुय मरुन तुॅ त्युथुय सख ज़्यो'न तुॅ ज़्वुन गव
दफ़्तर साऽनी
दफतऽर्य् साऽनी
सान्यय फाइलुॅ तुॅ साऽन्य् व्यदाख
कागज़ वरकन वरदन ग्वडुॅ सुव्य्
रछ़ खंड च़्यूह खंड अदुॅ पऽक्य् ब्रोंह
रावुर पननुय दाश नदाश
तोति छे' वीरॅन्य् सथ यि सुबुह ज़रूर यियि ह्यथ
बे'यि नो'व अऽछ गाश।

(17 जुलाई, 1988)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गधे भारी भरकम पुस्तकों के गठे खा गये।
यमदूत[1] प्रथम बार काँप रहे हैं
तथा इन शवों के ढेर देख-देखकर उनके प्राण निकलते हैं।
कश्यप ऋषि की आत्मा आज पश्चाताप कर रही है
तथा सोचती है
कि आदिकाल में तपीश्वर मानव क्यों गुफाओं से बाहर आया था
तथा उसने क्यों तपोवन को तिलांजलि देकर अपने आप को लज्जित किया।
बंदूक ने उसके कलम का स्थान लिया।
'दरब'[2] नामक घास के तिनकों ने
विष उगलकर चारों ओर फैलाया
तथा आग ही आग बिखेर दी।
प्रत्येक कोख से आज अश्रु बहते हैं।
दुल्हन विधवा हुई।
शिशु उत्पन्न होते ही माता से वंचित अनाथ हो गया।
अपनों को अपने ही शत्रु बनकर आक्रमण कर बैठे।
घर से बाहर निकलकर वापस लौटना बहुत ही कठिन हुआ।
जन्म पाना तथा फिर जीवित रहना मृत्यु सदृश्य कठिन कार्य हुआ।
दफ़तर हमारे तथा दफ़्तरों में कर्मचारी भी हमारे हैं।
हमारी ही फाइलें और हमारे ही विलाप।
परन्तु काग़ज़ के इन वरकों को पहले हमें विवाह-वस्त्र सीने पहनने पड़े
तब वे थोड़ा सा आगे बढ़े।
हमको अपना ही संचित धन तथा माल व्यर्थ में गंवाना पड़ा।
फिर भी 'वीर' की सी आशा है कि यह प्रभात अवश्य ही फिर
आँखों की नई रोशनी लेकर आयेगा।

(17 जुलाई, 1988)

---

1. यम किंकर। 2. एक पवित्र घास/कुशा।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(11)

ज्वय

यूता ज्वय वसि ह्यरॅ प्यठुॅ ब्वन कुन,
त्यूता लबि सय ज़्यादय ज़ोर।
यूता वथ कनि नाऽट्य् रटन तस,
त्यूता तुलि सय ज़्यादय शोर।।

हुथ पानस वो'थ शानन मुॅसला,
यथ पानस खो'त बंदन माज़।
हुतिनस कोठस ड़ख चो'ल नीरिथ,
ये'तिनस बालादरि खो'त पोर।।

अऽक्य् सुँज़ चाल कऽरॅन शुर्य् शुरिन्या,
बे'य अऽन्य् पुचरिथ डऽखरि तुॅ बाल।
ये'म्य् को'र हुकमा अऽम्य् न्यू ज़ीनिथ,
हो'म्य् चऽट्य् नम चम अऽम्य् जुव होर।।

साकी मे'य हे'छनोव बरुन ह्यू,
म्योनुव बानुॅ को'रुन रुसवा।
पो'ज़ गव म्ये'य को'र ग्वडुॅ अथ सऽजदा,
मे'य गऽयि पतुॅ कऽबिलस कुन खोर।।

अऽकय् सुँजुॅ वछुॅ अऽछ लजुॅमचुॅ तालव,
आऽखुॅर शाँदुॅक्य् आलव यिम।
हाय तमाह नाकाम मुरादन
हुंद तस वुनि छुनुॅ वो'थमुत बोर।।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(11)

झरना

1. झरना जों जों ऊपर से नीचे की ओर उतर आये त्यों-त्यों वह अति वेगवान होता है। पत्थर तथा कंकर जितना-जितना उसका मार्ग रोक लेंगे उतना ही वह कोलाहल मचायेगा।

2. उस एक शरीर से चमड़ी उठती रही, इस एक शरीर के अवयवों पर मांस मोटा होता गया। उस घर का स्तंभ खिसककर गिर गया, इधर बारादरी[1] के छत पर एक ओर छत डलता गया[2]।

3. एक व्यक्ति की यही चाल है कि उसने बच्चों की सी सीटी बजाई तो यह सुनकर दूसरे ने श्रृंग तथा पर्वत तोड़फोड़ कर उठा लाए। वह आज्ञा देके जीत गया तथा यह अपने नाखुन गलाकर, घिसाकर अर्थात् जान जोखम में डालकर भी हार गया।

4. साक़ी को मैंने ही समता भाव से प्यालियों में मदिरा भरना सिखाया था। फिर उसी ने मेरे बरतन अर्थात् प्याले को लज्जित[3] किया। सत्य यह है कि मैंने ही पहले उसके पाँव पर सिर रखकर नमन किया[4] फिर मुझे ही काबे (कबिला) की ओर पाँव हो गये[5] अर्थात् मुझे ही लाँछन लगाया गया।

5. मृत्यु शय्या पर एक व्यक्ति की खुली आँखें ऊपर छत (Ceiling) की ओर टिकी रहती हैं यह तो अंत समय में उसके मूक नाद[6] हैं। हाय! उसकी अपूर्ण तथा असफल आकाँक्षाओं का बोझा अभी भी उसके सिर से नहीं उतरा है।

---

1. भवन, महल। 2. मंज़िल पर मंज़िल (पुर) बनता गया। 3. रुसवा, शरमिंदा, मायूस। 4. सजदा। 5. पाप लग गया। 6. निराशा की अभिव्यक्ति।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ब्याखा ड्यकुँ बो'ड न्य'ऽंद्रि छु प्योमुत,
तस क्युत मोत यिथय शुर्य् खेल।
प्रथ काँह बोल बजा छुन ओ'नमुत,
वुछमुत प्रथ काँह स्वनहऽर्य् दोर।।

आदम ज़ाऽच़ हुँदिस मैदानस,
खो'त्य्, बऽठ्य्, ब्येरुँ तुँ द्रसुँ देवार।
द्रह दिशुँ छलुँ वछुँ म्याऽनिस पानस,
बिहय् बिहय् ब्ये'यि वो'थ ज़खमन क्रोर।।

अऽक्य् कऽर कथ तस ह्यरुँ वऽछ़ म्वहरा,
बे'य कऽर स्वय कथ तस खो'त राह।
त्रे'य वऽन्य् अपज़ुँय खारा शाबश,
बे'य वऽन्य् सय कथ ज़ोनुख चोर।।

अख छुनु हावन बे'यि छुनुँ चावन,
पुशुँ मे'य कडनुँच थावन राय।
कुँयि नार्यन छुस बऽर्य् बऽर्य् पानस,
म्यान्यन वार्यन प्यठ छुस टोर।।

पार्यन हुंद म्वहबत बदनाम छु,
महलन हुंद म्वहबत मशहूर।
अऽक्य् को'र म्वहबत सपद्यव रुसवा,
बे'य को'र म्वहबत सपद्यव प्योर।।

चंदन हुँज़ बंदुँगी छनुँ पोशन,
बंदन मंज़ गछ़ि आसुन जोश।
यिम अंद वातनुँ ब्रोंठुँय सोरन,
'वीर' तिमन ज़ोरन छुनुँ लोर।।

(24 अगस्त, 1969)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6. मृत्यु शय्या पर दूसरा व्यक्ति कितना भाग्यशाली है कि मानो निद्रा में हो। उसके लिए तो मृत्यु बाल-क्रीड़ा है। उसकी प्रत्येक कामना पूरी हुई है तथा उसके लिए प्रत्येक समय स्वर्णकाल है।

7. मनुष्य जाति के इस विस्तृत मैदान में तमस भरे कोने हैं। ऊबड़-खाबड़ भूमि परतें तथा दीवारें उभर आई हैं। मेरी इस पृथ्वी की छाती से दिन प्रतिदिन टुकड़े अलग होते गए। तथा घावों के मुख बंद हो-होकर खुलते रहे।

8. एक व्यक्ति ने केवल बात की तो उसके लिए ऊपर से धन आ टपका। दूसरे ने वही बात की उसके लिये वह बात अपराध बन गई। तीसरे किसी ने झूठमूठ बातें बना लीं तो उसे शाबाशी मिली तथा एक ओर ने वही बात की तो उसे मूर्ख माना जाने लगा।

9. एक तो वह मुझे शराब दिखाता नहीं उस पर फिर मिलता भी नहीं। अपितु वह मुझे मधुशाला[1] से ही निकालना चाहता है। उसके लिए तो मटके मटकियां भरी पड़ी हैं। फिर भी मेरी छोटी सी प्याली पर दृष्टि टिकाये हुए है।

10. कुटियाओं का प्रेम बदनाम तथा महलों का प्रेम प्रसिद्ध होता है। एक ने प्रेम किया तो समाज में धुतकारा जाकर लज्जित[2] हुआ परन्तु दूसरे ने वही प्रेम किया तो आंखों का तारा बन गया।

11. जेबों की उपासना चिरकाल तक काम नहीं आती है। शरीर के अवयवों में उत्साह होना चाहिये। 'वीर' उन शक्तियों को अपनाता नहीं जो बीच में ही टूट कर अंत तक साथ नहीं देती हैं।

(24 अगस्त, 1969)

---

1. शराबखाना। 2. रुसवा।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(12)

वतनुक नकशुॅ

रुॅख, रुॅख, रुॅख दिच़
अंदुॅ, अंदुॅ, अंद वऽट्य्
पदि, पदि, पद पऽच
नकशुॅ बनोव
अऽदरे'व, अऽदरे'व, सऽदरुॅ ख्वरव प्यठुॅ
म्वहलक, म्वहलक परबतुॅ शेरस तामथ
ड्यकुॅ बऽड कनि मूरत
दीवी सूरत हिश
गऽर च़ऽर दिलबऽर
वेलुॅ वुछित रुत
पूज़ा अथ कऽर, परन पे'यस
पतुॅ बाव बो'रुस तय नाव को'रुस
हजुॅ हावसुॅ
साऽनी माऽज ज़मीन
पतुॅ गव क्याहताम
वेलुॅ बदल गव
बेजुव लीलायव गंटायव
कन पो'पराऽव्य्
बेस्वर शंखन वाऽयिथ
गऽल्य् खऽत्य्
तव पतुॅ
आऽही मऽंग्य् मऽंग्य् दिल तय दऽल्य् द्वदर्याय
प्रारान प्रारान थऽक्य् न्यऽशबो'द्य् शुर्य्
सऽच़ कऽर्य् कऽर्य् ये'लि प्रऽच़ पे'यि
प्रकच़न कुसताम जिन ब्राद्योव

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(12)

देश का मानचित्र

रेखा,[1] रेखा, रेखा खींची
सीमाओं के छोर समेटे
पग, पग, पग पद-पंक्ति[2] चलती गई
तथा मानचित्र बनाया।
आर्द्र, आर्द्र समुद्र चरणों से लेकर
उनुंग, उनुंग पर्वत शिखरों के माथे सिर तक
भाग्यशाली पत्थर की मूर्ति देवी की प्रतिमा सी रूप वाली
गढ़ी रची तथा मनमोहक प्रियतमा बना डाली।
अच्छा मुहूर्त देखकर इसकी पूजा अर्चना की।
इसके चरणों पर नमन किया
और फिर भावना तथा श्रद्धा के साथ इसकी भक्ति की।
तथा नाम इसका बड़े प्रेम तथा चाव के साथ रखा–
अपनी मातृ-भूमि!
तत्पश्चात् ऐसा कुछ हुआ।
समय बदल गया।
निर्जीव अर्थात् निरर्थक 'लीला'[3] भजनों तथा घंटाओं के स्वरों से
हमारे कान पक गये।
बेस्वर अर्थात् स्वादहीन शंख बजा बजाके हमारे गाल फूल गये।
तत्पश्चात्, आशीर्वाद मांग-मांग कर अर्थात् याचनायें कर कर के
दिल और दामन[4] दोनों तार-तार हुए।
प्रतीक्षा करते-करते अबोध बालक बालिकाएं थककर हारे।
आशावान होकर स्वप्न देखते-देखते जब वे होश में आ गए
तो उनकी प्रकृति अर्थात् शरीरों में कोई जिन याने भूत
डाका डाल कर प्रविष्ट हुआ।

---

1. सीमा। 2. पद-चिन्ह। 3. 'लीला' कश्मीर में भजन कविता का एक स्टाईल। 4. कश्मीरी चोगे 'फ्यरन' का सामने वाला निचला भाग। दामन फैलाना = भीख मांगना।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कतनी माऽज तुँ वतनुँच सूरत
बासुँनि लऽज वनची रुँय रांटस
नकशस ज़ऽद्य् गऽयि
प्राटान प्राटान
अंदुँ वंदुँ तुँर पचि रंदुँ गऽयि जोरान
जोरान वाटान
रग रग चुँश चुँश काऽन्य् गऽयस छड़ऽर्‍य्
स्वनुँ सुंद स्वंदर वछ ख्वखर्‍योस
गरि गरि हरि हरि कऽर बुतरात
स्व कति स्व यछ़ पछ़
स्व कति स्व पूज़ा
सु कति सु भाव तुँ कति लछ नाव
तोति छे' माऽजी जान
वुनि ति व्यंदान संतान
आमुत गोमुत मऽशरिथ
कमि ताम आशि वंदान कलुँ पान
क्वकोर नकशुँ तुँ व्यकाऽर सूरत
वुनि ति छे' कथ ताम रुँचि़ गरि प्रारान
अदुँ अऽस्य् नकशुँ गरन हुँद्य् शुर्‍य्
चऱि बचुँ छि खसान नब खे'नि
ज़न पाँचाऽल्य् काव
कुलिनुँय तल सीतायि करान ल्यलुँ
ती वुछ्य् वुछ्य् रावुन मंदछान
अऽस्य् गऽयि अऽस्य्
वुनि वुठ्वुँय सूँतिन बाऽथ ग्यवान
यि छु सोन वतन, नुंदुँबोन वतन

(8 सितम्बर, 1987)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विश्वसनीय माता तथा देश रूप माता (जन्मभूमि)
वन की कोई डाईन या पिशाचनी भासित हुई।
मानचित्र को खोद-खोद कर छिद्रित किया।
आदि से अंत तक इसके चीथड़े निकल आये
तथा हम इन कटे-फटे टुकड़ों को सीते गये, जोड़ते गये।
जोड़ते तथा फिर तोड़कर चिपकाते गये।
इसकी नस नस को चूसते गये
तथा इसकी छाती की अस्थियां मांसरहित पिंजड़ा रह गई।
स्वर्ण सदृश सुन्दर इसकी छाती खोखली हुई।
प्रत्येक घड़ी में इस धरती माता की हड्डी हड्डी अलग कर दी।
अब कहां वह इच्छा और श्रद्धा?
वह पूजा कहां?
वह भक्ति तथा लाख नाम जपना कहां?
फिर भी माता, अच्छी माता ही है।
अभी भी वह अपने बच्चों को चाहती है।
गई गुज़री पिछली बातें -आया गया' समझकर भूल गई है
तथा किसी आशा को लेकर वह हम पर
अपना शरीर और प्राण न्योछावर करती जाती है।
कुकर्मों से पूर्ण यह मानचित्र
तथा विकारों से बिगड़ी हुई इसकी रूपरेखा
अभी भी किसी अच्छे समय के आने की प्रतीक्षा में है।
इधर से नक्शे के रचयिता नेताओं के बच्चे
हम चिड़ियों के बच्चों सदृश्य
'पांचाली'[1] कव्वे आकाश को खाने दौड़ते हैं।
वृक्षों के नीचे सीतायें विलाप करती हैं।
यह देखकर रावण भी शर्माता है।
हम तो हम ही हैं
जो अभी भी केवल होंटों से गाना गाते हैं–
"यह हमारा वतन, सुन्दर और प्यारा वतन।" (8 सितम्बर, 1987)

---

1. कश्मीर की एक पर्वतमाला– पांचाल पर्वत।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(13)

करामात

वुन्य् रऽच़य् खऽड्य् बदलन हालात।
वुन्य् दिन थुर गो'न खुर्य् लद सात।।

गटुँ च़टि गाशुर वुन्य् छ़टि ताफ।
तुलुँ कतरिस पे'यि वऽस्य् प्वरशात।।

फालव लगि द्रालुँज वानस।
वऽस्य् प्ये'यि वुन्य् वुन्य् ख'र्य् शे'र्यकात।

से'किलिस ख्वखलिथ वुन्य् यिन खाऽल्य्।
बादुँम्य् थऽर फ्वलि आदुँम्य् ज़ात।।

सऽन्य् बाऽगरुँनि छा हातुँम्य् तय।
व्वन्य् छनुँ खऽन्य् निन्युँ अनि(1) खैरात।।

स्वछ गव केंच़न लछ बदनाम।
अलतश करनस लुकुँ अरसात।।

सरपन नय फुटि ज़हरुक दंद।
ने'नि म्वंडजन छा बचनुँच बात।।

व्वन्य् छनुँ हुँकुँ निन्य् छ़ावुँल्य छाल।
व्वन्य् गलि थपलन जुर्य् जुरय्यात।।

तीरा त्रोवुथ क्या गुदर्योय।
'वीरा' व्वलुँ हालातन वात।।

(27 दिसम्बर, 1970)

1. अनि = अगि।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(13)

करामात[1]

1. अभी पल भर में हालात बदल जायेंगे। अभी उलझे हुए क्षण करवट लेंगे।

2. सूर्य अभी अंधेरे को चीर कर धूप बिखेर देगा। जमी हुई यख़ की परतों का पुरुषार्थ जाता रहेगा।

3. दलाली की दुकानों के दरवाज़े बंद होंगे। अभी कुटिल व्यवसाय कर्मियों का सहयोग टूट जायेगा।

4. अभी मरुस्थल में बीजों के अंकुर फूटेंगे। बादाम के पेड़ की भांति मानव जाति प्रफुल्लित हो उठेगी।

5. डाका डालकर धन संपत्ति बांटना कौन सा 'हातमताई' अर्थात् कमाल है। अब तो दान के नाम पर अंधाधुंद कोष लुटाना नहीं चलेगा।

6. कुछेक को प्रत्येक वस्तु बहतात में उपलब्ध हैं। परन्तु ज़्यादा संख्या के लोग प्यासे तड़पते हैं।

7. यदि साँपों के विषैले दाँत नहीं टूटेंगे तो फिर मैंड़कों के बचने की बात ही कहां।

8. अब उतावला बनकर एक दम बकरे की भाँति छलाँगे मारने का ज़माना नहीं। अब तो लुटेरों की सारी पीड़ियां तथा जातें नष्ट होंगी।

9. हे वीर ! तुझे क्या हुआ कि ऐसा वाण मारा। आओ अब इन हालात का सामना करो।

(27 दिसम्बर, 1970)

---

1. चमत्कार, यह कविता 'सादिक' सरकार के आरम्भ होने पर कही गई थी।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(14)

गांधी जियस नज़रानॅु

सासन बलायन सीनॅु ध्युन,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।
शेरस शिकारा आऽसॅु न्युन,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

लवि अरबॅु बो'द प्रथ चाऽन्य् कथ,
स्व छे' साऽन्य् सथ नुदुॅबाऽन्य् वथ।
पेमुॅत्य् तुलुॅन्य् थावुॅन्य् ह्यमथ,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

हऽथ्य्यारुॅ रो'स, सामानॅु, रो'स,
बम, गोलुॅ, तीरकमानॅु रो'स।
प्राऽवुॅथ फ़ताह न्वकसानॅु रो'स,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

ज़ातुक हवस छ़ोरुथ न ज़ाँह,
अथुॅ काऽसि निश दोरुथ नुॅ ज़ाँह।
ज़्यूनुथ द्रहय होरुथ न ज़ाँह,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

असि रहबरी चाऽन्य् रहमथा,
लोलुॅच हुबुॅच पज़रुॅच वथा।
रुॅच़ स्वहबथा पो'ज़ म्वहबथा,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(14)
गांधी जी को श्रद्धाँजलि

1. सहस्त्रों विपत्तियों को सीने से लगाना आपका ही दिल व जिगर है।[1] सिंह के मुँह से शिकार छीन लेना आपका ही दिल है तथा आपका ही जिगर है।

2. आपकी प्रत्येक बात अरबों रुपये से भी ज्यादा मूल्यवान है। वह हमारी आशा है तथा वही हमारा सुंदर पथ। गिरे हुए व्यक्तियों को उठाना तथा उनका साहस रखना तो आपका ही दिल है और आपका ही जिगर।

3. आपने बिना किसी अस्त्र-शस्त्र[2], बम, गोले, तथा तीर आदि हथियार के किसी हानि के बिना विजय पाई। यह आपका ही दिल व जिगर है।

4. आपने कभी भी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये किसी प्रकार की लालसा न की। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये। परंतु आपने सदा ही जीत पाई तथा कभी नहीं हारा। यह तो आपका ही दिल व जिगर है।

5. हमारे लिए आपका नेत्रत्व तो सौभाग्य है। वह तो प्रेम तथा सच्चाई का पथ है। सुंदर संगति तथा सत्य पर आधारित प्रेम है। यह तो आपका ही दिल है और जिगर है।

---

1. साहस, दिलेरी। 2. अहिंसा धर्म पालकर।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जेलन अंदर चाऽलिथ सितम,
जिगरस अंदर पाऽलिथ सदम।
थाऽविथ पज़िक्य् नक़शे क़दम,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

मोनुथ नुॅ ज़ाँह चे'य छूत छात,
रंग तय नसल या ज़ात पात।
बूज़िथ चे' सार्यन हाऽर्य् सात,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

त्रोवुथ नफ़ुॅच़ तुॅ फकीर द्राव,
सूफ़ी संत तुॅ पीर द्राव।
छे'पि जुव दितुथ बो'ड़ 'वीर' द्राव,
चोनुय छु दिल चोनुय जिगर।।

(29 नवम्बर 1968)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6. कारावासों में आपने कष्ट झेले। हृदय में आपने यातनायें सहीं। परन्तु आपने अपने पीछे सच्चाई के पदचिन्ह रख छोड़े। यह आपका ही दिल तथा जिगर है।

7. आपने कभी भी छुआछूत नहीं माना। न आपने रंग, नसल या ज़ात-पात स्वीकार किया। आपने सबों के दु:ख-दर्द सुन लिये। यह आपका ही दिल व जिगर है।

8. आपने खानपान की लालसा छोड़कर अपने इंद्रियों को नियंत्रित रखा। अत: आप फ़कीर, सूफ़ी, संत और पीर सिद्ध हुए। अंत पर आपने प्राणों का बलिदान किया और बड़े 'वीर' निकले। यह तो आपका ही दिल है। आपका ही जिगर है।

(29 नवम्बर, 1968)

काऽशुर परॅनुॅच कुंज़

काऽशिर वरॅनुॅमाला :

(क) **स्वर :**

अ, आ', आ अऽ, आऽ इ, ई उ, ऊ, उॅ, ऊॅ — 19
ए', ए ओ', ओ -य, -व -य् अं

(ख) **व्यंजन :**

क ख ग च छ ज च़ छ़ ज़ ट ठ ड — 12
त थ द न प फ ब म य र ल व — 12
श स ह — 3

(ग) अलावुॅ (हिन्दी संस्कृतुॅक्य्) स्वर, व्यंजन
(नावन मंज़ इस्तिमाल करनुॅ बापथ)
(i) स्वर : ऐ, औ, ऋ — 3
(ii) व्यंजन : घ, झ, ढ, ध, भ ङ, ञ, ण ष, क्ष, ज्ञ — 11

कुल = 60

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(15)

अहरॅबल

चिर्य् ग्युश
हय हय चिर्य् ग्युश कोताह
वन चरिनॅ्य हुंद
रासॅ् मंड़ोला
नतॅ् रे'ब्य् आरन तुलमुत शोरा
कनि नाट्यन हुंद
व्वटॅ् वाट्यव प्ये'ठ्य् तुजमॅ्च दोरा
चिर्य् ग्युश चिर्य् ग्युश छिवॅ् साऽ बोज़ान
पूत्यन हुंद ज़न
लूत्यन पूत्यन
गाऽटन हुंज़ छग लऽजमॅ्च छख मा
किनॅ् हरदॅ्च दछॅ् पोंपर बूल्या
किनॅ् पाऽरन माऽनु[1] ड़लॅ्च डूल्या
वनॅ्वन हुर्य् छावन पो'त जूना
वलु बोज़ वनय राज़ दिलुक
चिर्य्ग्युश छु नसाऽ
छु यि साज़ दिलुक
यऽद्राजॅ् ग्यवान छु यि
अऽहरॅ बलुक !

(8 अगस्त, 1970)

1. माऽन = (ने'नि स्वंडॅज) मैंडक।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(15)

अहराबल[1]

देखो देखो शोर कितना है!
ओहो! देखो शोर कितना है!
जंगल की चिड़ियों का जैसा रास मंडल।
या तो 'रे'ब्यूआर'[2] नदी ने कोलाहल मचाए है।
ऐसा होता है आभास कि पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों से
जल के टकराने का है यह शोर।
मानो जल ने नदी पार करने के लिए
बीच के पत्थरों के ऊपर से दौड़ लगाई है।
क्या आप सुनते हैं यह शोर, यह कोलाहल?
चूज़ों की सी बोली है।
मानो उनको चील के उठा ले जाने के भय से भगदड़ मच गई हो।
नहीं, नहीं!
कहीं तो यह फ़सल कटाई के ऋतु में
'दछि पोंपर'[3] नामक पखेरू गाया तो नहीं करते?
याकि 'डल झील' में मैंडक डोली सजाए हुए गाना गा रहे हैं?
वे रात के पिछले पहर की चाँदनी से आनंदित होकर
शादी विवाह के गीत गा रहे हैं।
आओ सुनो।
मैं तुमको दिल का रहस्य बताऊँगा।
यह कोई शोर नहीं है
अपितु हृदय में उत्पन्न हुआ।
मन का वाद्य संगीत है।
यह तो 'अहराबल' का राजा इन्द्र गाता है।

(8 अगस्त, 1970)

---

1. कश्मीर का एक प्रसिद्ध जलप्रपात, आबशार। 2. कश्मीर की एक प्रसिद्ध नदी। 3. एक पखेरू जिसका मधुर स्वर खेतों में गूंज पैदा करता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

"PUSHP AMBAR"

Translation of "Posh Ambar" (Kashmiri Poems)

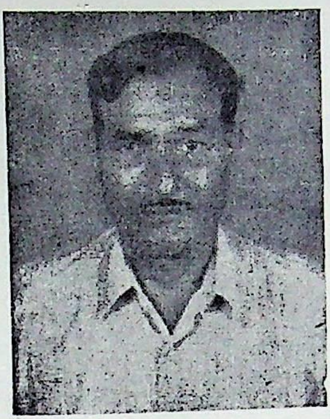

About Author :

Name	:	S.N. BHAT "VEER KASHMIRI"
Birth	:	Loke Bhawan, Anantnag Kashmir 27-8-1940, Krishan Janam Ashtami 5016 (S. Reshi), 1997 B.
Perentage	:	Pt. Sarwanand Bhat (Father). Smt. Raj Rani (Mother).
Qualification	:	(i) Kalami Veer (Poems—1972) (ii) Manuk Mangal (Leela—1972) (iii) Shab Rang (Pen Sketch Essays—1977) (iv) Guma Hach Buma Kaman (Poems—1979) (v) Loke Bhawan Ki Kahani (Urdu Booklet—1971) (vi) Kulyati Krishna Joo Razdan, Published by J&K Cultural Academy (Complete Biography and works of the Saint Poet—1988) (vii) Loke Bhawan (Hindi—Edited 1982) (viii) Kaushur Vanvun (1997) (ix) Vanvas Cessete (1993)
Other Activities	:	(I) Kashmiri Prose, Poetry, Essays, Script Writing, Biographies. (ii) T.V., Radio Performances, Script Writing and News Caster. (iii) Devotional Feelings for Music and Fine Art. (iv) Efforts for eradication of Social evils and Spreading Secular, Progressive, Optimistic, Spiritual and Humanistic values.
Award	:	Tashkent Radio Award (1978).

VEER PUBLICATIONS

94-Teerth Nagar 'B' Talab Tillo, Jammu-180002

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri